ईरान-अंक

Bhugol—May, June, July, 1931 [Regd. No A. 1333

वर्ष ८] मई, जून, जुलाई १९३१ [संख्या १, २, ३

भूगोलविषयक हिन्दी का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र



भूगोल अनुभव हेतु यह "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भूगोल है॥

सम्पादक—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ३) इस प्रति का १)

ईविंग क्रिश्चियन कालेज प्रयाग से संरक्षित।

Yearly Subscriptions :
Indian Rs. 3
Foreign Rs. 5

[*Re. 1 per copy.*

"भूगोल" का स्थायी साहित्य

१—**भारतवर्ष का भूगोल**—यह पुस्तक सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका की यात्रा के बाद लिखी गई है। इसमें सन् १९२१ की मनुष्य-गणना के अंक दिये गये हैं। पुस्तक में २ तिरंगे, ४ चित्रमय नक़शे और १०० से ऊपर एक रंगे नक़शे और चित्र हैं। अब तक भारतवर्ष का कोई भूगोल ऐसी विस्तृत यात्रा के आधार पर नहीं लिखा गया। न कोई भूगोल इतने मौलिक नक़शों और चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य केवल २) रु० डाक व्यय ।=)

२—**भारतीय भाषाएँ**—मूल्य ।), इसमें भारतवर्ष की सभी भाषाओं का विशद वर्णन है।

३—**संसार-शासन**—मूल्य ।), इसमें संसार के प्रमुख देशों की शासन-पद्धति का विवरण है।

४—**अफ़ग़ानिस्तान**—मूल्य १), इस अंक को पढ़ने से अफ़ग़ानिस्तान का एक संक्षिप्त चित्र आँखों के सामने खिँच जाता है—प्रताप, कानपुर

५—**टर्की**—मूल्य १), इस अंक में टर्की की प्रायः सभी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थितियों का बड़ा सुन्दर और रोचक संकलन है।

६—**ईरान**—इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी, इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फारस देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

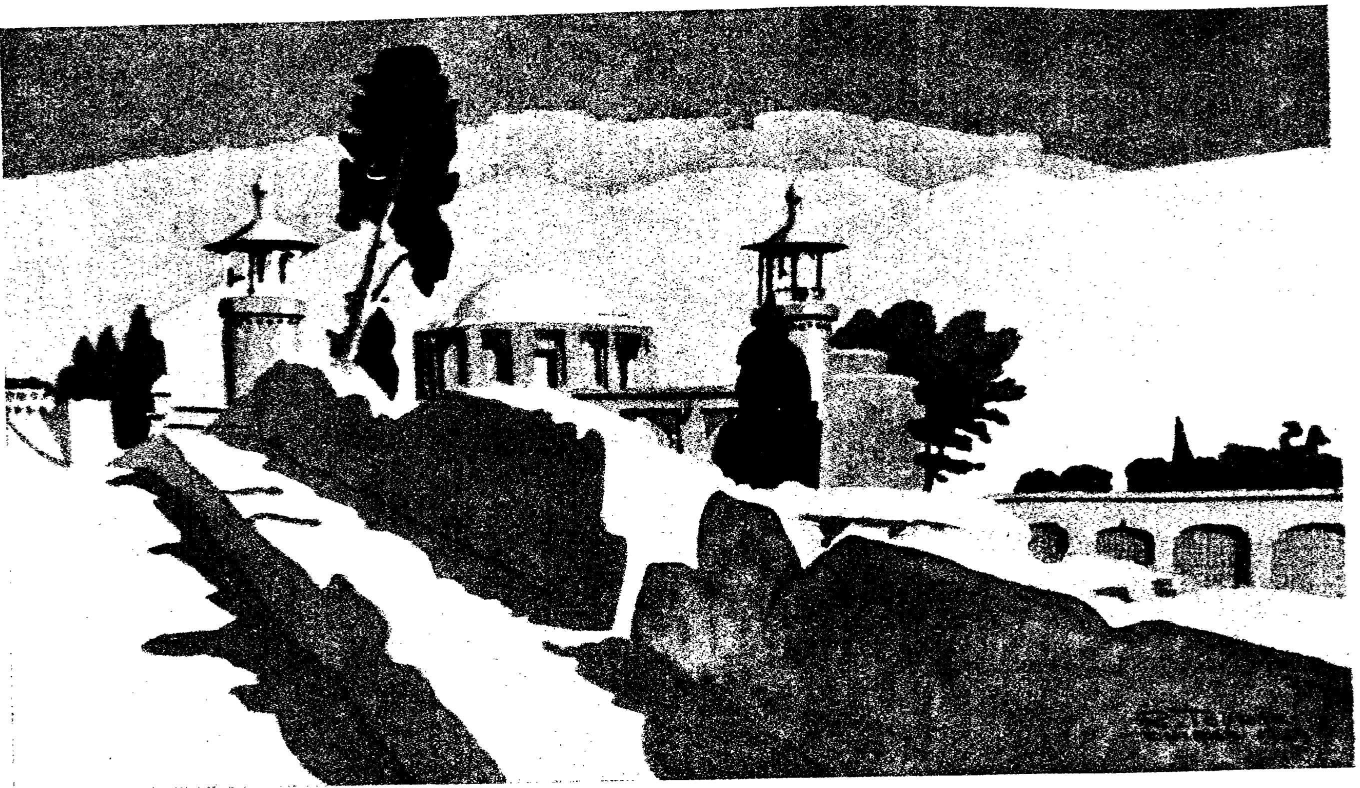
७—Geographical Questions (For High School Examination)—मूल्य –)॥, इसमें १० वर्षों के हाई स्कूल के प्रश्न-पत्र छपे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाद्वीप, भारतवर्ष और प्राकृतिक भूगोल पर प्रसिद्ध भूगोल, विशारदों के चुने हुए प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रति का डाक-व्यय आध आना अलग है।

८—**वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्न पत्र और उनके आदर्श उत्तर**—मूल्य ॥), इसमें १९२० से १९२१ ई० तक के प्रश्न-पत्र और आदर्श उत्तर दिये गये हैं। परीक्षार्थियों के सुभीते के लिए हर सन् का पूरा पत्र आरम्भ में छापा गया है। इसके बाद प्रश्नों का उत्तर उसी ढंग से दिया गया है जो परीक्षकों को पसन्द है। इस पुस्तक को पढ़कर विद्यार्थी लोग उत्तम श्रेणी के नम्बर सहज ही में प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजर "भूगोल"

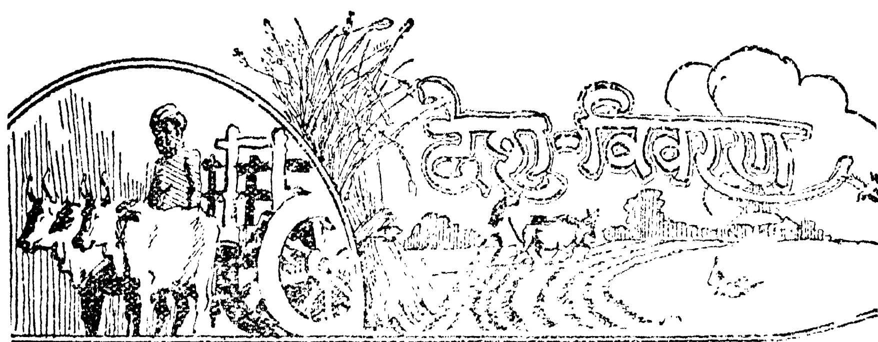
इलाहाबाद





शीराज

["विशाल-भारत" से "मनोज"]



विस्तार और स्थिति

फारस की स्थिति:--पूर्व में सिन्धु और पश्चिम में दजला नदियों की घाटियों के बीच में ईरान का पठार फैला हुआ है। इस पठार के पश्चिमी भाग में फ़ारस और पूर्वी भाग में अफ़गानिस्तान और बिलोचिस्तान स्थित हैं। यह देश चारों ओर विशाल पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है जो उत्तर और पश्चिम में अधिकाधिक ऊँची हैं। अधिक भीतरी भाग दो मुख्य बेसिनों में बँटा है। पश्चिमी बेसिन, जिसमें फ़ारस का ३/४ भाग सम्मिलित है, और जो अन्य अनेक छोटे छोटे बेसिनों में विभाजित है, पूर्वी बेसिन से (जिसको सीस्तान का बेसिन कहते हैं) सीस्तान प्रान्त के पास ही मिल जाता है पूर्वी बेसिन की मुख्य नदी हलमन्द है। इस हिस्से में और भी छोटी छोटी नदियां हैं जिनमें से अधिकांश सीस्तान की झील में गिरती हैं।

जहाँ तक उचाई का सम्बन्ध है करमान के पास पठार की उचाई ५००० फुट से ज़्यादा है। शीराज़ में यह उंचाई ४००० फुट, तेहरान और मशद में ३००० फुट और तबरेज़ में जो धुर उत्तर में स्थित है ४००० फुट से भी ज्यादा है। मध्यवर्ती प्रदेश के नगरों में इस्फ़हान की ऊंचाई ५००० फुट से और यज़्द की ४००० फुट से भी अधिक है।

पठार के इन स्थानों को छोड़कर रेगिस्तान की भी ऊंचाई कहीं भी २००० फुट से कम नहीं है।

सीमायें और सूबेः— खुरासान का पूर्वी सूबा उत्तर की ओर उन श्रेणियों से घिरा है जो तुर्किस्तान के स्टेपीज़ तक फैली हुई हैं। कलात-नादिरी नामी पर्वत पर चढ़कर उत्तर की ओर देखने से एक बड़ा विस्तृत पीला मैदान दीख पड़ता है जो टुन्ड्रा और उत्तरी ध्रुव तक फैला हुआ है। यह श्रेणी सब स्थान पर फारस की सीमा नहीं बनाती है लेकिन कोपट दाग़ और लघु बाल्कान का नाम धारण कर उत्तर-पश्चिम की दिशा में कास्पियन सागर को चली जाती है। थोड़ी दूर और पश्चिम में ईरान की सीमा के भीतर ही अत्रक और गुरगन नदियों की घाटिया हैं। अत्रक नदी का निचला भाग रूस और फ़ारस की सीमा बनाता है।

कुचन नामी जिला जो अत्रक नदी के दोनों किनारे पर बसा हुआ है इस सूबे का सबसे अधिक समृद्ध प्रदेश है। यहाँ के निवासी खुर्द हैं जिनको शाह अब्बास मिरज़ा ने यहाँ बसाया था। गुरगन की घाटी भी उपजाऊ है—भूमि उपजाऊ है और पानी पर्याप्त मात्रा में गिरता है। लेकिन इस समय तुर्कमान नामी खाना बदोशों के कुछ हज़ार कुटुम्ब ही यहाँ के विशेष निवासी हैं। गुरगन का जिला ही प्राचीन 'हीरकैनिया और अत्रस्ता का वहरकैनो है। स्ट्रेबो ने इसके विषय में लिखा है "यह कहा जाता है हीरकैनिया के प्रत्येक अङ्गूर की बेल से सात गैलन शराब और प्रत्येक अजीर के वृक्ष से ६० बुशल फल निकलते हैं। वृक्षों में मधु मक्खियों का छाता है और मधु यहाँ के पेड़ों की पत्तियों से गिरता रहता है।"

उत्तरी सरहद के केन्द्रीय भाग में मज़न्दरान और जिलान के धनी सूबे अलबुर्ज़ पर्वत और कास्पियन सागर के बीच में स्थित हैं। जलवायु के मोतदिल और बारिश की ज्यादती होने के कारण ये सूबे फारस के अन्य सूबों से बिल्कुल भिन्न हैं—जिलान के पश्चिम में फ़ारस फिर रूस के साथ साथ चलता है—तुर्की मनचई की सन्धि के अनुसार, इनकी सीमा अस्तारा से लेकर सीधी उत्तर आरास नदी तक खिची हुई है। उत्तर-पश्चिम के कोने में अरारात पर्वत स्थित है जहाँ रूस टर्की और फारस के साम्राज्य मिलते हैं।

फ़ारस का उत्तरी-पश्चिमी सूबा अज़रबैजान है—इसकी राजधानी तबरेज़ है जो फ़ारस का सबसे बड़ा नगर है और जहाँ वासफ़ोरस और त्रविज़न्द से आने वाली प्रसिद्ध सड़कें काकेशश और दजला नदी की घाटी से आने वाली सड़को से मिलती हैं। फ़ारस और मध्य एशिया को जाने वाली ग्रेट ट्रंक रोड भी यहाँ से होकर जाती है।

पूर्व की ओर स्थित प्रदेशों से यहाँ पानी भी अधिक बरसता है और सूबा बहुत उपजाऊ है। फ़ारस के इतिहास-निर्माण में इस प्रान्त का सबसे बड़ा हाथ रहा है।

दजला और फ़रात नदियों की घाटियाँ फ़ारस की पश्चिमी सीमा बनाती हैं। इस किनारे पर पहाड़ों की समानतर श्रेणियाँ, जिनको प्राचीन काल में ज़ाग्रोस के नाम से सम्बोधित करते थे, इरानी पठार को मैदान से अलग करती हैं। मीडिया और फ़ारस के प्राचीन साम्राज्य इन्हीं बल बर्द्धक मैदान में स्थित थे। पहाड़ी प्रान्तों में यहाँ पानी अच्छा बरसता है पर कूम, कशाम और इस्फ़हान नाम के भीतरी ज़िले निर्जल और शुष्क हैं"।

इस सीमा के दक्षिणी पश्चिम भाग में कारून की समृद्ध घाटी स्थित है जिसे आजकल अरबिस्तान का सूबा कहते हैं। यही भाग अलम के नाम से सबसे पहले, (आर्यों के आने के बहुत पूर्व) सभ्य हुआ था। दक्षिण की तरफ़ पठार फैला है जिसमें फ़ार्स और करमान के सूबे सम्मिलित हैं-- फ़ार्स का सूबा बहुत शुष्क है और फलतः पूर्व में पश्चिम की अपेक्षा कम उपजाऊ है। भीतरी यज़्द का जिला एक प्रकार का रेगिस्तान है। करमान का सूबा भी केवल उँचाई के कारण ही कुछ कुछ सजल है। करमान और फ़ारसी विलोचिस्तान का अधिकांश भाग आधा रेगिस्तान और उजाड़ है।

फ़ारसी विलोचिस्तान में पर्वत-श्रेणियाँ समुद्र-तट के समानान्तर हैं अतएव सागर से गमनागमन बड़ा ही कठिन है। इस सूबे के उत्तर में सीस्तान का सूबा है जो हलमन्द नदी का डेल्टा है।

इसके और उत्तर में एक रेगिस्तान फ़ारस को अफ़गानिस्तान से उस बिन्दु तक अलग करता है जहाँ से हरीरूद नामी नदी पश्चिम से बिलकुल उत्तर की ओर घूम जाती है। यह नदी, जिसको इसके निम्न भाग में तजन के नाम से पुकारते हैं, जुलफ़िकार दर्रे तक इन दोनों देशों की सीमा बनाती है। जुलफ़िकार दर्रे के पास दो खम्भे गड़े हुये हैं—यहीं अफ़ग़ानिस्तान के राज्य का अन्त हो जाता है। फारस की इस सीमा को पार करती हुई तजन नदी सराख्स तक जाती है जो ईरान के उत्तर-पूर्व में स्थित है और कलाते-नादिरी से थोड़ी ही दूर है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि फ़ारस का पसार उत्तर में, उस स्थान के अतिरिक्त जहाँ कि तज़न नदी तुर्किस्तान के रेगिस्तान में घुस जाती है, सभी जगह

पहाड़ों की श्रेणियों से सुरक्षित है। पश्चिमी सरहद पर ये श्रेणियाँ और भी घनी हो गई हैं और गमनागमन का एकमात्र मार्ग कसरे शीरीं करमानशाह और हमदान हो कर है।

इससे और दक्षिण में आधुनिक अरबिस्तान नामी सूबा है यह कारून की समृद्ध घाटी में बसा है। उन दुर्गम श्रेणियों के कारण जो इसको फ़ार्स नामी सूबे से अलग करती हैं यह ईरान के वश में पूर्ण रूप से अब तक नहीं आ सका है। ईरान की खाड़ी के किनारे बसे हुए ज़िले भी सर्वदा मुख्य पठार से अलग ही रहे हैं। अरबिस्तान की भाँति इसमें अनार्यों की बस्ती है। ईरानी बिलोचिस्तान भी मुख्य पठार से दूर एक रेतीला प्रदेश है जहाँ 'शाह' की शक्ति कुछ भी नहीं है। पूर्व की ओर ब्रिटिश बिलोचिस्तान है जो बहुत ही सूखा है और जिसमें हो कर गमनागमन नितान्त कठिन है। लेकिन उत्तर-पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान की ओर मार्ग सहज और विस्तृत हैं और यही कारण है कि निकट भूतकाल तक अफ़ग़ानिस्तान फ़ारस का एक सूबा था।

ईरान और फ़ारस शब्दों का अर्थः—फ़ारस निवासी अपने देश को 'ईरान' कहते हैं जिसका अर्थ होता है आर्यों का निवास स्थान। फ़ारस या परशिया शब्द प्राचीन 'परसिस' से निकला है।

'परसिस' शब्द 'पारस' प्रदेश को सूचित करता था जो आधुनिक 'फ़ार्स' नामी सूबा है जहाँ 'अचीमेनियन' खानदान के शासक उत्पन्न हुए थे। आजकल भी फ़ार्स का सूबा पूरे ईरान प्रदेश में सबसे आदर्श—फ़ारसी सूबा गिना जाता है। ईरानी अपनी भाषा को फ़ारसी कहते हैं परन्तु 'फ़ारसी' शब्द का व्यवहार जब किसी एक व्यक्ति के लिये होता है तो उसका अर्थ 'फ़ारस' सूबे का निवासी होता है। भारतीय 'पारसी' पारसी इसलिये कहे जाते हैं कि वे 'पारसी धर्म्म को मानते हैं'। 'पारसी' शब्द फ़ारसी है और 'फ़ार्सी' अरबी है क्योंकि अरबी भाषा में 'प' नहीं होता।

ईरान और स्पेन की समानता:—अनेक बातों में ईरान और स्पेन मिलते जुलते हैं। फ्रान्स छोड़ने के बाद 'पिरेनीज़' पर्वत के पार स्पेन का 'प्लेटो' मिलता है जो २००० से ३००० फ़ुट तक ऊँचा है, और जो पर्वतों की समानान्तर श्रेणियों से, जिन्हें वहाँ की भाषा में 'सियरा' कहते हैं, विभाजित है। यह प्रान्त उजाड़ और वृक्षहीन

है—४०० मील के इस प्लेटो को पार करने के बाद 'अन्डालुशिया' का 'उष्ण प्रान्त मिलता है जो ईरान के निचले समुद्री किनारे के प्रान्तों के समान है।

उत्तर की ओर बिस्के की खाड़ी की सीमा पर स्थित प्रान्तों में और 'स्पेन के सूखे पठार में उतना ही अन्तर है जितना कास्पियन-सागर-तट के प्रान्तों और फ़ारस में है। ईरानियों को 'पूर्व के फ्रांसीसी' कहते हैं परन्तु उनको 'स्पेनवासी' कहना ही अधिक उचित होगा, क्योंकि स्पेनवासियों की रस्म-रिवाज़ और चाल-ढाल ईरानियों से बहुत कुछ मिलती है। इसका कारण कुछ तो दोनों देशों की प्राकृतिक समानता है। परन्तु स्पेन निवासी उन इरानियों के वंशज भी हैं जो अरबी-विजेताओं के साथ स्पेन में जाकर बस गये थे। इन्होंने स्पेन में "शीराज़" नामी एक प्रान्त आबाद किया और वहाँ शराब बनाई जिसको आजकल भी 'शेरी' कहते हैं जो फ़ारसी शब्द है।

मध्य-एशिया की शुष्कता:—मध्य-एशिया जिसका ईरान केवल एक टुकड़ा है; रेगिस्तानों का एक समूह है। यह कास्पियन सागर और तुरफ़ान के बेसिन और पामीर तथा तिब्बत के बीच में स्थित है। इसके विभिन्न स्थानों की ऊँचाई में बहुत अधिक अन्तर है (कास्पियनसागर समुद्रतट से भी नीचे है और पामीर का प्लेटो समुद्रतट से १०,००० फुट ऊंचा है) तथापि पर्वतों को छोड़कर तुर्किस्तान, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान बिलोचिस्तान और तिब्बत सभी सूखे हैं।

इस शुष्कता के कारण जिसका कारण अल्प वर्षा है, नादियाँ बहुत छोटी और निर्बल होती हैं और समुद्रतट पर पहुँचने के पहले ही सूख जाती हैं। इसके कारण पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ लगभग ३००० मील का विस्तृत मैदान उन अन्तः प्रवाही प्रदेशों का एक संग्रह मात्र रह गया है जहाँ से कोई नदी समुद्र तक पहुँच नहीं पाती है। जिसमें से किसी में भी कोई नदी वर्तमान नहीं है और फिर भी अल्प वर्षा के कारण सारा प्रदेश या तो पूरा रेगिस्तान है या अर्द्ध रेगिस्तान है जिसमें कुछ मरुद्वीप वर्तमान हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हम लोग एक ऐसे प्रान्त का वर्णन करने बैठे हैं जिसमें खेती के योग्य और घने बसे हुए प्रदेश बहुत ही कम हैं। अगर इन विस्तृत रेतीले प्रदेशों को हटा दिया जाय तो उपजाऊ प्रान्त मिलकर एक बहुत छोटे से भाग की रचना कर सकते हैं। भारत के निवासी (जहां उजाड़ प्रान्त कम हैं) यहा की दशा को ठीक नहीं समझ सकते हैं।

ईरान की जलवायु

ईरान और मध्य-एशिया की जलवायु अत्यन्त खुश्क है।

वर्षा—१० बरस तक के लिये हुये माप के द्वारा निम्नाङ्कित तालिका दी हुई है जो वार्षिक वर्षा को सूचित करती है।

जास्क	४·१७ ई०	वार्षिक
बूशहर	११·०७ ,,	,,
इस्फहान	४·७४ ,,	
तेहरान	६·३० ,,	,,
मशद	६·३७ ,,	,,

अक्षांश और सूर्य्य की गरमी को ध्यान में रखते हुये यहां की दिल्ली प्रान्त के भी मुकाबिले में बहुत कम है।

जहां तक वर्षा का संबन्ध है बनावट और स्थिति दोनों के विचार से ईरान एक अभागा प्रांत है। भाप से लदे हुए बादलों को पहाड़ों की श्रेणियाँ बीच में पड़कर रोक लेती हैं। अतएव पानी कास्पियन प्रदेश में ही बरस जाता है और अल-बुर्ज़ पर्वत को पार नहीं करने पाता। इस पर्वत के उत्तरी भाग तो हरे भरे खेतों और जंगलों से परिपूर्ण हैं पर दक्षिणी भाग बिल्कुल सूखा रह गया है परन्तु भाग्यवश यहां की पर्वतश्रेणियों में बरफ इकट्ठी रहती है। जो जाड़े और वसन्त की ऋतुओं में पिघल कर नदियों में आ जाती है। जिससे सिंचाई होती है। वास्तव में इन ऊँची श्रेणियों के बिना पूरा फ़ारस देश एक रेगिस्तानमात्र रह जाता। इसीलिये नगरों और गांवों की जनसंख्या भी श्रेणियों की ऊँचाई और चौड़ाई पर निर्भर रहती है। ईरान की भांति विस्तृत देश में विभिन्न स्थानों की मात्रा में कमी वेशी होना निश्चित है। मध्य, दक्षिणी-पूर्वी और पूर्वी फ़ारस में पानी कम बरसता है। उदाहरणार्थ खुरासान में मेंह के पानी से ६५ प्रतिशत अन्न की सिंचाई होती है और दक्षिणी पूर्वी ईरान में सिंचाई बिल्कुल नदियों से ही होती है।

कास्पियन सागर के अस्तराबाद, मज़न्दरान और जिलान के सूबों की दशा फ़ारस के अन्य प्रान्तों से सर्वथा भिन्न हैं। वृक्ष विहीन और शुष्क प्रान्त की जगह

यह देश इतने घने जंगलों से ढका हुआ है कि उनको पार करना भी एक कठिन कार्य्य है यहाँ ५० इंच से भी अधिक पानी गिरता है और हवा इतनी नम है कि पठार के निवासियों को अनुकूल नहीं पड़ती है।

तापक्रम:—फ़ारस की जलवायु विकराल है तथापि वायुमंडल बड़ा ही आनन्द-दायक और शक्ति वर्द्धक है।

जाड़े के दिनों में भी तापक्रम पहाड़ों में अक्सर और मैदानों में कभी कभी शून्य अंश से भी नीचे गिर जाता है। अगर मौसम अच्छा हुआ तो जाड़ा कष्ट-प्रद नहीं होता और खुले मैदान में पूरा दिन व्यतीत करना बड़ा ही आनंददायक होता है। लेकिन जब जाड़ा अपना प्रचंड रूप धारण कर लेता है तो कभी कभी आदमी और पशु तो सरदी के कारण मर तक जाते हैं घर से दूर होने पर और ऐसा प्रत्येक वर्ष होता है। प्लेटो पर कभी चार पाँच महीने तक बरफ पड़ी रहती है। खेती का काम रुक जाता है और पशुओं की मृत्यु के कारण बड़ा नुक़सान हो जाता है। साधारणतः फारस में जाड़ा खूब पड़ता है। और अगर कभी कभी यात्री को इसलिये पैदल सफ़र करना पड़ता है कि घोड़े पर चढ़ने में सर्दी अधिक सताती है। पैदल यात्रा के बाद उसे बड़ी चुस्ती और प्रसन्नता मालूम पड़ती है।

फारस देश में अरबिस्तान सबसे अधिक गरम सूबा है और इसकी राजधानी शूस्तर दुनियाँ में सबसे गरम जगह है। जून के महीने में तो वहाँ तापक्रम १२६ अंश से कभी भी कम नहीं रहता और लू के झोकों से बड़ी बुरी हालत हो जाती है। फ़ारस की खाड़ी दुनिया के प्रत्येक समुद्री भाग से अधिक गर्म है। पठार का हाल भिन्न है। वहां गरमी में दिन अधिक कष्टप्रद नहीं होता है। पर रात्रि भी बहुधा ठंडी होती है। वास्तव में मशद में रात्रि का सबसे अधिक तापक्रम ८४ अंश रहता है और दिन का सबसे अधिक १०२ है। (यह मात्रा सन् १९२१ की है)।

बाहर खुले मैदान में दिन की गरमी और विशेषतः लू की लपटें असहनीय होती है और कारवाँ रात को चला करते हैं। सभी स्थानों पर श्रेणियों के समीप होने के कारण गरमी के महीनों में ठंढे पहाड़ी-विश्राम-स्थान बड़ी सरलता से मिल जाते है। तेहरान-मशद और करमान में थोड़ी ही दूरी पर ऐसे बड़े अच्छे स्थान हैं।

हवाः— यह एक विचित्र बात है कि ईरान में हवा सर्वदा या तो उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पूर्व से चलती है। इसका कारण यह है कि अटलांटिक महासागर भूमध्य सागर और काला सागर देश के ओर एक ओर हिन्द महासागर उसके दूसरी ओर स्थित हैं। वसन्तऋतु और ग्रीष्मऋतु में दक्षिणी-पूर्वी और शिशिर और हेमन्त-ऋतु (जाड़े) में उत्तरी-पश्चिमी हवा चलती है। वृक्ष-विहीन मैदान में सूर्य की गरमी से हवा गरम होकर ऊपर को उठती है और उसकी जगह लेने को उत्तर-पश्चिम से ठंडी हवा आजाती है। पहाड़ी-श्रेणियों के पास स्थिति होने और उनके निम्नभाग में वृक्षविहीन निचले मैदान की स्थित के कारण हवा का ज़ोर बढ़ जाता है और वास्तव में कुछ प्रान्त ऐसे अभागे हैं जहाँ बारह महीने आँधी चला करती है। करमान की घाटी की भी यही दशा है। लेकिन सीस्तान से यह आँधी बड़ी ही भीषण हो उठती है। वहाँ पर एक सौ बीस दिन की प्रसिद्ध आँधी चलती है जिसकी चाल औसत से ७२ मील प्रति घंटा है। हिरात में इस आँधी को हिरात की आँधी के नाम से सम्बोधित करते हैं।

यह आँधी शायद पामीर से प्रारम्भ होती है और फारस और अफग़ानिस्तान की सीमा से होती हुई सीस्तान के दक्षिण में जाकर समाप्त हो जाती है। लाश जुवइन के समीप जो अफ़ग़ानी सीस्तान में स्थित हैं यह आँधी प्रचंडतम हो जाती है। सिस्तान में १६०४ में ऐसी ही एक आँधी का वेग एक सौ इक्कीस १२१ मील प्रति घंटा था। यही कारण है कि अरबियों के आक्रमण के बहुत पहले ईरान-निवासी हवाई चक्की के व्यवहार में सिद्धहस्त थे। मसूदी ने लिखा है कि वह ईरानी दास जिसने 'उमर' की हत्या की थी हवाई चक्की चलाने में होशियार था—यानी यूरोप में आविष्कार इसका होने के बहुत पहले यह कला ईरानियों को मालूम थी।

प्राचीन ईरान की जलवायु:—जलवायु का प्रभाव किसी देश की बनावट उसकी जनता उसके शासन और उसके इतिहास पर इतना अधिक पड़ता है कि इस बात का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है कि ऐतिहासिक काल से अब तक उसमें (जलवायु) में क्या क्या परिवर्तन हुए हैं।

प्राचीन ईरान की जलवायु पर हंटिंग्टन ने बड़े गवेषणापूर्ण विचार प्रकट किये हैं—उनका कहना है कि लाप, तुरफ़ान और सीस्तान की घाटिओं की शुष्कता बढ़ गई है। सिकन्दर महान की यात्रा के समय से २२०० वर्ष पूर्व ईरानी बिलोचिस्तान और

करमान के प्रान्त आज से अधिक उपजाऊ रहे होंगे। उदाहरणार्थ सिकन्दर की एक महान यात्रा को ले लीजिये जो उसने फ़ारसी बिलोचिस्तान में स्थित बामपुर से करमान सूबे में बसे हुये रुदवार जिले तक की थी। आजकल बामपुर से रुदवार तक १५० मील की दूरी से एक भी गाँव नहीं है और यह केवल ख़ानाबदोशों के रहने का स्थान रह गया है—परन्तु सिकन्दर के समकालीन इतिहासकारों के अनुसार बामपुर की घाटी पहुँचने पर पूरी सेना के खाने के लिये दो महीने तक का सामान मिल सका। इसके बाद बड़े आराम से उसकी सारी सेना दक्षिणी ईरान से होकर चली गई जिधर से जाने में आजकल काफ़ी तकलीफ़ होती है। हंटिंगटन का कहना है कि ईरान की शुष्कता बढ़ रही है। इसको उन्होंने अनेक उदाहरणों से साबित किया है। आधुनिक ख़ुरासान के विषय में (जिसका प्राचीन नाम कोहिस्तान है) अवस्ता में लिखा है कि वहाँ का एक बन था। परन्तु उसकी पत्ती भी आज देखने को नहीं मिल सकती। परन्तु अगर यहां वर्षा हों तो पुनः जंगल उग आयँगे। मुहम्मद इब्राहीम के इतिहास में जिरुफ़्त के सरदार ने कहा है कि पहाड़ियों और घने जंगलों के कारण वह करमान के धावे से बिल्कुल सुरक्षित है यह ११ वी ईस्वी की बात हैं और आज उपरोक्त करमान के दक्षिण के पर्वतों में जंगल का नाम भी नहीं है केवल थोड़े से ठूंठ रह गये हैं जो फिर उग नहीं रहे हैं।

निसन्देह लड़ाइयों और बुरे शासन के कारण ईरान की आबादी बहुत कम हो गई हैं। प्लेग और भूकम्प के कारण भी बड़े नगर नष्ट भ्रष्ट हो गये हैं। परन्तु इनमें से कोई कारण भी लाप-बेसिन पर लागू नहीं होते जो मध्यकाल में एक बहुत घना आबाद प्रान्त था। और जहाँ एक नदी से सिंचाई होती थी जो आजकल सूख गई है। तुरफान बेसिन की भी यही हालत हुई है।

फ़ारसी-बिलोचिस्तान की सरहद पर पंजगुर से क्वेटा तक सारा देश रेगिस्तान है परन्तु कभी यह खूब आबाद था और यहाँ वर्षा अच्छी होती थी। आजकल यहाँ कुए भी कठिनता से दीख पड़ते हैं जिनका पानी अपेय है। यहां की आबादी को नष्ट हुये भी बहुत अधिक दिन नहीं हुए वहाँ के प्राप्त मिट्टी के बरतनों से सिद्ध होता है १३ वीं शताब्दी तक यह प्रान्त आबाद था। सारे मध्य एशिया का यही हाल है। तेहरान में भी ऐसे ही सूखे रेगिस्तान हैं जो पहले हरे भरे मैदान थे। ये उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि मध्य एशिया में शुष्कता बढ़ गई है।

जनसंख्या

ईरान की आधुनिक जनसंख्या एक करोड़ के लगभग है। और सम्भवतः २५ लाख ईरानी अपने देश के बाहर रूस, तुर्किस्तान और हिन्दुस्तान में भी रहते हैं। समुद्री व्यापार के फैलने से पहिले ईरान के नगर आजकल के शहरों की अपेक्षा बड़े और समृद्ध थे। पानी भी अधिक बरसता था और देश में खेती भी अधिक हो सकती थी। अस्तराबाद की तरह कुछ जिले खाना-बदोशों के धावों से बर्बाद हो रहे हैं। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उस समय ईरान की आबादी बर्तमान योरूप के समान सघन थी। ईरान हमेशा से विरल बसा है और हम उन राष्ट्रों के राज्य मार्ग से होकर गुजरने वाले बहुत बड़े (व्यापार) का भी ध्यान में रखते हुए यह कह सकते हैं कि ईरान की आबादी उस समय डेढ़ करोड़ से अधिक नही थी।

ईरानी पठार के पर्वत:—साधारणता लोगों का ख्याल है कि फारस एक चौड़ा मैदान है जो चारों दिशाओं में पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। मुख्य पर्वतों से पूरी पर्वत श्रेणियां सामानन्तर चारों तरफ़ देश में फैली हुई हैं जिनके बीच बीच में औसतसे २० मील चौड़ी घाटियाँ हैं। और अगर एक यात्री इन पहाड़ियों के रुख से समकोण बनाता हुआ यात्रा करे तो उसे सर्वदा यही क्रम मिलेगा—

उत्तर के अलबुर्ज पर्वत से दक्षिण की (विलोचिस्तान की श्रेणियों में चूने का पत्थर सब कहीं दिखाई देता है। लेकिन इसके अतिरिक्त—नमक, बालू, कांप, कंकड़ आदि और भी अनेक पदार्थ मिलते हैं।

मध्यवर्ती पहाड़ियां बहुधा लाल बलुये पत्थर और चट्टानों की बनी हुई हैं। पर चूने का पत्थर यहां भी अधिक है।

नमकीन पदार्थ बरफ के पिघलने पर घुल जाता है और नीचे मैदान में वह आता है वहीं नमकीन तहें अधिकता से धरातल के ऊपर पाई जाती हैं। निशापुर ऐसे ही विकराल नमकीन प्रदेश के पास बसा हुआ है।

कंकरीले ढाल यहाँ की खास चीज़ है, वह ढाल जो अलबुर्ज की ओर निकलता है बहुत बड़ा है। उसकी चौड़ाई करीब १६ मील और गहराई भी बहुत अधिक है। तेहरान एक ढालू पाताल तोड़ कुएँ पर बसा है। इस ढाल पर एक बार खोदने की कोशिश के बाद देखा गया कि ५०० फ़ीट गहराई तक कंकड़ मिलता ही गया।

उत्तरी श्रेणियां:—उत्तरी श्रेणियाँ पामीर से प्रारम्भ होती हैं—पामीर को फ़ारसी में बामें-दुनियाँ यानी 'संसार की छत' कहते हैं। वहाँ से ये श्रेणियाँ हिन्दूकुश, कोहेबाबा और अन्य नामों से पूरे अफ़ग़ानिस्तान में फैली हुई हैं और हिरात के पास जाकर ये लहरदार मैदान में बदलजाती हैं तजन नदी के पश्चिमी किनारे पर जाकर ये श्रेणियाँ फिर अपनी प्रारंभिक ऊँचाई धारण कर लेती हैं और अलबुर्ज के नाम से सम्बोधित होती हैं। यहाँ से ये पश्चिम की ओर झुकती हुई सैकड़ों मील आगे बढ़ जाती हैं। कास्पियन सागर के दक्षिण में 'दमावन्द' नाम का ज्वालामुखी पर्वत स्थित है इसकी चोटी की ऊँचाई १६,००० फुट है और हिमालय के पश्चिम, एशिया का सबसे ऊँचा पर्वत है—ऐतिहासिक अरारात की ऊँचाई केवल १७,०००फुट ही है। यहाँ से, जब ये श्रेणियाँ कास्पियन सागर के दक्षिण से होकर गुजरती हैं तो इनका रुख पश्चिम से उत्तर को हो जाता है। फ़ारस की सबसे बड़ी नदी किज़िल-उज़न से कट जाने के बाद अरारात के प्रसिद्ध पर्वत के पास जाकर इनका अन्त हो जाता है।

वान झील के ऊँचे बेसिन में, अरमीनिया पठार के पर्वत जिनका रुख पश्चिम से पूर्व को है, फ़ारस की पर्वत-प्रणाली से मिल जाते हैं। इनकी समानान्तर श्रेणियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को जाती हैं।

ध्यान में रखने को बात यह है कि उत्तरी श्रेणी सबसे अधिक ऊँची है। पर वह बहुत संकुचित है। और ज़ाग्रोस पर्वत की समानान्तर श्रेणियों के समान पर्वतीय कटिबंध नहीं बनाती है। इसी से दाक्षिणी ढाल बहुत शुष्क है। पूर्वी भाग और भी अधिक शुष्क है—इधर उधर बिखरे हुए मरुद्वीपों (नखलिस्तान) को भी पर्याप्त जल नहीं प्राप्त होता है। कभी कभी रेगिस्तान पर्वत के बिलकुल समीप तक आ गया है।

दक्षिणी श्रेणियां:—पामीर से प्रारम्भ होकर दक्षिणी श्रेणी अनेक नाम धारण कर दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ती हुई अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान

होकर अरब सागर को जाती है। यहाँ पर इसकी ऊँचाई कम हो जाती है। और समुद्र तट के समातान्तर सैकड़ों मील तक पश्चिम की ओर जाती हुई करमान के दक्षिण-पूर्व तक जाती है। यहाँ से फ़ारस की खाड़ी के समानान्तर उत्तर-पश्चिम का रुख धारण कर लेती है। यह श्रेणी जहाँ पर फारस के मध्य में पहुँचती है। वहाँ कोहे-हजार और (कोहे लालाजार) नामी उँची चोटियाँ निकली हुई हैं। जिनकी ऊँचाई १३,००० फ़ीट तक है। फ़ारस की पश्चिमी सीमा पर भी पहाड़ियों की ऊँचाई अधिक है। अन्त में ये समानान्तर श्रेणियाँ अरारात के पास उत्तरी श्रेणियों से मिल जाती हैं।

भीतरी श्रेणियाँ पठार की श्रेणियों के मुकाबिले में अधिक ऊँची हैं पर वे इतनी प्रसिद्ध नहीं हैं कोहे तफतन बड़ी विलक्षण चोटी है। यह एक ज्वाला मुखी की चोटी है और बलोची सीमा के पास १२,००० फुट ऊँची है। अधिक पश्चिम में कोहे बज़मन रेगिस्तान के मध्य में स्थित है। यह शान्त ज्वाला मुखी है। इसकी सुन्दर चोटी ११,००० फुट ऊँची है। ईरान के पश्चिम में अलवन्द पर्वत ज़ाग्रोस की एक शाखा है। और हवादान के ऊपर उठा है। फारस का यह पर्वत पूर्वी पर्वतों से कहीं अधिक प्रसिद्ध है। दूसरी और भी कई श्रेणियां हैं। जिनसे पानी की असंख्य छोटी छोटी धारायें निकलती हैं और सिंचाई के काम आती हैं इस प्रकार फारस में एक एक करके कई श्रेणियां हैं वे एक दूसरे की सामानान्तर हैं और ऊँचाई में एक दूसरे से टक्कर लेती हैं।

फारस के सम्बन्ध में एक अनोखी बात यह है कि यहाँ ऊँचे से ऊँचे पर्वतों पर भी हिमागारों 'ग्लेशियर' का अभाव है किसी पर्वत पर ग्रीष्म ऋतु में बरफ़ नहीं रहती। केवल उत्तरी सपाट घाटिओं में कहीं कहीं कुछ बरफ़ मिलती है इस प्रकार चौदह हज़ार फुट ऊँचे कोहे लालाज़ार पर जुलाई मास में कुछ न कुछ बरफ रहती है। 'दमावन्द' का ज्वालामुखी भी बरफ से भरा हुआ है। खुरासान में ६,००० फुट की ऊँचाई पर ही कहीं कहीं बरफ़ मिलती है।

रेगिस्तान, नदियाँ, वनस्पति, पशु और खनिज पदार्थ

रेगिस्तान

लूत—फारस का महान रेगिस्तानः—ईरान के इस महान रेगिस्तान ने वहाँ के निवासियों की चाल ढाल, रस्म, रिवाज़ और धार्मिक विचारों पर बड़ा प्रभाव डाला है। इस विस्तृत बालुकामय प्रदेश को 'लूत' कहते हैं। जिसमें और भी अनेक नमकीन उजाड़खंड हैं जिनको कवीर कहते हैं। उत्तर में जहां पानी अधिक बरसता है, ऐसे उजाड़खंड और भी अधिक हैं। ईरान के इस महान रेगिस्तान के लिये 'लूत' का नाम ही अधिक प्रयोग में लाया जा रहा है यद्यपि नमकीन रेगिस्तान को 'कवीर' के नाम से सम्बोधित करते हैं। 'कबीर' सूखे और पानी से भरे हुए दोनों तरह के रेगिस्तान के लिये प्रयुक्त होता है। ये ऊपर से देखने में भिन्न भिन्न रूप के दीख पड़ते हैं। कहीं कहीं तो इनका धरातल सफ़ेद, समतल और बरफ़ की तरह कड़ा होता है। और कहीं कहीं पर यह ज़मीन की सतह से उठे हुए, होते हैं जिनको पार करना असम्भव होता है। इनको पार करने का प्रयत्न करना अपने को दलदल में फसाना है। इनमें यह अन्तर जल के परिमाण पर निर्भर है। और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि अगर 'कवीर' बिल्कुल निर्जल हो जावै तो वे 'लूत' में परिणित हो जावेंगे।

वास्तव में 'लूत' ईरान की 'शुष्कता' का फल है। ईरान अपनी मध्यवर्ती स्थिति के कारण मध्य-एशिया के अपने आस पास और सूखे देशों से भी अधिक सूखा है। इस स्थिति के कारण न तो इसमें वर्षा ही होती है और न यह पर्वतों से पानी ही प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि यहां कि नदियाँ इतनी छोटी होती हैं कि समुद्र के किनारे पहुचने के पहिले ही वे ख़तम हो जाती हैं इन उथली नदियों का जल अपेय है क्योंकि उनके पानी में नमक की मात्रा अधिक रहती है। इन रेगिस्तानों में विस्तृत कंकरीले ढाल हैं। कहीं कहीं नमक की खारी झीलें मिलती हैं। स्थान स्थान पर बालूदार पत्थरों की पहाड़ियां हैं। इन रेगिस्तानों का दृश्य बड़ा भयङ्करमालूम पड़ता है।

इस लूत को पार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। अगर यात्रा के समय आपको सब प्रकार की सुविधा रही तो भी खारी जल पीने और अपनी आवश्यकता

की वस्तुओं के ढोने के कष्ट से आप बच नहीं सकते हैं। और अगर दैववश यात्रा खराब हुई तो तूफान में फंस कर प्राण से हाथ धोना पड़ता है। ये तूफान गरमी और जाड़े (दोनों मौसिमों) में बराबर भयानक होते हैं। इसके अतिरिक्त इन रेगिस्तानों की यात्रा बड़ी खर्चीली होती है। यहाँ यात्रियों और पशुओं दोनों पर बहुत ही अधिक कर लगाया जाता है। चाहे वे बेचारे दलदलों में फँस कर अपना प्राण गवावें या तूफान के गर्भ में सदैव के लिये विलीन हो जावें।

धरती के घिसने और तूफानी हवाओं के चलने से ही रेगिस्तान इतने भयानक हो गये हैं।

आर्द्र प्रान्तों में जहाँ की भूमि तृणादि से आच्छादित रहती है हवा धरातल को विशेष नुकसान नहीं पहुँचा सकती। परन्तु इन सूखे मैदानों में कुछ थोड़े!डंठुल ही उग सकते है, हवा का वेग बहुत बढ़ जाता है और फलतः, बालू के 'चलते फिरते पर्वत' मनुष्यों को हमेशा खतरें में डाले रहते हैं।

धरती बहुत ही शीघ्र घिसती है। और तापक्रम की विकरालता के कारण हवा और पानी बड़ी शीघ्रता से इन रेतीली पहाड़ियों को तोड़ देते हैं।

ईरान के इस महान रेगिस्तान ने वहाँ के निवासियों के जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला है। इसने विकराल पर्वतों और अथाह समुद्रों से भी बढ़कर उत्तर से दक्षिण को और पूर्व से पश्चिम को अलग कर रक्खा है। इस विस्तृत रेगिस्तान के सुव्यवस्थित शासन-पद्धत्ति में अनेकों गड़बड़ी उपस्थित की हैं। बाग़ी सरदार हारने पर इसमें बड़ी सफलता पूर्वक आश्रय ग्रहण कर सकते थे। और केन्द्रीय सरकार को विवश होकर उसका पीछा छोड़ना पड़ता था। इसके अतिरिक्त ईरानियों के धर्म्म, चाल-ढाल और रस्म रिवाज़ तक पर भी इसने असर डाला है। यह उत्तर में तेहरान और मशद से पश्चिम में कुम और कशान तक और दक्षिण में यज़्द और करमान से लेकर पूर्व में कैन और बिजन्द तक फैला है। वास्तव में यह रेगिस्तान ईरान का निर्जीव-हृदय है।

नदियाँ:—कम वर्षा और ऊँची श्रेणियों के कारण जो पठार को चारो ओर से घेरे हुए हैं, सिन्धु नदी से शत्तुल अरब नदी के बीच वाले विस्तृत तटीय-प्रान्त में कोई भी प्रसिद्ध नदी नहीं है।

पूरे ईरान साम्राज्य में कारुन ही ऐसी नदी है जिसमें नावें चल सकती हैं ईरान के पश्चिमी बेसिन में सबसे प्रसिद्ध नदी ज़िन्दा-रुद है। यह कारुन नदी के समीप ही बख़्तियारी पर्वत से निकल कर इस्फहान के ज़िले में बहती है। इसके बाद यह 'गौख़ाना' नामी दलदल में जाकर मिल जाती है। इसके और उत्तर अरास नदी है जिसका प्राचीन नाम रगू-असीज़ था। कुछ दूर तक यह रूस और ईरान की सीमा बनाती है। यह भी एक प्रसिद्ध नदी है और अरारात के बाहर तक बहती है। पूर्व को ओर जाने पर ईरान की सबसे बड़ी नदी किज़िल यजुन मिलती है। यह उर्मिया की झील के पास से निकलती है और अलबुर्ज़ पर्वत को पार करती हुई साफ़ीशाह का नाम धारण कर कास्पियन सागर में गिर जाती है—यही प्राचीन अमारलीज है और कुछ लोग इसको जोरोस्तर 'कानून की नदी' भी कहते हैं। और भी पूरब वजन है। यह विशेष गहरी नहीं हैं और इसका जल भी अपेय है। जहाँ तक ईरान का सम्बन्ध है यह नदी विशेष काम की नहीं परन्तु हरीरूद के नाम से यह हिरात की उपजाऊ घाटी को सींचती है।

पूर्वी ईरान में ऐतिहासिक हलमन्द के अतिरिक्त और कोई नदी नहीं मिलती है। परन्तु इसको हम ईरान की सम्पत्ति नहीं कह सकते क्योंकि यह अफ़ग़ानिस्तान में ही निकलती है और सीस्तान तक आकर सीस्तान की झील में गिर जाती है। पर यह अफ़ग़ानिस्तान और ईरान दोनों को सींचती है।

वसन्त ऋतु के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में अगर यात्री ईरान के पठार को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पार करें तो उन्हें कोई भी नदी नहीं मिलेगी। अगर उन्हें एकआध नाले भी मिलें तो उनके पानी में इतना नमक मिला रहता है कि वे व्यर्थ दीख पड़ते हैं।

आक्सस नदी:—आज कल यह नदी ईरान से दूर है परन्तु बहुत समय तक आक्सस ने फ़ारस की पूर्वी सीमा बनाई है। अतएव इसका वर्णन असामयिक न होगा। यह पामीर से निकलती है और बदख़्शाँ को घेरती हुई उत्तर-पश्चिम की दिशा में बहती हुई आजकल अरल-सागर में गिरती है। पाँचवी शताब्दी में इसका वर्णन करते हुये हेरोडोटस ने लिखा है कि यह कास्पियन सागर में गिरती है। इसके एक शताब्दी पूर्व अरिस्टाटलस के वर्णन से भी यही ज्ञात होता है कि यह कास्पियन सागर में ही गिरती थी।

सिकन्दर महान के धावे के समय भी यह नदी कास्पियन सागर में ही गिरती थी। लेकिन न मालूम कब इसका पथ बदल गया और आजकल यह अरलसागर में गिरती है। क्यों और कब इसका रुख बदल गया है यह ठीक मालूम नहीं है। पर सबसे प्रथम यूरोपियन यात्री ए० जोकिन्सन ने १५५८ ईस्वी में यह लिखा है कि यह 'किथे की झील' में गिरती है। उसने भी अरल सागर को किथे की झील लिखा है। यह ईरान की सबसे बड़ी ऐतिहासिक नदी है।

झील:—ईरानी पठार पहले वास्तव में एक उथला समुद्र था। परन्तु पठार के उठ जाने के बाद समुद्र का अन्त हो गया। उरमियाँ की झील शीराज़ की खारी झील, सीस्तान की हामूं झील, जाज़ मोरियन और अन्य पानी के टुकड़े उसी समुद्र के बचे हुये हिस्से हैं। समुद्र वास्तव में आधुनिक लूत में परिणित हो गया है इन तमाम झीलों का पानी खारी है। ईरान की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर तीन सबसे प्रसिद्ध झीलें फैली हैं। इनमें से वान की झील टर्की में और गोचा रूसी अर्मीनिया में है।

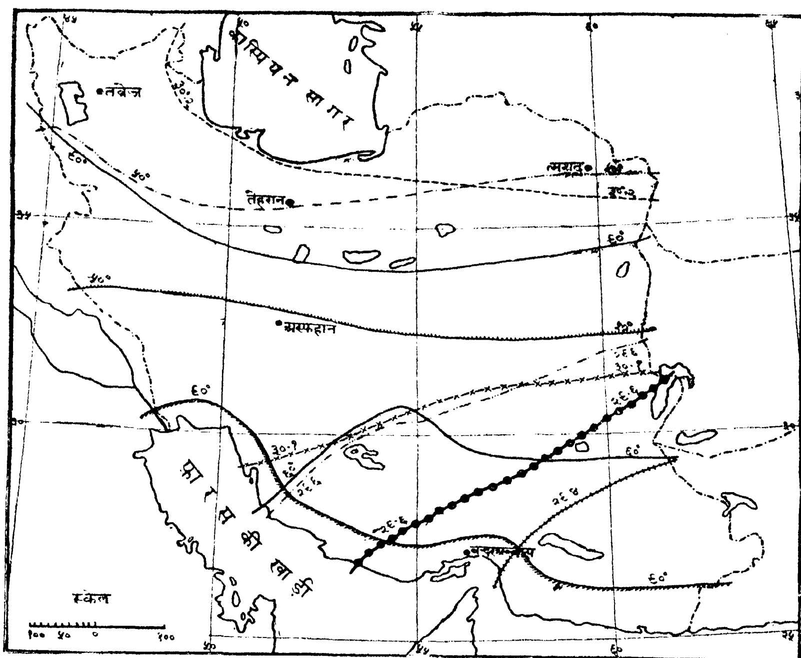
तीसरी झील उरमिया है। यह ईरान की सबसे बड़ी झील है और समुद्र तट से ४१०० फुट की ऊँचाई पर पर स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ८० मील और पूर्व से पश्चिम २० मील है। इसका पानी इतना खारी है कि मरा-सागर भी इसके आगे तुच्छ है।

इस झील के पश्चिम में और बीस मील की दूरी पर उरमिया नामक गाँव में ईरानी पैग़म्बर ज़ोरास्तर पैदा हुये थे।

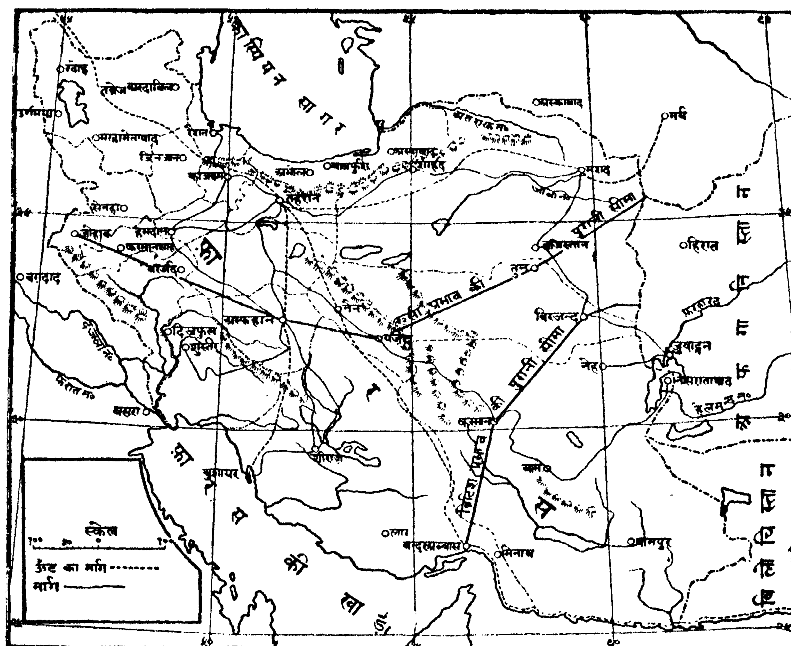
दरियाये महालू दूसरी झील है। यह शीराज़ के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह उथली है और इसका पानी खारा है। इसके बाद सीस्तान की प्रसिद्ध झील हामूँ पड़ती है। हलमन्द नदी इसमें पहाड़ों से पानी लाती है। अतएव यह झील जाड़े में आधी सूख जाती है परन्तु बसन्त ऋतु में यह ख़ूब बढ़ जाती है। जिस साल पानी बहुत बढ़ जाता है उस साल एक नहर से जिसका नाम 'शला' है पानी 'गाबदी गिरद' में चला आता है जो १०० गज़ लम्बा और ३० गज़ चौड़ा है। १६११ ईस्वी 'शला' २०० गज़ चौड़ी और ३० गज़ गहरी थी। एक दूसरी हामूँ जाज़ मोरियन है जो बामपुर और हालिल नदी के लाये हुये पानी से बनती है।

फ़ारस—प्राकृतिक

फ़ारस की उपज



फ़ारस—जलवायु



फ़ारस—आने जाने के मार्ग

ईरान की खाड़ी:—ईरान के दक्षिण में फारस की खाड़ी फैली है। यह चारों तरफ स्थल से घिरी है। यह १०० मील लम्बी और ३०० मील से १५० मील तक चोड़ी है। अरब सागर से इसमें आने का द्वार होरमुज़ का जल-संयोजक है। यहां इसकी चौड़ाई केवल ३५ मील है। यह उथली है और क्रमशः ऊपर उठ रही है। इसमें कई छोटे छोटे द्वीप हैं। बहरेन द्वीप के पास बहुत सी मूंगे की दीवारें हैं पहले इस खाड़ी को नारमारातुम यानी कडवी नदी और पूर्वी सागर इरीथिरीयन सागर कहते थे। आजकल यह फ़ारस की खाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है।

इसमें यात्रो को चाँदनी रात में यात्रा करने में ही सुविधा होती है। ईरान के किनारे देखने पर पहाड़ों की सूखी श्रेणियां समुद्र के किनारे के समानान्तर चलती हुई दिखलाई पड़ती हैं। अरब का समुद्र तट भी सूखा है। अतएव इसमें से जल्दी निकल जाने की यात्री की इच्छा होती है। लेकिन इस सूखे दृश्य के अतिरिक्त जब हम इस बात का ध्यान करते हैं कि इस खाड़ी के पास ही सर्व प्रथम संसार ने सभ्यता का पाठ पढ़ा था और इसी झील में सर्व प्रथम मनुष्य ने नाव चलाना प्रारम्भ किया था तो नसों का रुधिर तीव्र गति से प्रवाहित होने लगता है। ऐतिहासिक काल में 'सनाचरित' नामी इतिहासकार के अनुसार समुद्री व्यापार का यहाँ प्रचार किया गया था। प्रसिद्ध मल्लाह सिन्दबाद के समय में बसरा से चीन तक समुद्रिक व्यापार होता था इसके बाद एक नया युग आरम्भ होता है। जिसमें यूरोप निवासियों के जहाज़ यहाँ दिखलाई पड़ने लगे।

कास्पियन सागरः—कास्पियन सागर फ़ारस के उत्तरी तटीय सूबों की सीमा बनाता है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई लगभग ६०० मील है। उत्तरी हिस्से में यह १०० मील चौड़ा है परन्तु दक्षिणी भाग में चौड़ाई बहुत कम है। यह तीन बेसिनों में विभाजित हो सकता है।

उत्तरी बेसिन उथला है—बीच वाला गहरा है परन्तु पूर्व से पश्चिम तक इसमें भी एक उथली लाइन है जो केवल ६० गज़ ही गहरी है। दक्षिणी बेसिन सबसे अधिक गहरा है। इसके बन्दरगाह बहुत खराब हैं।

किसी समुद्र के इतने अधिक नामकरण नहीं हुए होंगे जितने इसके हुए हैं। इसका हर एक नाम ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्ध रखता है। ज़ोरास्तर के समय में इसका नाम ज़राया रुकाश था जिसका अर्थ—विस्तृत खाड़ियों का समुद्र होता है।

अवस्ता में इसका वर्णन करते समय इसे जल संग्रह सर्व-जलोपरि के नाम से सम्बोधित किया गया है। वास्तव में तत्कालीन आर्य्य निवासियों के दृष्टि में यह सबसे बड़ा समुद्र था। यूरोप-निवासी इसे कास्पियन कहते हैं। यह शब्द कास्पी नामी कबीलों से बना है जो इसके किनारे रहते थे। ईरानी इसको बहर-उल ख़जार के नाम से संबोधित करते है। ख़जार नाम का साम्राज्य माध्यमिक काल के प्रथम भाग में इसके उत्तर में स्थित था। भिन्न भिन्न अवसरों पर इसको 'होरकैनिया का समुद्र' और 'जिलान का समुद्र' के नाम से लिखा गया है।

हेरोडोटस के समय के पूर्व के उलेखों से पता चलता है कि ईरानियों का विश्वास था कि यह सागर सारी दुनियाँ को घेरे हुये है। इससे मालूम पड़ता है कि उन लोगों का संसार कितना छोटा था।

कास्पियन सागर के समुद्र तट की ऊँचाई में बड़ा परिवर्तन हुआ है। आज कल समुद्र तट काला सगार के तट से ८५ फुट नीचे है।

हंटिंगटन के अनुसार पहले इसका तट आधुनिक तट से ६०० फुट ऊँचा था पर इसको हम पूर्ण-सत्य नहीं मान सकते। हाँ, इतना तो निश्चय है कि इसकी ऊँचाई में बड़ा परिवर्तन हुआ है। हंटिंगटन ने यह दिखलाया है कि सिकन्दर महान के काल में आज कल से इसकी ऊँचाई १५० फुट अधिक थी। उन्होंने क्रास्नोवोडस्क से पूर्व दो ऐसे तट देखे हैं जो वर्तमान समुद्र तट से क्रमशः २५०, और १५० फुट ऊँचे थे। अगर कभी कास्पियन सागर और अरल सागर दोनों एक ही रहे हों तो इसमें आश्चर्य नहीं है। हम लोग जानते है कि आक्सस नदी के किनारे वाला मार्ग पहली शताब्दी में छोड़ दिया गया था। इसका कारण यह था कि कास्पियन सागर के धरातल में परिवर्तन होगया। भारतवर्ष और पश्चिमी देशों के बीच का राजमार्ग अवसकुन नगर की ओर मुड़ गया। नगर गुरगान नदी के मुहाने के समीप कास्पियन सागर के दक्षिणी पूर्वी कोने पर स्थित है। गुमेश तप्पा के निकट अवसकुन की स्थिति है।

यहाँ से प्रसिद्ध लाल दीवार या सिकन्दर की दीवार प्रारम्भ होती है। इस दीवार के चिह्न सर्वथा वर्तमान हैं और उनका अन्त समुद्र में जाकर हो जाता है। एक दूसरी दीवार भी समुद्र में विलीन हो गई है।

इन बातों से इसका पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है कि समुद्र का तट बहुत बढ़ गया है।

परन्तु आज कल कास्पियन सागर का पानी घट ही रहा है।

गमनागमनः—जिस मार्ग का सबसे पहले वर्णन मिलता है वह राजमार्ग बेबिलोन से करमानशाह होता हुआ हमदान यानी प्राचीन एकवतन तक जाता था। अकेमेनियन साम्राज्य के अधीन यह सारदज़ से एकवतन को जाता था। यहाँ से यह राजस होकर अलबुर्ज़ के दक्षिणी ढाल से होता हुआ बैक्टिरिया को चला जाता था। सिकन्दर से पराजित होकर दारा इसी राज मार्ग से भागा था। बहुत प्राचीन काल से पूर्व और पश्चिम में गमनागमन का यही मुख्य मार्ग था। माध्यमिक काल में यूरोप के व्यापारियों का मार्ग तबरेज़ से होकर जाता था जिसको मार्को पोलो नामी यात्री ने तौरिस के नाम से लिखा है। उसके समय में यात्रियों का लक्ष्य चीन या भारत वर्ष हुआ करता था और बेनिस के सौदागर यज़्द और करमान से उर्मुज़ तक जाने वाली समानान्तर श्रेणियों के बीच से जाया करते थे।

ईरान की खाड़ी की ओर से फ़ारस में प्रवेश करना कठिन है क्योंकि बूशहर शीराज़ नामी मार्ग बहुत ही बुरा और कष्टकर है। उत्तर की ओर कास्पियन सागर पश्चिम की ओर अरब और पूर्व की ओर बिलोचिस्तान से भी ईरान में प्रवेश करना कठिन ही है। यों तो फ़ारस स्वतः एक उजाड़ खंड है और उस पर भी लूत रेगिस्तान ने इसको और भी छोटे छोटे सूबों में विभाजित कर दिया है जिनमें आपस का गमनागमन बड़ा ही कठिन है। सबसे सहज मार्ग उत्तर-पश्चिम से है जहाँ तबरेज़ में त्रिविजन्द और टिफ़्लिस से आने वाले मार्ग मिलते हैं। दक्षिण-पूर्व मार्ग भी खुला हुआ है। हिरात तक कोई कष्ट नहीं होता है। सड़क से एक मील तक दोनों ओर बड़ी आसानी से गाड़ियाँ दौड़ सकती हैं।

गमनागमन में ईरान ने कुछ विशेष उन्नति नहीं की है। यात्रा का एक मात्र सहारा खच्चर है। व्यापार भी अब तक खच्चरों और ऊँटों पर ही होता है। गाड़ियों का आविष्कार आज से २००० वर्ष पहले हुआ था अब भी वही व्यवहार में लाई जाती हैं।



वनस्पति

जहाँ तक वनस्पति का सम्बन्ध है ईरान का पठार एक गरीब प्रान्त है। उन स्थानों के अतिरिक्त जहाँ सिचाई हो सकती है सारा प्रान्त वृक्ष-विहीन और बालुकामय है। मुट्ठी भर दलदलो को छोड़कर तृणाच्छादित भूमि दर्शन को भी नहीं मिलती है और झाड़ियाँ तो कहीं दीख भी नहीं पड़तीं। वास्तव में यहाँ शुष्कता की ही प्रधानता है। बसन्त ऋतु में कुछ समय के लिये झाड़ियाँ फूलने लगती हैं और पहाड़ियों में हजारों पौधे उत्पन्न हो जाते हैं। परन्तु ग्रीष्म ऋतु के प्रथम झोके से ही प्रत्येक चीज़ सूख जाती हैं। पहाड़ियाँ भी वृक्ष विहीन ही हैं पर इन पर कुछ थोड़े से पहाड़ी छोटे वृक्ष होते हैं जिनसे बहुमूल्य गोंद मिलता है।

कुछ ऐसे भी स्थान हैं जहाँ जङ्गली वेलि उगती है। परन्तु ये बड़ी शीघ्रता से कम हो रही है। ज़ाग्रोस पर्वत के किनारे किनारे शीराज़ से प्रारम्भ होकर छोटे छोटे सुन्दर वृक्षों का एक जंगल है जो २०० मील लम्बा और कई स्थानों पर १०० मील तक चौड़ा है। इसके अतिरिक्त पठार पर और जगह या तो वृक्ष सींच कर उगाये जाते हैं या नदियों के किनारे पाये जाते हैं।

सबसे अधिक प्रसिद्ध वृक्ष चिनार है। इसके अतिरिक्त झाऊ अखरोट, देवदारु और सर्व के वृक्ष भी होते हैं।

चिनार मकान बनाने के काम में आता है। अस्पिन के दरवाज़े और राम के हल बनते हैं। और अन्य वृक्ष ईंधर के काम आते हैं। सर्व और राम को उद्यान-

सजाने के काम में लाते है। राम बड़ा छाया दार होता है—फुलवारियों में नरगिस और लाल गुलाव ही अधिकांश दीख पड़ते हैं। पहाड़ी घाटियों में हाथार्न खूब मिलता है। यहाँ जूड़ाज़ नामी दरख्त भी खूब मिलते हैं जो डलियाँ बुनने के काम आते हैं। आज से ४०० वर्ष पूर्व भी यहाँ यही बनस्पति पायी जाती थी।

जहाँ तक फलों का सम्बन्ध है ईरान एक सम्पन्न देश है। यहाँ फलों की उपज खूब होती है। सेव, नाश पाती, अनार, अखरोट, काले और पीले बेर काली और सफ़ेद झरवेरियां बहुतायत से सब जगह पैदा होती है। गरम प्रदेशों में अंजीर अनार, बादाम और पिस्ता खूब होते हैं। और भी गरम स्थानों में छुहारे नारंगी और नीबू पैदा होते हैं। फारस के अंगूर और तरबूज़ बहुत प्रसिद्ध हैं।

फ़ारस की मुख्य फसल गेहूँ और जौ हैं। ज्वार, बाजरा, अरहर, मटर, मूँग, उरद, कपास, अफ़ीम और तम्बाकू की खेती खूब होती है। तिलहन भी सब जगह उत्पन्न होती है सलजम, सकरकन्द, प्याज़ और लहसून भी बोया जाता है। कास्पियन के सूबो में और गरम प्रान्तों में धान और मकई की खेती होती है। तरकारियों में आलू, गोभी, करमकल्ला, टमाटर, ककड़ी और मूली मुख्य तरकारियाँ हैं। परन्तु इनमें भी सभों की खेती सर्वदा नियमित रूप से नहीं होती है।

ईरान के पहाड़ों पर कांटेदार पौधे और बड़े कुकुरमुत्ता होते हैं। यहीं मन्ना जिसको ईरानी बहुत चाहते हैं बहुत पैदा होता है ऊंटकटारा भी मिलता है। करमान में (करावे) बीज मिलते हैं। सुगंधित हींग का हिन्दुस्तान में बड़ा प्रचार है। कास्पियन सागर के समीपस्थ सूबों की दशा बिलकुल भिन्न है। यहाँ के वन बड़े सघन हैं। दरख्त खूब लम्बे चौड़े और घने होते हैं। एम, बीच, सिन्दूर, मैपल, एश और नीबू खूब फैले हैं। वन के दरख्तों पर फैली हुई अङ्गूर की बेलि का दृश्य बड़ा ही सुन्दर मालूम पड़ता है। भूमि घास और पौधे से (स्नोड्राप) पूर्णतः अच्छादित रहती है और ऐसा ज्ञात होता है। मानो हरे मखमल का फर्श बिछा है। फूलों में वाइलेट और प्राइमरोज़ खूब होते हैं। बनस्पति उष्णकटिबंधी नहीं है वरन् दक्षिणी यूरोप के जाति के हैं।

छुहारे फारस की खाड़ी की जलवायु सूखी और गरम है और तथा ताड़ ही मुख्य उपज है। बन्दरअब्बास के करीब इनके खेत के खेत लगाये गये हैं और सूखे रेगिस्तान में इसकी हरियाली आखों को बड़ी सुखप्रद ज्ञात होती है।

फारस में फ़लों की खेती ख़ूब होती है। लोगों को बगीचे और उद्यान लगाने का खास शौक़ है। बगीचों से घिरे हुए गाँव फ़ारस के एक मुख्य दृश्य हैं।

पशुः—कास्पियन सागर के सूबो में चीते बहुतायत से मिलते हैं और दक्षिणी-पश्चिमी सूबे अपने शेरों के लिये प्रसिद्ध हैं। उत्तर और दक्षिण में भालू भी मिलते हैं परन्तु ये संख्या में कम हैं। भेड़िया, तेंदुआ, लकड़बग्घा, जंगली बिल्ली, सियार और लोमड़ियाँ चारो तरफ़ मिलती हैं। कास्पियन सागर के सूबों में बड़े सुन्दर बारहसिंघा और हिरन बिचरते रहते हैं। मेसोपोटामियाँ और ज़ाग्रोस की पहाड़ियों में भी चितकबरे हिरन पाये जाते हैं। लेकिन फारस के खास पशु जो सब जगह पाये जाते हैं जंगली भेड़ और हिरन हैं। जंगली सुअर शिकार का खास जानवर है परन्तु ईरानी इसका शिकार करना हराम समझते हैं। यह कास्पियन सूबों के जंगलों और सर्वत्र नदियों के किनारे पाये जाते हैं। मैदानों में बारहसिंघे पाये जाते हैं दलदलों के पास जंगली गदहे पाये जाते हैं। खरगोश कम मिलते हैं।

पालतू पशुः—फारस या प्राचीन मिडिया घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। कुछ छोटे छोटे जानवर पाले जाते हैं। कास्पियन और सीस्तान सूबों में कूबड़ वाले जानवर मिलते हैं। कास्पियन सूबों और अरबिस्तान में भैंसा पाया जाता है परन्तु यह पठार पर नहीं मिलता है। ईरान में दुम्मा भेड़ पाई जाती है—इसकी पूछ मोटी होती है जिसका वज़न ६ सेर तक होता हैं। वज़न बसन्त ऋतु में बढ़ जाता हैं। परन्तु ज्यों ज्यों सरदी बढ़ती जाती है वजन भी घटता जाता है। एक प्रकार की बकरियाँ भी मिलती हैं जिनके बाल बड़े ही सुन्दर और कोमल होते हैं जिनसे शाल आदि बनते हैं। खुरासान का एक कूबड़ वाला ऊँट अपनी मज़बूती के लिये मशहूर है। बिलोचिस्तान में साँड़िनी पाई जाती है जो अपनी तेज़ चाल के लिये प्रसिद्ध है। कास्पियन का दो कूबड़ों वाला ऊँट भी कभी कभी कारवां में दिखलाई पड़ जाता है।

शिकार के पक्षीः—पहाड़ों में ६००० फुट की ऊँचाई पर कुछ पहाड़ी-मुर्गे पाये जाते हैं। भिन्न भिन्न जाति के फाख्ता भी मिलते हैं। पठार का ख़ास पक्षी तीतर होता है जिनकी दो क़िस्मे होती हैं। एक तीसरे प्रकार का तीतर केवल दक्षिण में ही मिलता है। गरम प्रान्तों और जिरूफ़्त की घाटी में पक्षी बहुतायत से पाए जाते हैं। रेत के पक्षी भी तीन प्रकार के होते हैं पर पठार पर अधिकतर सर्वोत्तम

पक्षी मिलता है। बत्तख और कुछ अन्य पक्षी जाड़ो में आ जाते हैं और बसन्त ऋतु में ही जाल में फसाए जाते हैं। कबूतर सर्वत्र पाये जाते हैं।

बिना शिकार वाले पक्षियों में चील्ह बाज और गिद्ध खूब पाये जाते हैं। ग्रीष्म और बसन्त ऋतु में बीईटर होपो बजूजे चहका करते हैं कौवे, लवा, गौरा बुलबुल आदि पक्षी बहुत मिलते हैं। बुलबुलों को पकड़ कर पालते हैं। कास्पियन सूबों में और सीस्तान में पानी में रहने वाले पक्षी मिलते हैं। पन-डुब्बिया, हंस और राज-हंस इसके उदाहरण हैं।

खनिज पदार्थः—ईरान में खनिज पदार्थ विशेष नहीं पाए जाते। और गमनागमन की कठिनता के कारण वर्तमान काल में भी सभी खानो में काम नहीं होता। प्राचीन समय में दशा इसके विरुद्ध थी। अलार साम्राज्य के पर्वतों में तांवा खूब होता था मध्य एशिया भी अपने पशुओं के लिये प्रसिद्ध प्राचीन धातु-काल में अनेक खानों में काम होता था जिसका अब पुनः आविष्कार नहीं हुआ है। धातु काल में लोग बेबीलोन में ताम्बा व्यवहार में लाते थे कांसा नहीं। वह पत्थर जिसका शिलालेखों में अधिकांश वर्णन आता है बहुमूल्य है जो दमावन्द के पर्वत में मिलता था। लेकिन इस खान का अब पता नहीं है। प्राचीन काल के और धातु, लोहा, रांगा सोना और चाँदी हैं। बहुमूल्य पत्थरों में हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलमणि पाये जाते थे। इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि प्राचीन काल में खानों में लड़ाई में पकड़े गये दास काम करते थे जिनके जोवन का कोई मूल्य ही नहीं था।

शाह अब्बास ने ईरान की खानों में काम कराना प्रारम्भ किया था परन्तु इसमें बड़ा घाटा था। १७ वीं शताब्दी का यात्री टैवरनियर लिखता है "कि ईरान की चाँदी की खानों में दस रुपये की पूँजी लगाकर ६) ही मिल सकते हैं"। वास्तव में गमनागमन की कठिनता के कारण लाभ के साथ इन खानों में काम नहीं हो सकता।

आज कल भिन्न भिन्न स्थानों पर लोहा, ताँबा, रांगा, पारा, कोयला, चाँदी, सोना, सुहागा तथा मिट्टी का तेल पाया जाता है। आज कल लोहा की खुदाई नहीं होती। परन्तु सब्जवार के पीछे और लूत के पूर्वी किनारे का तांबों को खानों से लावा निकाला जाता है। इन खानों का वर्णन मुसलमान इतिहासकारों ने नहीं किया है। इन खानो की रक्षा करने वाली चहार दिवारियाँ पुरानी नहीं मालूम

पड़ती हैं रांगा, पारा, चाँदी और सोना तथा मैगनीशिया और सोहागे की कुछ खानों में काम होता है। परन्तु तेहरान और मशद कोयले की खानों में बराबर काम होता है।

मिट्टी का तेल:—१६०७ से शस्तर के ३० मील पूर्व मिट्टी का तेल निकाला जाता है। लोगों का ऐसा विचार है कि मिट्टी के तेल यह कटिबंध काकेशस से ईरान की खाड़ी तक फैला है। ईरान की खाड़ी में किश्म द्वीप में मिट्टी का तेल निकलता है। किश्म में नमक भी मिलता है।

"साइक्स के आधार पर

बंशीधार श्रीवास्तव।

ईरान के बालक

भारतवर्ष की भाँति ईरान में भी बालकों का विशेष रूप से आदर होता है। जब किसी के घर में बालक का जन्म होता है तब उसके यहाँ उत्सवों की बाढ़ सी आ जाती है। बालक के माता पिता अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को दावतें देते हैं और ग़रीब दुखियों और कंगालों को भी यथाशक्ति भोजन वस्त्र देकर सन्तुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त घर में नाच गान आदि भी तरह तरह के उत्सव होते हैं।

बालक के पृथिवी पर पैर रखते ही उसे एक विचित्र ढंग का क़ीमती और कामदार चोंगा पहना देते हैं और रेशमी वस्त्रों से सजाये हुए पालने पर लेटाते हैं। तब दाई पुरस्कार की आशा से उस बालक को पिता के पास ले जाती है। पिता बालक को चूम कर कृतकृत्य हो जाता है और दाई भी समुचित रूप से पुरस्कृत होकर सन्तोष का अनुभव करती है।

ईरान में एक कहावत प्रसिद्ध है कि जिसके घर में बालक नहीं है उसकी आंखों में रोशनी नहीं है। इस दशा में पुत्र का मुँह देखकर माता पिता का आह्लादित होना स्वाभाविक है। परन्तु दुःख का विषय है कि ईरान में भी बेचारी बालिकायें उपेक्षा की ही पात्र समझी जाती हैं उनके जन्म से न तो घर में किसी तरह की चहल पहल होती है और न कोई उनका स्वागत ही करता है।

ईरान में बालक के जन्म लेते ही उसे सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्रों को लादी में जो लपेट देते हैं उसका एक कारण है। वे चाहते हैं कि बालक की रूप रेखा भलीभांति देखकर किसी को उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करने का अवसर न मिले। यदि कोई यह कह ही बैठे कि देखा, कैसा सुन्दर यह बालक है तो साथ ही साथ यह कहना भी आवश्यक माना जाता है—माशाल्ला अर्थात् ईश्वर सर्वशक्तिमान है। अन्यथा लोग बालक के लिए अशुभ मानते हैं।

ईरान के स्कूलों में बालकों को ढेर की ढेर पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें कुरान भर रटाया जाता है उसका अर्थ समझना आवश्यक नहीं माना जाता है। यहाँ तक कि कितने ही ईरानी अध्यापक भी कुरान का अर्थ भलीभांति नहीं

समझते है। बात यह है कि क़ुरान अरबी भाषा में लिखा है जो ईरान की भाषा से भिन्न और कठिन है।

ईरानी बालकों को अपने अक्षर सुधारने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। कारण यह है कि ईरानियों को अपनी लिखावट की सुन्दरता का सदा से ही अभिमान रहा है और वे अपने हस्त लिखित ग्रन्थों को चित्रों की भाँति सजाकर बड़े शौक़ से रखते हैं।

ईरान में स्लेट नहीं होते। वहाँ के बालक किल्क या मुश्कबेद की क़लम से चमकीले काग़ज़ पर खूब बना बना कर लिखते हैं। लिखते समय वे अपनी कापी दाहिने घुटने पर रख कर बैठते हैं और जब कभी कोई अक्षर अशुद्ध हो जाता है तब ज़बान से चाट कर उसे मिटा देते हैं और उस स्थान पर शुद्ध अक्षर लिख देते हैं। ईरान के बालक अपना हस्ताक्षर नहीं करते। वे अपने अपने नाम की मोहरें बनवा कर रख छोड़ते हैं और जब कभी हस्ताक्षर करने की आवश्यकता पड़ती है तब उस मोहर में ज़रा सी स्याही डाल कर छाप देते हैं, बस, इसी से उनका हस्ताक्षर करने का काम चल जाता है।

ईरानी बालकों की पोशाक भी अद्भुत होती है। अपने पिता के ही समान वे लम्बे और ढीले ढाले चोगे पहनते हैं और मस्तक पर आस्तरखान कुलह रख लेते हैं। बात चीत करने में ये बालक आरम्भ से ही चतुर होते हैं। इन्हें इस बात का सदा भय रहता है कि कहीं किसी के प्रति किसी अनुचित शब्द का प्रयोग न हो जाय।

ईरानी बालकों को भोजन करने का ढंग भी सावधानी से सीखना पड़ता है वहाँ न तो अंगरेज़ों की तरह भोजन की सामग्री मेज़ पर रख कर छूरी काँटे से खाने की प्रथा है और न ईरान के लोग हिन्दुओं की तरह पाटे पर बैठ कर थाली में ही खाते हैं। वे लोग अपने सामने चमड़े का एक चद्दर बिछा कर भोजन करने बैठ जाते हैं और बंधने में से थोड़ा सा भात हथेली पर रख कर उँगलियों की सहायता से मुठिया सी बना कर खा लेते हैं। जब तक वह मुठिया ठीक नहीं बन जाती और भात खूब अच्छी तरह सन नहीं जाता, तब तक वैसे ही उँगलियों से दबाते रहते हैं इन लोगों के भोजन में विशेषता यह है कि मुट्ठी से एक भी चावल चद्दर पर नहीं गिरने पाता। इसके अतिरिक्त भोजन करने में बायें हाथ का उपयोग वे लोग किसी

भी दशा में नहीं करते। एक हाथ से चावल का इस तरह सान लेना वास्तव में कोई आसान काम नहीं है। रोटी के टुकड़ों से ही वे लोग थारी कटोरी का भी काम चला लेते हैं।

ईरान के भिन्न भिन्न स्थानों की दरियाँ अपने अपने स्थान की ख़ास विशेषता रखती हैं। परन्तु उन रंग बिरंगी और सुन्दर सुन्दर दरियों के बनाने का श्रेय वहाँ के बालकों को ही होता है। उस्ताद बैठ कर केवल उन्हें ज़रा सा रंग आदि के सम्बन्ध में इशारा भर करता जाता है और वे सारा काम अपने आप ठीक कर लेते हैं।

ईरान के किसी प्रदेश में रेलगाड़ियाँ नहीं चलती किन्तु वहाँ भी बहुत से अच्छे अच्छे नगर हैं। अतएव व्यापारियों तथा अन्यान्य व्यक्तियों को पैदल ही दुर्गम बनों में होकर बहुत सा रास्ता तय करना पड़ता है। उस दशा में यात्रियों के धन तथा प्राण का बड़ा भय रहता है और कभी कभी बड़ी साहसपूर्ण घटनायें हुआ करती हैं। ईरानी बालक ऐसी घटनाओं का वर्णन बड़े चाव से सुना करते हैं। इन वीरता-पूर्ण कहानियों का हाल सुन सुन कर वे आनन्द से फूल उठते हैं।



ईरान का स्त्री समाज

ईरान का स्त्री समाज क़रीब क़रीब वैसा ही है जैसा हमारे भारतवर्ष का। ईरान में बाल-विवाह वृद्ध-विवाह बहु-विवाह पर्दा आदि बातों का हमारे यहाँ से भी अधिक प्रचार है। स्त्रियों की शिक्षा आदि की कोई बात नहीं है। छोटी बच्चियों को बचपन ही में कुरान रटा दिया जाता है। बस यही सब कुछ है।

स्त्रियों का अधिक समय घरों के भीतर ही व्यतीत होता है। अमीर घरों की स्त्रियाँ तो शायद ही कभी बाहर निकलती हों। घरों में वे खाना बनाती हैं, बच्चों की देखरेख करती हैं, गृहस्थी के अन्य कार्य्य करती हैं और फुर्सत पाती हैं—फुर्सत ही अधिक रहती है—तो आपस में गपशप करती हैं या लड़ती हैं।

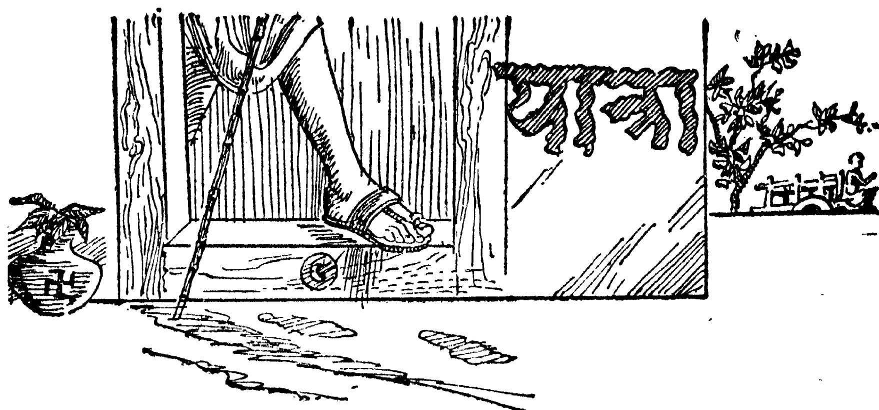
पति जैसे हमारे देश में परमेश्वर समझा जाता है वैसे ही ईरान में भी। इसमें सन्देह नहीं कि बहु-विवाह की प्रथा हमारे देश में कम नहीं है, पर ईरान में बहुत ही अधिक है। कुरान में एक पुरुष की चार शादियाँ तक करने की बात लिखी है। इसके अनुसार प्रायः सभी लोग जो कमा कर खिला सकते हैं, चार शादियाँ करते हैं। कम शादियाँ करना अधिकांश लोग अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं। स्त्रियों को सदैव इस बात का प्रयत्न करना पड़ता है कि पति उनसे प्रसन्न रहे। इससे उनमें आपस में बड़ी प्रतिद्वन्दिता रहती है। इसके लिए वे नाना प्रकार के शृंगार करती हैं। ईरान में बड़ी बड़ी आँखें और घनी भौं वाली बड़ी सुन्दर समझी जाती हैं। इससे बेचारी स्त्रियों को कज्जल आदि से अपनी भौं को रँगना पड़ता है। अगर सड़क पर चलती हुई किसी स्त्री का बुरक़ा इत्तफ़ाक से उठ जाय और आप उसकी तरफ़ देखें तो बड़ी बड़ी आँखें और काली विशाल भौंहें देखने को मिलेंगी। ईरानियों के गीत में इन भौंहों का बड़ा ज़िक्र आता है इनके लिए बड़ी बड़ी उपमाएँ सोची जाती हैं। ईरानियों का एक ग्राम्य गीत बहुत दिन हुए मैंने सुना था। उसका भावार्थ यह है—"मियाँ नमाज़ बहुत पढ़ते हो। रोज़ा बहुत रखते हो। अल्लाह अल्लाह बहुत करते हो ? क्यों ? क्योंकि तुमने काली भौंहें नहीं देखीं। तुम्हारी आँखों के सामने कोई घूँघट नहीं उठा। जिस घड़ी उठ जायगा। बस उसी घड़ी नमाज़ भूल जाओगे। रोज़ा खोल दोगे और शरबत माँगने लगोगे।"

शरबत ईरान की ख़ास चीज़ है। तरह तरह के शरबत बनते है और ख़ूब पिये जाते हैं। सुन्दरी स्त्रियों की शरबत से भी उपमा दी जाती है। जिन स्त्रियों की भौंहें बड़ी काली होती हैं और जो विविध प्रकार के शरबतों का बनाना भी जानती रहती हैं उनका बड़ा मान होता है। स्त्रियाँ अपनी सौतों का परभाव करने के लिए नाना प्रकार के तंत्र मंत्र का भी प्रयोग करती रहती हैं। वे पुरुषों के लिए जितनी कोमल और प्रिय होती हैं स्त्रियों के लिए उतनी ही कठोर और अप्रिय होती हैं।

इधर ईरान में शिक्षा की वृद्धि हो रही है। इसाई मिश्नरियों ने इस दिशा में बड़ा कार्य्य किया है। अब ईरान की सरकार भी इसमें दिलचस्पी ले रही है। स्त्रियों के अनेक स्कूल और कालेज खुलाये हैं और बहुत सी पत्रिकाएँ भी निकलने लगी हैं। मातृ-भाषा फ़ारसी है पर अब बहुत सी स्त्रियाँ शौक़िया अँगरेज़ी पढ़ती हैं और बहुत सी विलायत आदि भी हो आई हैं और जाने वाली स्त्रियों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

कहा जाता है कि आधुनिक युग स्त्रियों का युग है। स्त्रियों की जागृति के चारों ओर से समाचार आ रहे हैं। ईरान की स्त्रियाँ भी जगी हैं और जिस गति से वे बढ़ रही हैं यदि वही क्रम जारी रहा तो वह दिन निकट है जब ईरान की काया पलट हो जायगी। घरों के अन्दर ईरान की स्त्रियों की पोशाक बड़ी भद्दी होती है। चूड़ीदार तंग पैजामा, तंग कुर्ता और लम्बी चोटियाँ। बहुत सी स्त्रियाँ तो चोटी बढ़ाने के लिए घोड़ों के बाल लपेट लेती थीं। पर अब इन बातों का रिवाज़ उठ गया है। अब वे योरोपियन पोशाक को अपना रही हैं। और सामाजिक कुरीतियों के प्रति घृणा का भाव भी उनमें पैदा हो गया है। अनेक स्त्री संस्थाओं ने बहु-विवाह, पर्दा, दहेज आदि के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये हैं। अनेक ने अपने पतिओं से बग़ावत की है और अब वे उस सड़क पर आ गई हैं जिसके ऊपर से समस्त संसार का सभ्य स्त्री समाज गुज़र रहा है। संसार कुछ दिन और उनकी भौंहें और शरबत का गीत गा ले।

श्रीनाथसिंह



पुरानी डायरी के कुछ पृष्ठ

सन् १८३८ ईस्वी के अक्टूबर महीने में मैंने तबरेज़ से जिलान के लिये प्रस्थान किया। अपनी इस यात्रा के लिए फ़ारसी खुर्दिस्तान और खामसह होकर जाने वाले लम्बे और टेढ़े मार्ग का मैंने अवलम्बन किया। इस यात्रा द्वारा मैं मिडिया की प्राचीन राजधानी एकबतन नगर का पता लगाना चाहता था। इस नगर की प्राचीन सत्ता में मुझे पूरा विश्वास था। परन्तु दक्षिणी अज़रबैज़ान के भौगोलिक ज्ञान के बिना यह निश्चित करना असम्भव था कि उस प्राचीनतम नगर की वर्तमान स्थिति कहाँ पर है। घोड़े पर सात मील की यात्रा करके मैं अक्टूबर १६ को तबरेज़ से सिरदारूद पहुँचा जो तबरेज़ के दक्षिण पश्चिमी कोने पर स्थित है, तबरेज़ से २ मील चलने के बाद मुझे रास्ते में लाला नामक छोटा गाँव मिला जिसमें गरमी की ऋतु में रहने के लिए एक मकान बना था। तबरेज़ निवासी गरमी के दिनों में यहीं आश्रय ग्रहण करते हैं, और नाना प्रकार के नाच गानों में अपना समय व्यतीत करते हैं। यहाँ एक गरम पानी का चश्मा भी है, जिसका पानी औषधि की भाँति गुणकारक है। इस चश्मे के आसपास की भूमि ज़मीन की सतह से ऊँची है और उस पर चढ़ कर देखने से तबरेज़ पूरी छटा भली भाँति दृष्टि गोचर हो जाती है। कम से कम तीस

मील के बगीचों से घिरा हुआ तबरेज़ नगर काफी विस्तृत दिखलाई पड़ता है। तबरेज़ नगर की दक्षिणी सीमा बनाने वाली नीची पहाड़ियों के बाईं ओर तबरेज़ से सिरदारूद जाने वाला मार्ग है और उनके दाहिने ओर एक विस्तृत मैदान है जो खारी झील के किनारे तक फैला हुआ है। सिरदारूद एक सम्पन्न स्थान है, जो सिरदारूद नामक नदी के किनारे ही बसा है। यह चारों ओर से बड़े सुन्दर और विस्तृत बगीचों से घिरा हुआ है।

सिरदारूद से चलकर बाईस मील की यात्रा करने के बाद मैं गोगान नामक गांव में ठहरा, मेरे मार्ग के समीप वाले मैदान में खेती खूब होती है, और उसके दोनों तरफ छोटे-छोटे अनेकों गांव बसे हैं। इनमें से एक का नाम खुसरूशाह है जो सिरदारूद से करीब ८ मील के फासले पर स्थित है। यह काफी बड़ा है, और यहां की जलवायु भी नदी के तट पर स्थित अनेक अन्य स्थानों की भांति बड़ी ही मनोरम है। उपज भी अच्छी होती है, जहां तक दृष्टि जाती है, खुसरोशाह की घाटी, बगीचों और उपवनों की एक सुन्दर सीढ़ी सी दीख पड़ती है। प्रकृति-सौन्दर्य्य इतना चित्ताकर्षक है कि फ़ारसी कवियों ने फारस के अन्य 'चार स्वर्गों' के साथ इसे भी स्थान दिया है। प्राचीन काल में यह बहुत सम्पन्न और विख्यात नगर था सिरदारूद से बारह मील पर इलखोज़ी नामक ग्राम है। यहां से एक मील के बाद रास्ता, छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में होकर गुजरता है। आगे दक्षिण पश्चिम में गोगान गांव तक चपटा और खुला हुआ चमन है, जो नौ मील तक फैला हुआ है गोगान नामक गाव दकरगान के अधीन है, जिससे पांच मील की दूरी पर वह स्थित है। इस प्रदेश के अन्य स्थानों की भांति यह भी बगीचों से घिरा हुआ है, और गांव के मकानों में पहुँचने के लिए यात्री को इन बगीचों से होकर करीब नौ मील ऊपर चढ़ना पड़ता है। बाढ़ से इसे बड़ा नुकसान हुआ है पिछले दो वर्षों में इस गांव के बीच से बहने वाली नदी में दो बार बाढ़ आ चुकी है। परन्तु फिर भी गांव पुनः समृद्ध हो चला है। इसका मुख्य कारण है, यहां के बगीचों की उपज। फलों की खेती के लिए यहां की मिट्टी बड़ी ही उत्तम और उपजाऊ है। यहां की जनता खूब मन लगा कर फलों की

खेती करती है। मुख्य फल सेब, अंगूर, अनार, बेर और नाना प्रकार की झरबेरियां हैं। तबरेज़ को यहां और देकरगान के अधीन और गावों से फल और लकड़ी जाती है। इस ज़िले के लगभग सभी बगीचे तबरेज़ के रहने वाले महाजन और बनियों के कब्ज़े में हैं—वे ही इनके मालिक हैं और गांव वाले खेतों में या तो मज़दूरी या उपज का पांचवां हिस्सा लेकर काम करते हैं। अठारह वर्गगज़ चौड़े खेत के लिए उन्हें सरकार को ६ शिलिंग (लगभग ४ रु०) मालगुज़ारी देनी पड़ती है। इन पर अनाज की खेती करने वाले किसानों की अपेक्षा अधिक टैक्स भी लगता है। कारण यह है कि फलों का व्यापार अधिक लाभ प्रद होता है। गोगान स्वतः तो प्राचीन ग्राम नहीं है परन्तु देकरगान जो ज़िले का मुख्य नगर है बड़ा प्राचीन है। गोगान से एक मील चलने के बाद सड़क पहाड़ियों की श्रेणी में घुस जाती है, और तीन मील चलने के बाद फिर उस राज मार्ग से मिल जाती है, जो कि लूंजी बुरनी के पास बाईं ओर मुड़ गया है पहाड़ी में लगभग ६ मील चलने के पश्चात् यात्री संगमरमर की खानों के पास पहुँच जाता है। ये सड़क के बाईं ओर करीब १०० गज़ की दूरी पर स्थित है, ये खाने भूगर्भ विद्या विशारदों के अध्ययन को वस्तु हैं, ये लगभग आध मील के घेरे में फैली हुई हैं। इनका आकार छोटा और विषम है जिनकी गहराई दस या बारह फुट से अधिक नहीं मालुम पड़तो है। इन गड्ढों में से सदैव, छाटो-छोटी पानी की धारायें ऊपर को उबला सी करती हैं। गैस के निकल जाने के बाद चूने के कर्बनेत की एक तह सी बच जाती है जिससे चश्मों के किनारे लगभग एक फुट ज़मीन की सतह से ऊपर उठ जाता है।

संगमरमर की इस खान में आज कल कोई काम नहीं हो रहा था लेकिन मैंने पत्थर के कटे हुये हज़ारों टुकड़े देखे जो वहां से हटाये जाने वाले थे। यहां का संगमरमर लगभग पारदर्शक होता है और खिड़कियां बनाने के काम में आता है। मकान का फर्श भी बहुधा इससे जड़ा जाता है। तेहरान के दीवानखाना का प्रसिद्ध सिंहासन भी शायद इसा से बना है। यहां से सड़क छोटे मैदान में होती हुई सीधी दक्षिण लगभग दो मील तक जाती है फिर नाची पहाड़ियों में घुस जाती है, आठ मील के बाद

यह पुनः उस बड़े मैदान से जा मिलती है जो झील के दक्षिणी-पूर्वी किनारे पर आबाद है। इस स्थान पर फिर सड़कों के दो भाग हो जाते हैं एक, कारवा से जाने का बड़ा मार्ग है जो पहाड़ियों से आता है, झील और पहाड़ियों के बीच का यह भाग बहुत उपजाऊ है और गांवों से ढका हुआ है पानी बहुतायत से बरसता है और जलवायु इतनी अच्छी है कि पूरे फ़ारस देश में ऐसे स्थान कम हैं। मुख्य स्थान शीराज़ हैं कभी तो पूरे ज़िलों को भी शीराज के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह प्रदेश शाही जायदाद है। इस प्रदेश में केवल शीशवां ही इस जागीर से बरी है। यह मालिक कासिम मिरज़ा की जो भूतपूर्व फ़ारस के बादशाह के राजकुमार हैं, सम्पत्ति है, जिन्होंने यहां पर योरोपीय ढङ्ग का बङ्गला बनवा रक्खा है। राजकुमार पश्चिमी सभ्यता के पुजारी हैं और देखने से शीशवां एक पाश्चात्य नगर सा दिखलाई पड़ता है। उनकी जागीर से उन्हें लगभग दस हज़ार से लेकर बारह हज़ार पौंड तक की आमदनी हो जाती है। उन्हें जहाज़ बनवाने का खास व्यसन है। उरमिया की झील उनके बङ्गले के एक मील की दूरी पर है। इस झील पर भी उन्हीं का अनन्य अधिकार है। पुराने ढङ्ग की नावों को तुड़वा कर उन्होंने नये ढङ्ग की नावें, रूस के कारीगरों से बनवाली हैं। उन्होंने बड़े परिश्रम के पश्चात् एक बड़ा जहाज़ भी बनवा लिया है जो पालों से चलता है। परन्तु उनकी प्रबल इच्छा है कि वे इस झील में स्टीमर में घूमें। पर इनमें व्यसन उरमिया झील के भौगोलिक वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पाठक गण उससे भली भांति परिचित हैं। इसकी अधिक से अधिक गहराई आठ गज़ है। इसके पानी में नमक का हिस्सा बहुत है। जिससे पानी का वज़न बहुत भारी हो जाता है। और इस कारण आंधियों का इस पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। आंधी का प्रचंड झोका भी पानी को धरातल से कुछ ही ऊँचा उठा सकता है। लोगों का कथन है कि झील की लम्बाई चौड़ाई बढ़ गई है जो उथले किनारे पहिले स्थल थे अब वे जल के भीतर हैं इसका प्रधान कारण जागातू और तताऊ नामक नदियों का झील में गिरना है जो पहले मियान दाग के मैदान को सींचने के काम में लाई जाती थीं। झील

में छोटे-छोटे कई द्वीप भी हैं परन्तु अब तक वे बिलकुल सूने पड़े थे अभी हाल में मालिक कासिम मिरज़ा ने उनमें से सबसे बड़े को आबाद करना प्रारम्भ कर दिया है कि जिसका नाम उन्होंने 'मराले' रक्खा है (इस फ़ारसी शब्द का अर्थ जङ्गली हिरन है) क्योंकि सर्व प्रथम राजकुमार ने इस उजाड़ द्वीप में मराल का एक जोड़ा देखा था जो इस समय उस द्वीप के एक मात्र निवासी थे। आज मैं शीशवां ही में रह गया मुझे यहां रह कर ऐसा आभास हुआ कि एक मात्र सामाजिक उन्नति से ही मनुष्य की नैतिक उन्नति हो सकती है। शीशवां से तेरह मील का मार्ग समाप्त कर मैं बिनाब पहुँचा जो शीशवां से दक्षिण-पूर्व को है। अजब शहर और खानियान नामक गांव शिशवां से क्रमशः आधा और डेढ़ मील की दूरी पर रास्ते के बाईं ओर छूट जाते हैं। खानियान खलीफा के विश्राम का खास स्थान है। शीशवां के दो मील की दूरी पर मैंने दज़िजयारूद नामक नदी को पार किया दज़िजयारूद जिस मैदान से होकर बहती है उसे किसान इसी से छोटी छोटी नहर निकाल कर सींचते हैं। इस मैदान की खास पैदावार कपास, गेहूं, जौ और चावल है। नदी के दो मील के बाद सड़क उपजाऊ मैदान को छोड़ देती है और एक ऊसर प्रदेश से होकर जाती है जो पहाड़ियों और उरमिया झील के बीच में स्थित है इस उजाड़ प्रदेश को पार कर यह नमक के एक दलदल से होकर जाती है। जब झील का पानी बहुत अधिक बढ़ जाता है तो पानी दलदल के ऊपर आ जाता है। इस दलदल के समीप पहुंच कर मारगाह जाने वाला मार्ग बाईं ओर मुड़ जाता है और पहाड़ियों के दामन से होता हुआ प्रसिद्ध सूर्य्य कन्दराओं के नीचे होकर गुजरता है। बिनाब जाने के रास्ते में नमक के दलदल से गुरजता है इसलिए बरसात के दिनोंमें इनका पार करना असम्भव हो जाता है। बिनाब एक बड़ा नगर है जिसमें लगभग १५०० मकान हैं। चारों तरफ यह बगीचों और अंगूर की बेलों से घिरा है। आबोहवा के मातदिल होने से यहाँ अंगूर बहुतायत से होते हैं। धरातल के नीचे थोड़े ही दूर पर पानी अधिकता से इकट्ठा रहता है। अतएव अंगूरों के लिए काफी मात्रा में जल मिल जाता है। अंगूर तबरेज़ को भेजे जाते हैं।

पानी की धारायें शहर के अधिकांश मार्गों से होकर बहती हैं। अतएव फारस के साफ़ शहरों में बिनाब का दूसरा नम्बर है। बिनाब मरगाह के ही आधीन है और लगभग चार हज़ार पौंड लगान सरकार को देता है अज़र बैज़ान की सेना में इसे ४०० आदमी का एक रिसाला भी देना पड़ता है। सोफीचई नामक नदी बगीचों की दक्षिणी सीमा पर बहती है जिससे अनेको नहर निकाल कर नगर और अंगूर को सींचने के काम के लिए पानी निकाला जाता है। 'बिनाब' प्राचीन नगर नहीं है। बिनाब से चलकर २० मील की सफर के बाद मैं चिलिक नामक गांव में पहुंचा जो मालिक कासिम के कब्जे में ताताऊ नदी पर बसा हुआ है। बिनाब के बगीचों को पार करके मैंने सोफीचई नदी को एक अच्छे पुल से पार किया और दो मील तक एक उपजाऊ मैदान में चलने के बाद उस पहाड़ी के पास पहुंचा जो कि विस्तृत मियान दाब मैदान के उत्तरी सीमा पर स्थित है। यहां पर हमने आम रास्ता छोड़ दिया और एक पगडंडी पकड़ कर जो वहां से दक्षिण-पश्चिम की ओर जाती है, चिलिक गया। ५ मील और चलने के बाद मैंने उथली नदी (जगातू) को पार किया, जिसमें इस समय केवल एक फुट गहरा पानी था। और यहाँ से ३ मील और चलकर कर्माचक नामक गांव में कलेवा करने के लिए घोड़े से उतर पड़ा। मियान दाब वास्तव में जो मियान दो आब का अपभ्रंश है जगातू और ताताऊ नदियों के बीच में बसे हुये प्रदेश को कहते हैं लेकिन मियान दाव में वास्तव में इस प्रदेश के अलावा जगातू नदी के उत्तर और ताताऊ नदी के दक्षिण के प्रदेश भी सम्मिलित हैं। इस प्रदेश की मिट्टी हर जगह उपजाऊ है। लेकिन मैदान के उत्तरी भाग में ही जहां पहाड़ से छोटी मोटी अनेक नदियां निकलती हैं और जहां उपरोक्त दोनों नदियों से भी नहर निकाल कर सिंचाई हो सकती है खेती होती है। लेकिन ज्यों ज्यों यह मैदान झील की तरफ ढालू होता जाता है त्यों त्यों नदियां तेज़ और पतली होती जाती है और सिंचाई के काम की बिलकुल नहीं रह जाती हैं। अतएव झील के समीप वाला ढालू मैदान उजाड़ रह जाता है। उसमें खेती नहीं हो सकती। वह केवल

चरागाहों के काम में आसकता है। दोनों नदियों के सामने एक बड़ा बांध बना कर नदियों के पानी को ऊपर उठाकर उसे नहर में परिणित कर सकते हैं। पर यह काम अधिक खर्चीला है। कमाचिक से आठ मील चलकर मैं ताताऊ नदी के किनारे पहुंचा और उसको एक उथले स्थान पर पार करके चिलिक गांव में पहुँच गया। चिलिक भी मिरज़ा कासिम के ही आधीन है और इस समय उन्नत दशा में है। चिलिक में आठ घंटा विश्राम करने के पश्चात् ही मैं एक प्राचीन शिला-लेख की तलाश में चल पड़ा जो पास ही था और जिसके अक्षर, बाण के शिर के आकार के हैं जिसे ताशतपह का शिलालेख कहते हैं, शिलालेख की नकल करके मैं शाम तक पुनः चिलिक लौट आया। एक दूसरे शिलालेख की नकल करने के लिए मेरा उशनेई जाना आवश्यक था। चिलिक से चलते समय मैंने अपने साथ एक पथप्रदर्शक लिया। दस मील तक दक्षिण-पश्चिम की ओर मुझे कियानदाव का मैदान पार करना पड़ा। मैदान सरकंडों और बड़ी बड़ी घास से आच्छादित था जिनको चीरकर आगे चलने में भी काफी कठिनाई उठानी पड़ती थी। बसन्तु ऋतु में यह मैदान दलदल में परिणत हो जाता है। मियानदाव के मैदान को पार कर हम लोगों को छोटी पहाड़ियों में घुसना पड़ा जो झील तक चली गई हैं।

यहां की भूमि काफी उपजाऊ है। गावा में मिकारी नामी कबीले के लोग रहते हैं। पहाड़ियों में एक मील चलने के बाद हम लोग सोलदुज़ के मैदान में पहुंच गये। मैदान में आकर हम लोग पश्चिम-दक्षिण की ओर मुड़ गये, और तीन घंटे की यात्रा के बाद गदर नदी के किनारे बसे हुये अलीबगली नामक गांव में जाकर ठहर गये। अजरबैजान के नकशे में हम लोग सोलदुज़ नाम का एक शहर देखते हैं पर यह बात बिलकुल ग़लत है। सोलदुज़ वास्तव में पूरे ज़िले का नाम है, जिसका मैदान पूर्व-पश्चिम, झील के समानान्तर लगभग २० मील तक फैला हुआ है मैदान की चौड़ाई कुल ५ मील है। सोलदुज़ का यह मैदान अजर-बैजान का सबसे अधिक उपजाऊ मैदान है। अगर इसे रे फ़ारस का

सब से अच्छा और उपजाऊ भाग कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस मैदान के बीच में गदर नाम की नदी बहती है और इसमें से अपनी इच्छानुसार नहर निकालकर किसान खेतों को सींचते हैं।

आज कल यह 'कारा पापा' नामी कबीले के कब्जे में है। आखिरी रूसी लड़ाई के समय में अब्बास मिरज़ा ने इस ज़िले को इन्हें जागीर की तौर पर दे दिया था जिसके बदले में इन्हें फ़ारस की सरकार को ४०० घुड़सवारों का रिसाला देना पड़ता है। कारापापा लोग बड़े अच्छे घुड़-सवार और लड़ाके हैं। कारापापा उस समय कुल ८०० कुटुम्ब के साथ बसे थे। सोलदुज़ में उस समय करीब ५००० घर के मिकरी मेंमिश और ज़रज़ा नामी कबीले की किसान रिआया आबाद थी। इस समय कारा बड़े ही उन्नति दशा में हैं और फ़ारस का और कोई दूसरा कबीला इतना पापा सम्पन्न नहीं है। परन्तु यहाँ के किसानों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ है। वे अब भी अपढ़ और ग़रीब हैं। और भारतीय कृषकों की भाँति "कोउ नृप होइ हमें का हानी। चेरी छोड़ि न होवै रानी" 'वाली कहावत को अक्षरशः चरितार्थ करते हैं। दिनरात घोर परिश्रम करने के बाद भी कठिनता से वे अपने बच्चों का पेट भर सकते हैं। चिथड़े से ढके हुये इन ग़रीब किसानों की दशा बड़ी दुखदाई है वास्तव में सारे फ़ारस के किसानों पर टैक्स का इतना बोझा लाद दिया जाता है कि वे जीवन पथ को बड़ी कठिनाई से पारकर सकते हैं। कुछ भी हो एक यात्री को सोलदुज़ का ज़िला बड़ा उन्नत दिखलाई पड़ता है। धान के लहराते हुये हरे खेतों, सुन्दर चरागाहों और कार्य्य-ग्रस्त किसानों को देखकर यह फ़ारस का सब से सम्मृद्धि प्रान्त दीख पड़ता है। इसकी राजधानी नाखुदा है। सारे प्रान्त में लगभग ६० गाँव हैं जिनमें से प्रत्येक पड़ोस के ज़िले के गाँवो से दे० फ० में कई गुने अधिक बढ़े हैं।

आज मैं अलीबेगली से उशनेई को रवाना हुआ। १० मील तक रास्ता उस पहाड़ी के किनारे किनारे हो कर जाता है जो सोलदुज़ मैदान की दक्षिणी सीमा बनाती है। १० मील चलने के पश्चात् एक टीले पर चढ़ कर देखने से उशनेई का पूरा दृश्य भली भाँति दीख पड़ता है। यह

देखने से एक बड़ी ही नेत्र—रंजक छटा दिखलाई पड़ती है। उशनेई प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर खुर्दिस्तान पर्वत जिसके सामने अन्य पहाड़ियाँ तुच्छ जान पड़ती हैं, छाती फुलाये खड़ा है। पर्वत की हिमाच्छादित चोटियाँ स्पष्टतः दृष्टि गोचर हो जाती हैं। और इसके चरणों में उशनेई का सुन्दर छोटा नगर अपनी निकटवर्ती वाटिकाओं से क्रीड़ा करता हुआ मन्द मन्द मुसकान करता रहता है। यहाँ से अभी नगर १० मील दूर था। यहाँ से उत्तर की ओर मैदान में होता हुआ जब मैं नगर को चला तो मुझे साफ़ मालूम हो गया कि अब मैं खुर्दिस्तान प्रदेश में भ्रमण कर रहा हूँ। खुर्दिस्तान निवासी तुर्कों की रहन सहन फ़ारसी किसानो से भिन्न है। तुर्क पुराने फेल्ट और चमड़े की टोपी पहिनते हैं, खुर्द रंगीन धारीदार पगड़ी बाँधते हैं। तुर्क फरसा बांधते हैं खुर्द तलवार लगाते हैं। अगर घोड़े पर सवार हों तो बरछा लिए रहते हैं। अज़रबैजान के तुर्क देखने में सुस्त और मनहूस दिखलाई पड़ते हैं।

खुर्द तेज़ फुर्तीले और प्रसन्न चित रहते हैं। उशनेई पहुँच कर मैं वहां के गवर्नर गफूर खां से न मिल सका पर उनके परिवार ने मेरा समुचित आदर किया।

उशनेई प्रान्त में यूरोपियन बहुत कम आये हैं। यह खुर्दिस्तान पर्वत के निचले भाग में बसा हुआ चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा हुआ यह एक अच्छा उपजाऊ प्रान्त है। इसके मैदान के ठीक बीचो बीच होकर गदर नामक नदी बहती है। इसके अतिरिक्त पानी की अन्य और भी छोटी छोटी धारायें हैं। जिनसे सिंचाई का काम होता है। मैदान की बनावट ऊँची नीची है इस प्रान्त में लगभग कुल चालीस गांव हैं जिनके निवासी खुर्द हैं। प्लेग आने के पहिले इनकी कुल ४००० या ५००० के लगभग घरों की संख्या थी पर अब कुल ८०० रह गई है।

उशनेई, उरमियां सरकार के अधीन है और करीब ४००० पौंड सरकारी माल गुज़ारी सरकार को देते हैं। ज़रज़ाज़ अच्छे लड़ाकू हैं और खुर्दिस्तान पर्वत के सीमान्त प्रदेश में रहनेवाली नगली जातिओं से हमेशा लड़ा करते हैं। उशनेई, अज़रबैजान का एक पुराना ईसाई

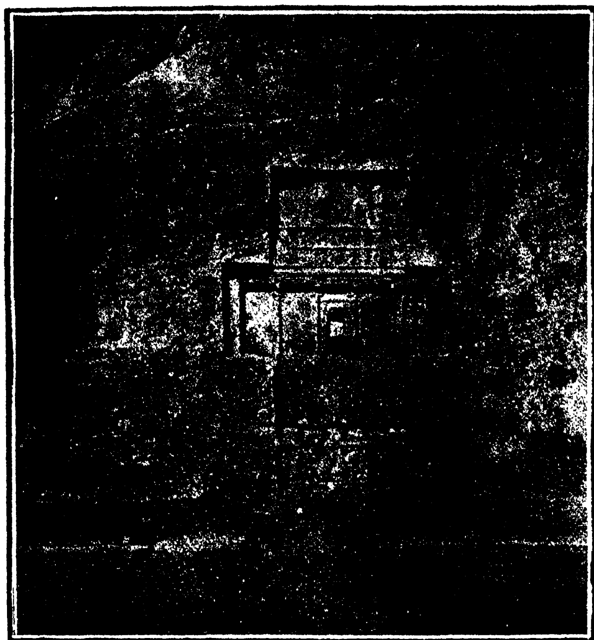
उपनिवेश है। नेस्टोरियन गिर्जा के पादड़ियों का प्रधान अड्डा है। खुर्दों का विश्वास है कि उशनेई ही प्राचीन प्रसिद्ध शारे सबा है। जहां से सबा की महारानी पूर्व के प्रसिद्ध सम्राट सुलेमान से मिलने के लिए तख्त सुलेमान को गई थी। उनका कहना है कि उस समय नगर का क्षेत्रफल अधिक बड़ा था। लेकिन प्राचीन भूगोल में इस नगर का वर्णन १४ वीं शताब्दी के पहिले कहीं भी नहीं मिलता है।

उशनेई नगर छोड़ कर आज केवल ७ मील का ही सफ़र कर मैं उस स्थान पर पहुँचा जहाँ गफ़ूर ख़ाँ किला बनवा रहे थे यहीं से प्रसिद्ध सड़क खुर्दिस्तान के मैदान को जाती है। यह स्थान उशनेई से दक्षिण-पश्चिम की ओर है तीन मील जाने के बाद मैं कलेवा करने के लिए सिरगन नामक गांव में घोड़े से उतरा था, जो कि टूटी फूटी झोपड़ियों का एक छोटा सा समूह है। मेरा विश्वास है कि यह वही स्थान है जिसे थियोफिलैस नामी इतिहास रचियता ने सरगना नाम से लिखा है और जहां ख़ूसरो परवेज़ अपनी रोम की सहयोगी सेना के साथ अनीसीन के देश को पार करने के पश्चात् विश्राम करने के लिए ठहरा था। सिरगन से दो मील चल कर मैंने गदर नदी को पार किया। जो यहां पानी की एक उथली तेज़ धार मात्र रह जाती है। यहां से दो मील की चढ़ाई के पश्चात् मैं गफ़ूर ख़ां के किले पर पहुँच गया। यहां के जरज़ाज़ नामी कबीलों से प्राय: अन्य सभी कबीलों से दुश्मनी है। बिल्वा तथा रोअन्दीज नामी कबीलों के हमले से बचाने के लिए गफ़ूर ख़ां ने इस किले को बनवाना प्रारम्भ किया है। मैसिम ख़राब हो जाने से दो दिन तक मैं किले में ही पड़ा रहा। तीसरे दिन आसमान साफ़ होने पर मैंने प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। ऊँचाई अधिक होने से वहां जाने का सब से उत्तम समय अक्टूबर के पहिले पक्ष और मार्च के अन्तिम पक्ष में ही है। मैं लगभग १० दिन तक देर करके पहुंचा था अतएव बर्फ काफ़ी मात्रा में पड़नी आरम्भ हो गई थी। परन्तु शिलालेख को देखने की प्रबल इच्छा को दबाना असम्भव था और मैंने दो और पथप्रदर्शक घुड़सवारों को साथ लेकर प्रस्थान कर

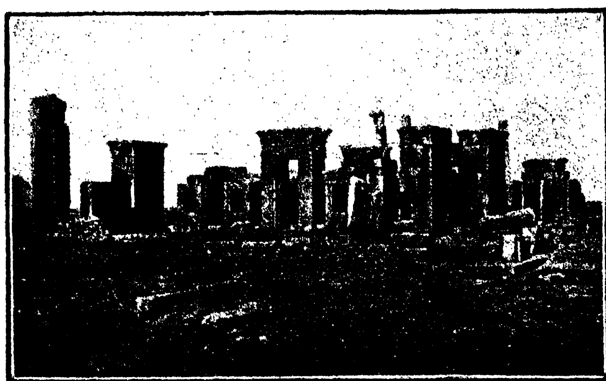
दिया। ५ मील तक चढ़ाई आसान थी परन्तु ५ मील के बाद बर्फ से गुजरना पड़ा। कहीं कहीं तो बरफ़ ने मार्ग को इतना आकीर्ण कर लिया था कि हम लोग उसमें फंसते फंसते बचे। समयानुसार पैदल और घोड़े की पीठ पर ज्यों त्यों चढ़कर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो कुछ खुला था। और वहां से तेज़ी से चलकर पहाड़ की चोटी पर ऊंचे लक्ष्य स्थान पर पहुँच गये। उशनेई से यह स्थान दक्षिण-पश्चिम में था। यहां पर पहिली बार मैंने प्रसिद्ध केलीशिन (नील स्तम्भ) का दर्शन किया जो दर्रे के सबसे ऊंचे भाग पर स्थित है। इस दर्रे को पार करना कठिन है इसका कारण बर्फ की गहराई नहीं है। परन्तु यहां आंधी के बड़े भयंकर और खूंखार झोंके सर्वदा चला करते हैं। परन्तु केलीशिन नामी दर्रा ही फ़ारस और रोआन्दिज़ के बीच में गमनागमन एकमात्र मार्ग है। अतएव यात्रियों को प्रत्येक ऋतुओं में इससे होकर जाना ही पड़ता है। परन्तु फलतः हर साल कितने ही अभागे इसकी बर्फीली कब्र में सदैव के लिए सो जाते हैं। केलीशिन नीले पत्थरों का एक स्तम्भ है जिसकी लम्बाई चौड़ाई और मोटाई क्रमशः ६ फुट, २ फुट और १ फुट है। इसका सिरा और कोने गोल हैं। ये स्तम्भ एक दूसरे (५ फुट लम्बे चौड़े और ४ फुट गहरे) पत्थर के थाले में धसा दिये गये हैं। इसके चौड़े सिरे पर पूर्व की ओर कुल एक तालीस पङ्क्तियों की एक लिपि है। इनके अक्षर बाण की नोक के आकार के हैं। मैं लिपि की नक़ल करने को तयार होकर आया था, परन्तु अक्षरों के बुरी तरह लुप्त हो जाने के कारण मुझे निराश हो जाना पड़ा। अक्षर बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गये थे और बड़ी कठिनता से मैंने केवल कुछ अक्षरों को इस-लिए नक़ल कर लिया कि इन अक्षरों के समय का पता लग सके।

हवा धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ रही थी अतएव घबड़ा कर हम लोग बड़ी तेज़ी से घर की तरफ़ भागे और आंधी आने के पहले बरफ़ से बाहर आ गये।

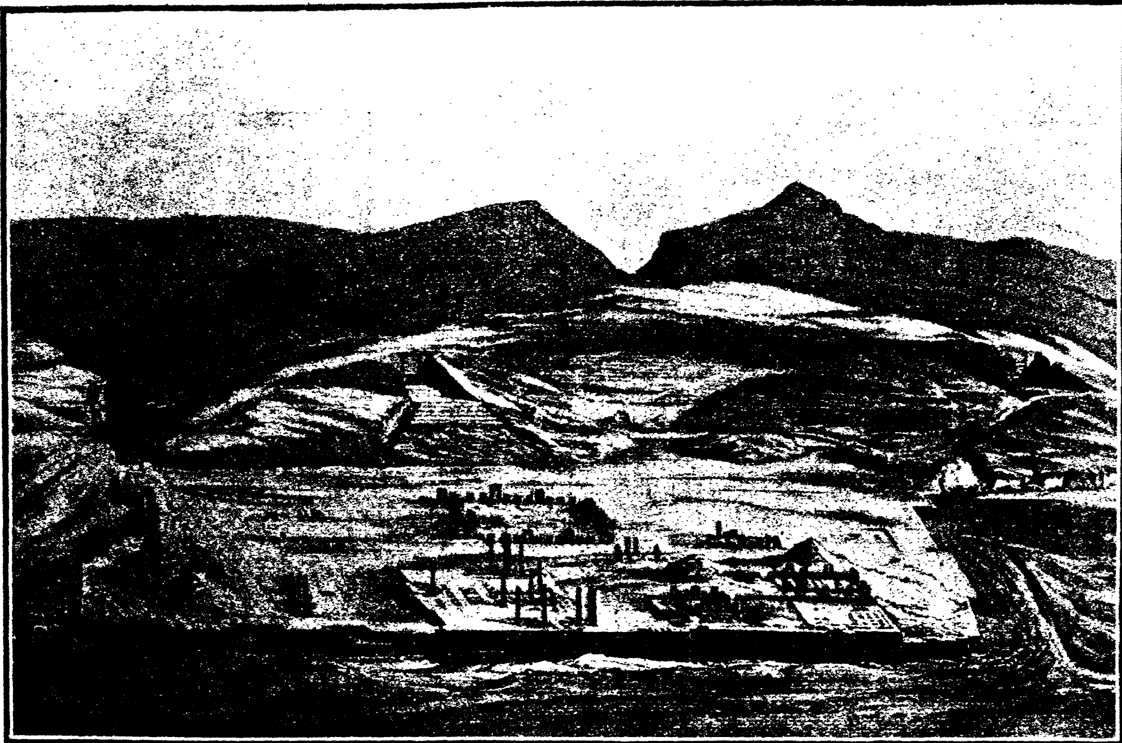
इस केली शिन के विषय में यहां पाठकों को कुछ थोड़ा बतला देना असामयिक न होगा। अभी मैं जिस दर्रे पर गया था। उससे लगभग ५ घंटे के रास्ते पर इसी प्रकार का एक और दूसरा स्तम्भ है। इसको भी केली



नखसी रुस्तम



पार्सीपॉलिसका दरायुसका प्रासाद



पार्सीपॉलिसके ध्वंसावशेषका दृश्य

शिन ही कहते हैं। सुनने में आया है कि इस उपरोक्त स्तम्भ से वह अच्छी दशा में है। इन दोनों प्राचीन एतिहासिक स्तम्भों का एक ख़ास भौगोलिक अर्थ है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि ये दोनों स्तम्भ प्राचीन काल के एक मुख्य मार्ग की सूचना देते हैं। यह मार्ग प्राचीन काल के दो साम्राज्यों को मिलाने के लिए बनाया गया होगा। और ये साम्राज्य अवश्य निनवा और एकवतन रहे होंगे। इस मार्ग की सत्ता का प्राचीन इतिहास में भी पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है और इस प्रमाण की पुष्टि वर्तमान प्रयोग से भी हो जाती है। आज कल के ईसाई पादरी उशनिया जाते समय इसी मार्ग का अवलम्बन करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि १३ वीं शताब्दी में असिरिया और अज़रबैजान के गिर्जों में आना जाना इसी मार्ग से हुआ है बैजन्टाइन के इतिहास लेखकों के वृत्तान्त में भी हेराक्लियस और खुसरू परवेज़, निनवा से अजर बैजान जाते समय इसी मार्ग से होकर गये थे। इससे भी प्राचीनतर काल में ज़ेनो.फ.न ने इसी मार्ग का वर्णन किया होगा जब वह कारडुशियन पर्वत के किनारे किनारे पूर्व की दिशा एक बतन को जा रहा था। सम्भवत: इस समय से थोड़े पहिले ही इस मार्ग का निर्माण भी हुआ होगा जब कि निनवा साम्राज्य के नाश होने पर मीडिया साम्राज्य की नींव डाली गई थी। समीपस्थ केली शिन का स्तम्भ लेख भी मीडियन लिपि में है, जो इस बात का ज़बरदस्त प्रमाण है।

स्तम्भ की आकृति भी कम रहस्यमय नहीं है। थाले में धसाये हुये ये स्तम्भ दो महान प्राचीन धर्म लिङ्गम् और योनि के आदर्शों की सूचना देते है। इस विचार की पुष्टि इस बात से और भी हो जाती है कि स्तम्भ के पूर्व दिशा में ही अक्षर खोदे गये हैं। धार्मिक प्रचार के लिए ऐसे स्तम्भ को व्यौहार में लाना तो प्राचीन प्रथा ही थी। रोअन्दिज़ के मीर के जीवनकाल में उशनेई से दजला नदी तक का प्रदेश उसी के अधिकार में था जिसने रोअन्दिज़ प्रान्त में प्रचार पाँच सौ वर्ष से अधिक कर लिया था। और तब से यह बराबर उसी के कब्जे में था। रोअन्दिज़ के निवासी रोअन्दिज़ हैं जिन्हें सोहरान कबीले का दास बनकर रहना पड़ता है। रोअन्दिज़ की राजधानी रोअन्दिज़ है जो बड़ी ज़ाब के दक्षिणी किनारे

पर आबाद है इसमें करीब २००० घर हैं। ज़ाब नदी यहां पर बहुत पतली और तेज़ है।

सिद्क एक पहाड़ी प्रान्त है जो रोअन्दिज़ और उशनेई के बीच में स्थित है। इसमें करीब चालीस छोटे छोटे गांव हैं जो पहाड़ी की घाटियों में फैले हैं उशनेई के पश्चिम में पर्वत के पार कनिरश नाम का प्रान्त है जो सिद्क के उत्तरी सीमापर स्थित है। इसमें बरदुस्त नाम के कबीले रहते हैं। इसी प्रान्त में बल्कि नाम के कबीले रहते हैं जिनका खुर्दिस्तान के प्राचीन या मध्य कालीन इतिहास में कोई वर्णन नहीं है इनकी कुटुम्ब संख्या लगभग दस हज़ार हैं। इस प्रान्त की राजधानी रयात है। बलिकियों का कबीला बड़ा बहादुर है ये अच्छे घुड़सवार हैं।

रोअन्दिज़ के मीर के शासन च्युत हो जाने के पश्चात् से रोअन्दिज़ नाम के कबीले वाल्कीज़ के साथ हस्तक्षेप करने लगे हैं परन्तु ये स्वतंत्र प्रकृति के हैं और किसी के भी शासन में रहना स्वीकार नहीं करते। रयात देखने की मेरी प्रबल आकांक्षा थी परन्तु गफूर खाँ के बिना वहां जाना आपत्तियों से खाली नहीं था।

खुर्दिस्तान का भूगोल और प्राचीन इतिहास अब भी स्पष्ट नहीं है खुर्दिस्तान में यात्रा करना आसान नहीं है। देश पहाड़ी है और निवासी जगंली हैं। यात्रा करने का सब से आसान तरीक़ा यह है कि पहिले एक सरहद्दी सरदार से मिलें पारसी अथवा तुर्की सरकार के अधीन होने के कारण ये सरदार उन योरोपियन यात्रियों की रक्षा करना स्वीकार करते हैं जिनको सरकार उनकी संरक्षता में सौंप देती है। एक सरहद्दी सरदार का दूसरे सरहद्दी सरदार से सम्बन्ध होने के कारण वह उस यात्री की संरक्षता का भार अपने पड़ोसी के ऊपर छोड़ देता है और ज़मानत के तौर पर उस कबीले के कुछ सरदारों को अपने पास रोकलेता है इसी प्रकार वह यात्री पूरे खुर्दिस्तान में सलामती से घूम सकता है।

आज मेरा मार्ग उस पहाड़ी के बीच होकर गु,जरा जो केलीशिन नाम दर्रे से अलग हुई थी। और दक्षिण-पूर्व की दिशा में

८ मील चलने के बाद एक दर्रे की चोटी पर पहुँचा जहाँ से सोदज बालक की छोटी घाटी साफ दिखलाई पड़ती है वहां से सोदज़बालक नाम नगर का बड़ा अच्छा दृश्य दिखलाई पड़ता था। वह वहां से केवल २½ मील पर था मुहम्मद शाह से चलने के बाद तुरन्त ही मैं मिकरी नामी कबीले के देश में पहुँच गया जिसकी राजधानी सोदज बालक है। यह पहाड़ी की घाटी में स्थित है और एक वर्तमान उपनिवेश है जिसे आबाद हुये सौ वर्ष से ज़्यादा नहीं हुये। इसमें १०० घर यहूदी, कुछ इसाई और शेष मिकरी खुर्द हैं। जिस नदी के तट पर यह शहर बसा है उसके बायें किनारे पर गुलाब के फूलों के खेत और बगीचे हैं अंगूर की भी यहां खेती होती है। जङ्गली फल बहुतायत से पैदा होते हैं।

तबरेज़ से बग़दाद जाने वाले, कांरवा के जाने का एक बड़ा मार्ग सोदज बालक से होकर गुज़रता है अतएव यह काफ़ी कारबारी शहर है। मैं सोदज बालक में दो दिन तक ठहर गया। यहाँ मैंने एक नगर का अजीब वृतान्त सुना जो लहियान के ज़िले में स्थित है इसका नाम खोरंज है। मुझे यह बतलाया गया है कि यहाँ पर भी केलीशिन की तरह स्तम्भ है। स्थान के इतने समीप होने के कारण मैं अपनी आकांक्षा के बेग को न रोक सका।

सोदज बालक से दो मील चला मैं उन दो धाराओं के सगंम पर पहुँचा जिससे सोदजबालक नदी बनी है। फिर वहां से दाहिनी ओर वाली धारा के किनारे किनारे धीरे धीरे ऊपर चढ़ता हुआ, ७ मील का रास्ता तै करके मैं उस पहाड़ी के नीचे पहुँच गया जो सारे सोदज़बोलक मैदान में फैली हुई है। नदी का मार्ग छोड़कर तीन मील ऊपर चढ़ने के बाद मै एक दर्रे की चोटी पर पहुँच गया। सोउजबालक वहां से सीधा पूर्व की ओर है। लहियान का मैदान उत्तर-पश्चिम पड़ता है जो पहाड़ी के नीचे से लेकर खुर्दिस्तान पर्वत तक फैला हुआ है। यहां ५ मील की दूरी पर दर्रे के सिरे पर लगीबन नाम का ग्राम है। खोरंज का प्रसिद्ध नगर यहां से ३ मील दहिनी तरफ़ स्थित है। वास्तव में यह एक लम्बी नीची पहाड़ी के सिवाय कुछ है ही नहीं। पहाड़ी का अन्तिम उभड़ा

हुआ भाग अनेकों प्रकार के पत्थर के टुकड़ों से परिपूर्ण है जो चारों ओर अस्त व्यस्त रूप से बिखरे हुये हैं। इन्ही नाना प्रकार के टुकड़ों को यहां के खुर्दों ने आदमी और जानवरों की शिलान्वित मूर्तियां मान लिया है। वास्तव में यहाँ कला से सम्बन्ध रखने वाली कोई वस्तु है ही नहीं। यहां से दो मील की दूरी पर केली सिफ़न नामक स्तम्भ है। जिसका हिन्दी अर्थ श्वेत स्तम्भ होगा। अवश्य यह स्तम्भ भी केलीशिन की श्रेणी के ही हैं परन्तु इस पर कोई शिलालेख इत्यादि नहीं है स्तम्भ की लम्बाई चौड़ाई और मोटाई क्रमशः १२, ३ और १½ फुट है। यह भी एक थाले में जड़ा हुआ है इसका रुख (पश्चिम-उत्तर-पश्चिम) है इसके ऊपर घोड़े के खुर की कुछ आकृतियां खुदी हुई हैं जिसको यहां के निवासियों ने लिपि मान लिया है।

इस स्तम्भ और लगविन के बीच में केलीसिफन नामक एक दूसरा और स्तम्भ है। लहियान का मैदान खुला हुआ और सुन्दर है। भूमि उपजाऊ और खेती के काम के लिए बहुत अच्छी है। मुख्य नदी छोटी जाब है जो लगबिन की घाटी से निकल कर लहियान के मैदान में बहती हुई असिरिया के मैदान में घुस जाती है।

शाम तक मैं लहियान लौट आया। वहाँ से पहिले वाले रास्ते से ही सोइजबालक लौटा यह कबीला पूरे फ़ारस में सब से बहादुर कबीला है। इसमें लगभग १२०० कुटुम्ब हैं। और लगभग ४० मील लम्बे और ५० मील चौड़े प्रान्त में फैले हुये हैं। जो उत्तर दक्षिण मियान दाब मैदान से खुर्दिस्तान पर्वत तक और पूर्व पश्चिम जगातू नदी की घटी से लेकर पर्वत के पास तक फैला हुआ है। मिकरी पहिले खाना बदोश थे परन्तु जब इन्होंने खाना बदोशी छोड़ दिया है। और गाँव में निश्चित रूप से बस गये हैं परन्तु अब भी गर्मियों में पुरानी आदत के अनुसार खेमा डाल कर गांव के बाहर पड़े रहते हैं। फ़ारस की सरकार ने इन पर बहुत कम टैक्स लगा रक्खा है वास्तव में यह राजनीतिक चाल है। क्योंकि सुन्नी या खुर्द के नाते धार्मिक और साम्प्रदायिक विभिन्नता होने के कारण फ़ारस की केन्द्रीय सरकार इनको अपना

विश्वास पात्र नहीं बना सकती है। मिकरियों ने भी जहां उनके सुन्नी विचारों ने बाधा नहीं डाली, राष्ट्रीय कार्यो में ४००० या ५००० तक घुड़सवार केन्द्रीय सरकार को दिये। इतने देने के बाद भी उनके देश में इतने काफ़ी आदमी बच रहते हैं कि खेती वग़ैरह का काम देखसकें या अगर दुश्मन इधर उधर से चढ़ाई भी करें तो अपनी रक्षा करसकें आज उपरोक्त पूरे प्रान्त का मालिक एक ही कुटुम्ब है जो बाबा अमीर के नाम से प्रसिद्ध है। यह पुराने मिकरी सरदार अमीर पाशा की सन्तान हैं। मिकरी सरदार और वहां के किसानो का व्यवहार बहुत अच्छा है। खुर्द किसान अपने मालिकों के बिना उन्हें एक दो भेड़ बकरे आदि भेंट नहीं मिल सकते हैं और मालिक भी उनको पीट पीट कर एक एक पैसा वसूल करने की कोशिश करते हैं। परन्तु मिकरी सरदार और वहां के किसानो में मेल और विश्वास है।

सोउज़बालक से २५ मील सफ़र करके आज मैं मरहमताबाद पहुँचा जो मियान दाब मैदान में बसा हुआ है। यहां से एक मील के ही पश्चात् कुछ प्राचीन विचित्र स्थान हैं उसमें से एक शैतानाबाद नामी उजाड़ चट्टान है। इसका मुँह अनेक स्थानों पर रूखानी से चिकना किया गया है। और इसके बीच से होकर रास्ता खोदा गया है। यहां से कुछ ही सौ गज़ की दूरी पर एक दूसरी चट्टान है जिसको सादन्द कहते हैं। इस चट्टान के नीचे का भाग जिसका रुख नदी की ओर है बड़ी कारीगरी के साथ चिकना किया गया है और इसके ऊपरी त्रिभुजाकार धरातल का अधिकतर भाग सीढ़ियों से काट दिया गया है जिनसे चढ़ कर आदमी चोटी पर स्थित एक चबूतरे पर पहुँच सकता है। इसके चारों कोने पर चार छेद थे जो शायद खम्भों के लगाने के लिए बनाये गये थे इस चट्टान में भी एक रास्ता खोदा गया है। मैं अपने हाथ और पांव के बल इस रास्ते के ऊपर होकर कुछ दूर चलने के बाद एक छोटे भवन में पहुँचा। बहुत ध्यान देकर ढूढ़ने पर भी कहीं मुझे शिला लेख या मूर्ति वगैरह के झुंड मुझे कहीं भी नहीं मिली।

मेरा अनुमान है कि यह कोई प्राचीन अग्नि मन्दिर है।

इसको देखने के बाद मैं नदी को पार करके इन्द्रकुश गांव में पहुँचा और यहां से एक पथ प्रदर्शक को साथ लेकर फखरख को प्रस्थान किया, जहां खुर्दों के कथनानुसार मैंने समझ लिया था कि कोई प्राचीन मकबरा है। यह इन्द्रकुश से केवल एक मील दूर है। अन्य स्थानों की भांति यहां भी एक ढालू चट्टान के सिरे पर खोदाई का काम किया गया है। पहिले बिल्ली की तरह मेरा पथ प्रदर्शक मिकरी उस चट्टान के सिरे पर चढ़ गया और बाद को रस्सी के सहारे मैं भी चढ़ गया। उसकी ऊँचाई केवल ३० फुट होगी। चट्टान काट कर निकाली हुई बाहरी कोठरी की चौड़ाई और गहराई केवल ८ पग थी और उसकी ऊँचाई चार गज़ थी। बाहरी कोठरी से एक पग उठी हुई एक गुफा थी। यह गुफा दो मज़बूत खम्भों पर बधी हुई थी ये खम्भें ठोस चट्टान से काट कर बनाये गये थे और सिरे तथा धरातल पर गोल थे। इसके भीतर दो पग की ऊँचाई पर एक छोटी और गुफा थी जो खम्भों पर सधी हुई थी। शषदों स्थानों का विस्तार इससे कम था। तीनों की गहराई लगभग २ फुट थी जो खम्भों पर सधी हुई थी इसके भीतरी सिरे पर शव के रखने के लिए तीन स्थान थे।

यह मकबरा अवश्य किसी प्राचीन सम्राट और उनके दो बालकों के लिए बनवाया गया होगा। परन्तु दीवारों पर किसी प्रकार कोई पत्थर की मूर्ति नहीं है। हाँ दीवारों पर जहां यात्री साधारणता अपना नाम लिख दिया करते हैं कुछ अक्षर अवश्य वर्तमान थे जो स्याही या उसी प्रकार के किसी और अन्य पदार्थ से लिखे गये थे। उन अक्षरों को देख कर मैंने उनके प्राचीन होने का ख्याल नहीं किया, परन्तु ध्यान से देखने पर यह जान कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये अक्षर उस समय लिखे गये थे जब चट्टान की दीवारें बिल्कुल चिकनी थीं। अक्षरों की पंक्तियों का क्रम बिलकुल ठीक है परन्तु जहां पर दीवार टूट या घिस गई है वहां यह क्रम भी नष्ट हो गया है। अगर ये अक्षर दीवार के टूटने या घिसने के बाद लिखे गये होते तो टूटे हुये भागों में भी इनका क्रम न टूटता। परन्तु बात ऐसी नहीं है जहां चट्टान की दीवार चिकनी है पंक्तियों का क्रम बिलकुल ठीक है। परन्तु जहां भी दीवार बीच से टूट गई है पंक्तियों का क्रम भी

टूट गया है। इससे इन अक्षरों की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है मेरा विश्वास है कि इस्लाम के प्रचार के पहिले के यात्रियों के ये अक्षर हैं। अक्षर प्राचीन पहलवी लिपि से बहुत कुछ मिलते हैं। इन भग्नावशेषों की सत्ता इस बात की घोषणा करती है कि कभी यहां पर कोई नगर विद्यमान था परन्तु मैं निश्चय पूर्वक उसके विषय में यहां कुछ भी बतलाने में असमर्थ हूँ।

खुर्दी जनश्रुति के अनुसार इस तराई में शारी बरन नाम का एक प्रसिद्ध नगर था परन्तु इस नगर का मैं कोई विशेष परिचय नहीं दे सकता।

फरवरख से मैं नीची पहाड़ियों को पार करता हुआ सोदज़बालक की घाटी को अपने बाँये छोड़ता हुआ पूर्व से उत्तर की ओर ८ मील चलने के पश्चात् फिर मरहमताबाद पहुँचा। मियानदाब मैदान के निवासी अधिकतर .खुर्द हैं। इनमें से कुछ तो गांवों में बस गये हैं परन्तु अधिकांश अब भी खानाबदोशों की भांति खेमे में रहते हैं। मैदान की भूमि उपजाऊ है। लैलन नदी से सिंचाई होती है और धान यहां की मुख्य उपज है।

मियान दाब से आज मैं प्रातःकाल लैलन के खंडहरों को देखने गया इनको कर्नल मानटीथ ने अपने नकशे में प्राचीन कंजका (एक) नगर को भग्नावशेष बतलाया है मरहताबाद से आधे मील जगातू नदी के पार ६ मील की दूरी पर उत्तर पूर्व की ओर ये भग्नावशेष फैले हुये हैं। खंडहर कुल $\frac{3}{4}$ मील की लम्बाई और उसके आधी चौड़ाई में फैले हुये हैं। इसमें ४० से ५० फीट ऊँचे टीलों की पंक्तियां खड़ी हैं। निःसन्देह ये खंडहर प्राचीन नगर के सूचक हैं परन्तु इतना मैं निश्चय रूप से कह सकता हूँ वह प्राचीन नगर कंजका नहीं है।

ललन से दक्षिण पूर्व की दिशा से ७ मील चल कर मैंने जगातू नदी को पार किया यहाँ सैसेईकलह जाने वाले राज मार्ग को पार कर पुनः मिकरी प्रदेश में दाखिल हो गया। यहां से ७ मील की चढ़ाई लेकर मैं आमई बोलाकी नामक गांव में पहुँचा जो एक सुन्दर पहाड़ी

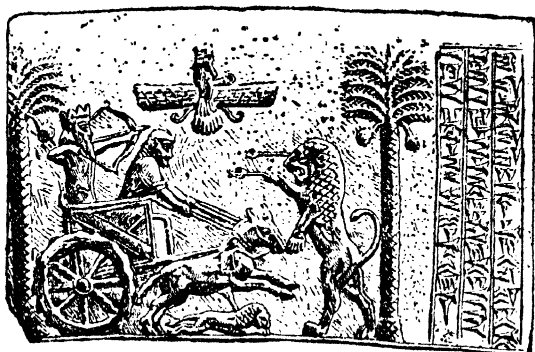
घाटी में बसा है। इस प्रान्त को बेई कहते हैं यहाँ के निवासी आजकल मिकरी ही हैं।

आज अपने पथप्रदर्शक के विशेष आग्रह से मैंने मुहम्मदज़िक जाना ही निश्चित किया जो चरवौरी सरदार का निवास स्थान है। जगातू नदी के उस पार अज़री नाम का ज़िला है जिसकी राजधानी कसवर है।

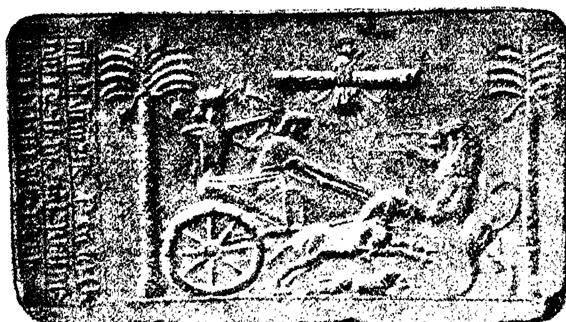
जगातू नदी के घाटी में एक फरसख चलने के बाद मैं साईकलह से होकर गुज़रा जो कि एक कृत्रिम टीले पर आबाद है जिसकी चोटी पर एक मज़बूत किला बना हुआ है। य. आज कल अफसर नामो कबीले के अधिकार में था। सेईकलह के टीले को देखने से ही उसकी प्राचीनता में विश्वास हो जाता है। यह मुख्य मार्ग छोड़ दिया जो यहां बाई ओर पहाड़ों में घुस जाता है। और नदी के किनारे किनारे थोड़ी दूर तक चलने के बाद जगातू नदी पर बँधे हुये किज कोपरी नामक पुल के भग्नावशेष के पास पहुँचा। यह पुल मेरे लिए बड़ा उत्तम आविष्कार सिद्ध हुआ क्योंकि इसके कारण कंजका जाने वाले पश्चिमी मार्ग का मुझे पता लग गया।

मेरा विश्वास है कि यह सेसेनियन काल की बनी हुई है और इसी से होकर निनवा से कनजका को मार्ग जाता है पास ही पहाड़ी पर एक सेसेनियन दुर्ग के भग्नावशेष का भी मुझे पता लगा, परन्तु समय की कमी के कारण मैं वहां न जा सका। यहां से चल कर मेरा मार्ग अब चौड़ी पहाड़ियों में स्थित है। १० मील की कठिन चढ़ाई के बाद मैं पहाड़ियों के सब से ऊँचे भाग पर पहुँच सका जहां से मुहम्मद ज़िक और सेईकलह उत्तर-पश्चिम की दिशा में स्थित है। इस भाग की पहाड़ियां उजाड़ और ढालू हैं। वहां से एक ऊँचे पठार से धीरे धीरे नीचे आकर साईकलह में आने वाले आम रास्ते को पकड़ लिया। दक्षिण-पूर्व की ओर ६ मील चलने के बाद मैं हिसार नामक गांव में पहुँच गया।

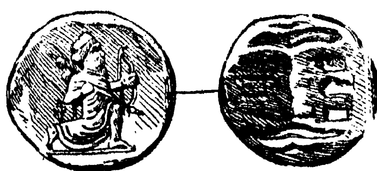
पहले हिसार आबाद था परन्तु आजकल तो वह लगभग उजाड़ सा हो गया है हिसार पहुँच कर फिर मैं खुर्दों के मध्य में था। हिसार के समीप सेईकलह से आने वाला मार्ग दो भागों में विभाजित हो जाता है। एक तो दाहिनी ओर सहना को जाता है जो अरदलान की राजधानी है



ब्रिटिश म्यूजियममें रखी हुई दरायुसकी मुहर



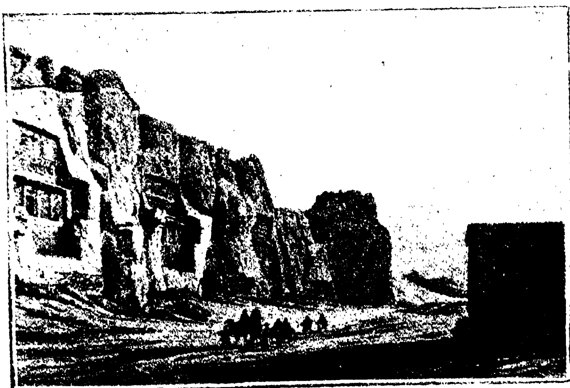
'एकिमिनिउ' युगकी मुहर—सिंहके शिकारका दृश्य



स्वर्णमुद्रा



तैमूरके सामने फारसका कैदी सुलतान बायाजिस



नखसी रुस्तममें 'एकिमिनिउ' राजाओंकी समाधि

और दूसरा बाँई ओर हमदान को जाता है। हिसार में मैं विख्यात गुफाओं को देखने की लालसा से आया था। लेकिन पहाड़ी मार्ग की कठिनता के कारण आज ही जाकर वहां से लौटना नितान्त असम्भव था। अतएव हिसार से एक फरसख चलने के बाद हमदान वाले मार्ग का अवलम्बन करके पुन: एक फरसख जाने के बाद दाहिनी ओर एक पहाड़ी पगडंडी ग्रहण करके थुकली गांव पहुँचा। यह गांव हिसार से १२½ मील दूर है रास्ते में घुमाव के कारण हिसार के ठीक दिशा निश्चित करना कठिन था। परन्तु जहां तक मैं समझता हूं यहां से यह पूर्व—कुछ झुकते हुए दक्षिण की दिशा में बसा है। यहां कलहूर की आबादी है। दूसरी तारीख को कुछ कलहूर घुड़सवारो को साथ लेकर मैं करफ़तू के गुफाओं को देखने चला जो फ़ारस में एक सबसे विचित्र स्थान है। दक्षिण पश्चिम की ओर ७ मील चलने के बाद मैं सरुक नदी के किनारे पहुँचा जो चार धारों के संगम से बनी है। ये चार धारायें तख्ते सुलेनाम के जिले से निकलती हैं। सरुक नदी सफकन्द के पास जाकर जगात् से मिलजाती है सरुक नदी अज़रबैजान और खुर्दिस्तान की साधारणतया सीमा नहीं बनाती हैं। नदी से सात मील की दूरी पर उपरोक्त दिशा में ही करफतू के गुफा स्थित हैं।

आर० के० पोर्टर ने इन गुफ़ाओं की ख़ुदाई का बड़ा ही विस्तृत और उत्तम वर्णन किया है और उसकी पुनरावृत्ति की यहां कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वे (मिथा) मित्र यानी सूर्य्य की उपासना के निमित्त ही निर्मित्त हुये थे। मिडियन राजधानी के पड़ोस में इसकी स्थिति इस बात और भी सिद्ध करती है। पोर्टर ने पर्वत के अगम्य भाग में एक जादू के फ़ौव्वारा का वर्णन किया है जहां वह पहुँच न सका। सैकड़ों प्रयत्नों के बाद मैं वहां तक पहुँचने में समर्थ हो सका। वास्तव में यह फौव्वारा एक चश्मे के सिवा और कुछ भी नहीं है जो मीठे पानी से भरा हुआ है। पोर्टर ने गुफ़ा का वर्णन करते हुये अतिशयोक्ति का आश्रय ग्रहण किया है।

मैं प्रत्येक भीतरी मार्ग के अन्तिम सिरे तक चढ़ा परन्तु कोई भी फ़ौव्वारे से ऊँचा नहीं था। वह वेदी जिसका पोर्टर ने वर्णन किया है एक

खम्भे का थाला है। परन्तु उसका वर्णन मुख्यत: सुन्दर और बोधप्रद है। करफतू में ६ घंटे ठहरने के बाद वहां से हम लोग लौटे परन्तु कुछ जंगली जानवरों के पीछा करने के कारण जहां सवेरे मैंने सरूक नाली को पार किया था वहां से कुछ आगे निकल गया। देश में इस सारे भाग को चुल कहते हैं जिसका अर्थ उजाड़ है। करफतू की पहाड़ी अज़रबैज़ान और खुर्दिस्तान की सीमा बनाती है। शाम को मैं तिकन तपह में ठहरा जो करफतू की गु.फाओं से १७ मील की दूरी पर बसा है इसका नामकरण उस टीले के नाम पर किया गया है जिस पर यह बसा है। सुनने में आया है कि इसके पड़ोस में कुछ प्राचीन .खुदाई के काम हैं।

आज मैं तिकन तपह से उत्तर-पूर्व जानेवाले मार्ग से १२ मील का मार्ग तय करके सरूक नदी से धुर दक्षिण वाली घाटी में पहुँच गया। इस स्थान में एक अच्छा सा गांव आबाद है जिसका नाम कारानिज़ है। इस जगह से थोड़ी दूर पर एक दर्शनीय स्थान है। इस स्थान पर नदी एक झील में विलीन होती सी दिखलाई पड़ती है। इसी झील में पानी पर तैरता हुआ एक द्वीप है। यह द्वीप साधारणतया एक ओर बंधा रहता है परन्तु लट्ठों से इसे झील के प्रत्येक भाग में ठेल सकते हैं। मेरे पथ-प्रदर्शक ने इस स्थान को देखने का मुझसे आग्रह किया परन्तु तख़्त सुलेमान को देखने की आकांक्षा इतनी प्रबल हो उठी थी कि मैंने वहां तक जाना अस्वीकार कर दिया। अस्तु, नदी से चलने पर मुझे एक उजाड़ पहाड़ी प्रान्त से होकर जाना पड़ा और ५ मील का मार्ग समाप्त करने के बाद पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा जहां से तख़्त सुलेमान के भग्नावशेष दिखलाई पड़ते हैं।

वास्तव में तख़्त सुलेमान का प्रथम दृश्य बड़ा ही मनोहर है। इस प्रान्त का वह भाग जो कि पर्वत के निम्नतम भाग में फैला हुआ है .खूब खुला हुआ है। उर्मिया झील का किनारा छोड़ने के पश्चात् इतना खुला हुआ प्रान्त मैंने अभी नहीं देखा था। इस प्रान्त को वहां की भाषा में तख़्त सुलेमान का 'सहरा' यानी मैदान कहते हैं। इस पहाड़ी की चोटी पर तख़्त सुलेमान के भग्नावशेष हैं।

दूर से देखने पर ये खंड़हर गिरी हुई दीवारों और मकानों की ढेरी से दिखलाई पड़ते हैं। जिनके बीच में चारों तरफ से घिरी हुई एक पानी की झील है। समीप से देखने पर दृश्य कुछ कम चित्ताकर्षक हो जाता है। परन्तु मुझे तो पग पग पर यह बोध हो रहा था कि मैं मिडिया के प्राचीन तम नगर में भ्रमण कर रहा हूँ।

पहाड़के दक्षिणी-पश्चमी कोने पर पहाड़ी की ऊँचाई १५० फुट और दीवार की ३० फीट है। इस प्रकार कुल ऊँचाई १८० होती है और इतनी ही ऊँचाई और तीनों तरफ़ है। पहाड़ी की चोटी पर एक दीवार बनी हुई है जिसका सब से अच्छा देश दक्षिण की तरफ़ और सब से टूटा हुआ भाग पश्चिम की तरफ़ है। दीवार का घेरा लगभग ¾ मील है। दक्षिण-पूर्व की तरफ़ जहाँ फाटक के समीप दीवार अच्छी है, कारीगरी बड़ी सुन्दर दीख पड़ती है। दीवार की चौड़ाई १२ फुट है जिसका बाहिरी भाग १४ इंच मोटे और तराशे हुये पत्थर के टुकड़ों से बना है। इनके बीच बीच में पतले पत्थर से जड़े हुए है। भीतर का भाग बेतराशे हुए पत्थर के टुकड़ों से भर दिया गया है जो चूने से जोड़ दिये गये हैं। यह पत्थर के समान कड़ा हो गया है। दक्षिण-पूर्व का फाटक बड़ी अच्छी दशा में है इस पर एक मेहराब बनी हुई है जिसकी ऊचाई और चौड़ाई क्रमशः १२ और १० फुट है। यह भी बिना तराशे हुए पत्थरों से बना हुआ है। इसी फाटक से घुसने पर मैं शहर के भीतर पहुँचा। सब से पहिलो चीज़ जो आँखों को अपनी ओर खींचती है झील है यह झील पहाड़ी के बल से ऊँचे स्थान पर स्थित है। इसका घेरा कुल ३०० पग है। इसके पथरीले किनारे चूने के कर्बनेत से बने हैं जो पर्याप्त यात्रा में झील के पानी में मिला हुआ है। आरके पोर्टर महाशय का विश्वास है कि पूरी पहाड़ी इसी प्रकार पानी के लाये हुए चूने के कर्बनेत से बना है। झील की गहराई भी अभी हाल की नाप के अनुसार उतनी ही है जितनी पहाड़ी की कुल उँचाई है। पुराने लोगों का ख़्याल है कि झील का पानी उथला है। परन्तु अभी हाल की नाप के अनुसार इसकी कुल गहराई लगभग १५० फुट साबित हुई है।

लोगों का यह कहना है कि झील से पानी चाहे जितना भी निकाल लिया जाय उसका पानी अपनी सतह से नहीं घटता और अगर पानी निकलने का सब रास्ता बन्द कर दिया जाता तो इससे भी पानी का सतह ऊँची नहीं उठती। फ़ारस के निवासी इसे जादू का काम समझते हैं। परन्तु मेरा ख़याल है कि झील का निम्नतम भाग किसी दूसरी झील से मिला हुआ है और इसी कारण से पानी की सतह में घटबढ़ नहीं होती। लोगों का कथन है कि आज के ५० वर्ष पहिले झील का पानी निकालने के लिए कोई रास्ता नहीं बनाया गया था। पहिले पहल शाहसेबेन्द नामी कबीले ने सिंचाई के लिए दो रास्ते झील से निकाले थे।
परन्तु मेरा विचार है कि १५ वीं या १६ वीं शताब्दी, में जब शहर बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हो गया तो पश्चिम की ओर पानी निकालने का एक मार्ग अवश्य वर्तमान था। क्योंकि उस झील और पहाड़ों की चोटी के बीच पूरे भाग में बाढ़ के चिन्ह मौजूद हैं। आजकल पानी निकलने के दो मार्ग वर्तमान हैं एक उत्तर-पूर्व के कोने में और एक फाटक के समीप। झील के निकटतम किनारे पर किसी प्रकार के भग्नाशेषों का कोई चिन्ह नहीं है। परन्तु थोड़ी दूरी पर हुई हुई इमारतों के कुछ भग्नावशेष हैं जो मुसलमानी काल के हैं। शायद यह वही महल है जिसे मुग़ल सम्राट अबकै खां ने बनवाया था। यहां एक शिलालेख है जिसको मैंने नक़ल कर लिया। इसी के उत्तर और खंडहर है जिसको पोर्टर ने हम्माम बतलाया है लेकिन थोड़ी देर ध्यान पूर्वक देखने के बाद मुझे विश्वास हो गया कि यह अजरबैजान प्रान्त का प्रसिद्ध अग्नि-मन्दिर है जो इस्लाम के प्रचार के पहिले फारस का सब से पवित्र स्थान था।

कुछ देर तक की परीक्षा के बाद मैंने निश्चित किया कि इसका क्षेत्रफल ५५ वर्ग फुट रहा होगा मंदिर एक वर्गाकार भवन था जिसकी प्रत्येक भुजा ५५ फीट रही होगी। यह ईटों से बना था जो एक मज़बूत गारा से जोड़ी गई थीं।

बाहर के दीवारों की मुटाई १५ फुट है। इस दीवार के भितर एक और मकान बना था जिसके चारो ओर एक गोल रास्ता बना था।

इसी मकान में पवित्र अग्नि के रखने का स्थान था। इसकी दीवारें १५ फुट मोटी हैं इसकी छत गोला कार हैं। इस घर की बनावट निसन्देह फारस-देश के अन्य स्थानों में मिलने वाले अन्य अग्निमन्दिरों के समान है। महराव के भीतरी हिस्से पर धूएं की एक काली तह जमाई गई है जो इस बात को सिद्ध करती है कि यह स्थान वास्ताव में एक प्राचीन अग्नि मदिर हैं। केन्द्रीय गृह अब भी अच्छी दशा में है किले की सीमा के भीतर एक और पुराना खंडहर है जो दक्षिण-पश्चिम के कोने में स्थित है इसकी दीवार भी वैसेही वेतराशे पत्थरों से बनी हुई है जिनका रंग लाल है। गहरे लाल रंग के पत्थर किले को और किसी दिवाल में नहीं लगे हैं। इस मकान के प्रत्येक स्थान में किसी लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है। शायद यह स्थान इसी के रहने के लिए बनवाया गया था।

साधारणत: लोगों का विचार है कि इस तख़्ते सुलेमान के निर्माता दाऊद के पुत्र प्रसिद्ध सुलेमान हैं। लोगों का विश्वास है कि वहां पर उनकी कचहरी लगती थी और उन्होंने यहाँ शेवा की महरानी मिलने के लिए आमंत्रित किया था। तख़्ते सुलेमान के उत्तर-पूर्व की दिशा में स्थित पर्वत की चोटी पर एक दूसरा खंडहर दिखलाई पड़ता है जिसे तख्ते वलकिज़ कहते हैं। इस समय पर्वत वर्फ से आच्छादित था। यह भी वेतराशे पत्थरों से बना हुआ है। और शायद कोई प्राचीन किला है जहां से सारे निकटवर्ती प्रान्त और उरमिया झील तक दीखपड़ता है। यहां अन्य प्रसिद्ध स्थानों में "अज़्दहा' जो वास्तव में पहाड़ों का एक उभाड़ा हुआ हिस्सा है लोगों का कहना है कि सुलेमान ने जादू से एक अजदहे को पत्थर में परिणत कर दिया था।

यहां सब से अधिक आश्चर्यजनक वस्तु जिन्दाने सुलेमान है। तख़्त से १½ मील की दूरी पर उत्तर पश्चिम की दिशा में यह एक त्रिभुजाकार गट्ठा है जिसका घेरा लगभग ४० फुट है। यहां से जमीन की सतह ३७० फुट नीचे है।

वास्तव में तख्त सुलेमान की झील की तरह यह भी पहले कोई झील थी जो अब सूख गई है। तख्त सुलेमान की झील की भी यही दशा

हो सकती है। इस पहाड़ी के नीचे छोटे छोटे कई चश्मे हैं जिनके पानी में नाना प्रकार के द्रव खनिज पदार्थ भरे हैं।

तख़्त सुलेमान का प्रदेश बड़ा रमणीक प्रान्त है वसन्त ऋतु में तो यह साक्षात स्वर्ग ही हो जाता है जङ्गली फूलों की सुगंध से वायु सुगंधित हो उठती है पूरे फ़ारस देश में इतनी सुन्दर गरमी की ऋतु के लिए चरागाह कहीं भी नहीं है। और गरमी के दिन में खामरूद का शाशक यहीं निवास करता है।

तख़्त को भली भांति देखने के बाद मैं जेन्ज़ोन चला आया । तख़्त से ५ मील उत्तर-पूर्व चलने के बाद मैं अगोरा के जिले में था। प्रान्त बिलकुल पर्वताकीर्ण है । उभड़ी हुई पहाड़ियों के पेटे में गांव बसे हुये हैं जो बगीचों से घिरे हुये हैं इसमें कुल ५५ गाँव हैं और केन्द्रीय सरकार को ३००० पौं कर देते हैं और फौज़ के लिए २०० सैनिक देते हैं। अगोरा और पड़ोस के उरियादि नामी ज़िले में धातु की अनेक खाने हैं। इन खानों में अब भी काम होता है। रांगा यहाँ का मुख्य खनिज प्रदार्थ है। .

जेन्ज़ोन में ३ दिन ठहरने के बाद तरून वाले मार्ग से मैंने गिलन के लिए प्रस्थान किया। जो प्रारम्भ ही से मेरा मंजिले मक़सूद था।

जेन्ज़ोन से उत्तर-पूर्व चलने के बाद मैं पहाड़ियों के नीचे पहुँच गया। जहां से १ फ़रसख की चढ़ाई के बाद पूर्व-उत्तर की दिशा से २ मील और दूर रोम नामी गांव बसा है जो काफ़ी बड़ा है और दो पहाड़ियों के बीच में बसा है।

रोम से उत्तर पूर्व ४ मील की चढ़ाई के बाद मैं पहाड़ी के सब से ऊँचे स्थान पर पहुँच गया। समुद्र-तट से इसकी ऊँचाई ७००० या ८००० फुट होगी यहां पर हवा बड़ी ठंडी थी और कई फुट गहरी बरफ़ पड़ी थी यहां से 'गिलम' पर्वत बहुत छोटे दिखलाई पड़ते थे। यहां से मिडिया के पठार से उस मैदान की ऊँचाई आरम्भ होती है। जो कास्पियन सागर तक फैला हुआ है। तरूम दो जिलाओं में बिभाजित है। उत्तरी मैदान जो सेफीरून नदी के दायें किनारे पर स्थित है तरूमी ख़ेलखाल के नाम से प्रसिद्ध है।

और निचला मैदान जो ज्यादा चौरस है, तरूमी--पाइन बोला जाता है। नदी के बायें किनारे वाला हैं जिला पुस्तीकुह कहा जाता है। तरूमी खेलखाल में करीब १०० गांव हैं। आबोहवा गरम है और पानी खूब बरसता है और रूई की खेती खूब होती है। बगीचे खूब हैं फलों की पैदावार खूब होती है पहाड़ियों में नमक और फिटकरी की खाने हैं। मुख्य गांव बेनीसर्द है नदी को पार करके मैं पुस्तीकुह पहुँचा। ५ मील चलने के बाद बाईं ओर मुड़ने वाली एक पगडंडी पकड़ कर मैं एक मील के बाद कावकन्द नामी गांव में रह गया।

पुस्तीकुह में कुल २५ गांव हैं और यहां पानी भी कम बरसता है। दरम खास स्थान है जो उस सड़क पर बसा है जो आई से सीधे गिलन को जाती है। पुस्तीकुह के निवासी अधिकर खुर्द हैं।

कौकन्द से १४ मील चलने के बाद मैं गिलवान पहुँचा। मार्ग सेफी रूद नदी के किनारे किनारे जाता है। गिलवान से ३ मील दूर दरबन्द नामी स्थान है जो तरूमी खेलखाल और तरूमी पाइन की सीमा बनाता है। यहां से ६० मील के बाद सदघार का दर्रा मिलता है जहां सेफीरूद शाहरूद से मिलकर गिलन प्रान्त को बह जाती है।

वंशीधर श्रीवास्तव

ईरान की प्राचीन भाषा

अवस्ता या ज़न्द—अवस्ता ईरान की प्राचीन भाषा है। पारसी लोगों के धर्म ग्रन्थों का निर्माण इसी भाषा में हुआ है। ज़रदश्त के अनुयायी पारसी लोगों की दृष्टि में ज़न्द—अवस्ता का वही स्थान है जो ऋग्वेद का भारतीय आर्यों की दृष्टि में हैं। सिकन्दर की विजय के पहले पारसी धर्म का सिक्का समस्त पश्चिमी एशिया में फैल गया था। दारा आदि फारस के पराक्रमी राजा इसी धर्म के मानने वाले थे। पर विजयी मुसलमानों ने इस धर्म पर भारी आघात किया। ज़रदश्त के अनुयाइयों को क़ुरान मानने के लिये बाध्य किया गया। बहुत से पारसी बचे हुए अपने प्यारे धर्म ग्रन्थों को लेकर भारतवर्ष भाग आये। कुछ फ़ारस में ही बने रहे। उन्होंने सभी तरह की मुसीबतें झेलीं पर उन्होंने अपने धर्म को न छोड़ा। इन वीर लोगों की संख्या सारे फ़ारस में केवल १० हज़ार है। भारत में बसे हुए पारसियों की संख्या लगभग १ लाख है।

इन एक लाख मनुष्यों ने एक बड़े प्राचीन धर्म और सभ्यता को अब तक जीवित रक्खा है। इस धर्म और सभ्यता के भीतर प्रवेश करने के लिये अवस्ता भाषा ही एकमात्र कुंजी है।

अवस्ता और संस्कृत में घनिष्ट सम्बन्ध है। गत शताब्दी के आरम्भ में डेनमार्क के प्रसिद्ध विद्वान रास्क महाशय ने संस्कृत और अवस्ता भाषाओं की समानता की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया रास्क महाशय कोपेन हेगन के पुस्तकालय में अवस्ता और पहलवी भाषाओं के कई अमूल्य हस्तालिखित ग्रन्थ ले आये। पर पन्द्रहवीं शताब्दी में अवस्ता का अनुवाद संस्कृत में हो चुका था। इस अनुवाद से अवस्ता के समझने में बड़ी सुगमता हो हुई। अवस्ता के उपलब्ध ग्रन्थ निम्न हैं:—

१ यस्न [यज्ञ] और गाथा। २ विस्परद। ३ यष्ट। ४ नायीश, गाह आदि, ५ वेन्दीदाद। ६ हादोख़्त मास्क आदि।

यस्न में यज्ञ और गाथा में प्रार्थना सम्बन्धी साहित्य है। यज्ञ में जिस प्रकार भारतवर्ष में सोमपान की प्रथा थी उसी प्रकार अवस्ता में होमरस पीने की चाल थी। गाथा पद्य में हैं।

इनका मुख्य उद्देश्य स्तुति है। विस्परद् यज्ञसम्बन्धी और यष्ट स्तुति सम्बन्धी हैं। न्यायीश आदि में विशेष, अवसरों के लिये संक्षिप्त प्रार्थनाएँ हैं। वेन्दीदाद में [विदेव दैत] में सृष्टि, यम आदि विविध विषयों का समावेश है।

इन सब धर्म ग्रन्थों के संग्रह को अवस्ता कहते हैं। भाष्य सहित होने से उन्हें ज़न्द—अवस्ता भी कहते हैं। अवस्ता भाषा की लिपि कुछ कम पुरानी है और दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती है।

इस भाषा की वर्णमाला स्वर और व्यंजन संस्कृत के आधार पर है। शब्दों के उच्चारण में भी समानता है। पर पाली भाषा की तरह अवस्ता के अधिकांश शब्द संस्कृत के अपभ्रंश है। बहुत से शब्द ज्यों के त्यों लिये गये हैं।

नीचे दिये हुए १ शब्दों से दोनों भाषाओं की समानता का पता सहज ही में लग सकता है :—

अवस्ता	संस्कृत
हिचति	सिंचति = वहसींचता है
जीव्यम	जीव्यम
उत	उत
दारू	दारू = लकड़ी
भूमिम्	भूमिम्
नना	नाना = तरह तरह के
बाजिन	भाजन = बरतन
द्वारिम	द्वारम
उर्वरणाम	उर्वराणाम
आयु	आयु
यज़ामैदे	यजामहे
अवज़ैति	आवहति
विस्पम्	विश्वम्
आज़ुति	आहुति
पतिम्	पतिम्

अवस्ता	संस्कृत
हेना	सेना
नारी	नारी
दह्यु	दस्यु
अहुर	असुर
कुघ्र	कुत्र
येसु	येषु
अन्तर	अन्तर
यिम्	यम् (जिसको)
अज़म्	अहम्
अनरत्थ	अनृत्य असत्य
मरत्थु	मृत्यु
रज़तम्	रजतम (चाँदी)
ऐतत	एतत
वैद्	वेद
गव:	गात्रः
औजो	ओजस
रौदन्ति	रोहन्ति
मघ्रै:	मन्त्रैः
इसवो	इषवः
द्व	द्वि
थ्रि	त्रि
चतुर	चतुर्
पंच	पंच
खस	षष्ट
सप्त	सप्त
अष्ट	अष्ट

अवस्ता	संस्कृत
नव	नव
दस	दश
विशति	विंशति
त्रिसत	त्रिशत
चथ्वरसत	चत्वारिंशत
पंचसत	पंचशत
स्वस्ति	षष्टि
हप्तति	सप्तति
अस्तति	अशीति
नवति	नवति
सत	शत

शब्दों की यह समानता किसी अकस्मात कारण से नहीं है। अवस्ता का सारा व्याकरण संस्कृत के व्याकरण के ही ढाँचे पर ढला है। अवस्ता में सन्धि के नियम वहीं है जो संस्कृत में है जिस प्रकार संस्कृत में एक वचन, द्विवचन और बहुवचन हैं उसी प्रकार अवस्ता में है। पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग भी दोनों में समान है। विभक्ति कारक, समास अव्यय संज्ञा सर्वनाम और क्रिया के नियम दोनों भाषाओं में एक हैं।

उच्चारण का कहीं कहीं अन्तर उसी प्रकार है जिस प्रकार विहार प्रान्त और जैपुर को हिन्दी में है। जिस प्रकार उपनिवेशों में बसे हुए अंग्रेज़ों की अंग्रेज़ी उनके देशवासियों की अंग्रेज़ी भाषा से भिन्न है उसी प्रकार का मामूली अन्तर अवस्ता और संस्कृत भाषाओं में हो गया। कई विद्वानों का अनुमान है कि भारतवर्ष के आजन्म कैदी ईरान (यमलोक) भेजे जाते थे। जिस तरह से अंग्रेज़ी कैदी आरम्भ में आस्ट्रेलिया को भेजे जाते थे पर जिस प्रकार अब आस्ट्रेलिया एक स्वतन्त्र अंग्रेज़ी उपनिवेश है इसी प्रकार ईरान देश भारतीय आर्यों का एक उपनिवेश बन गया था। दोनों में व्यापार आदि के घनिष्ट सम्बन्ध थे। इसी से आपत्ति के समय में पारसी लोगों ने भारतवर्ष में शरण ली थी।

इस छोटे से लेख में इन सब महत्व पूर्ण बातों को विस्तार देना कठिन है। पर मुझे आशा है पुरातत्व पंडित लोग इस ओर अन्वेषण करके प्राचीन भारत के गौरव का सच्चा स्वरूप संसार के सामने रक्खेंगे।

अवस्ता के दो मन्त्र देकर यह लेख यहीं समाप्त किया जाता है।

१—अत अवस्या नु गुशोदुम नु स्रौत

अब मैं भाषण करूंगा आप ध्यान देकर सुनें।

यैच अस्नात् यैच दूरात इसथा

जो यहाँ दूर और समीप से आये हो

नु इम विस्प चिथ्र जी मज़द हो दम

इसलिये इन सब बातों को मन में स्पष्ट रख लो

नो इत दैवितिम दुस्सस्तिस् अहुम मरा स्यात्

न दुरात्माओं से अपना दूसरा जीवन नष्ट कराओ

अक वरणा दगवो हिज़वो आवरतो

[जो] झूठे वचनों से तुम्हारी वाणी को पापी बनाते हैं।

२—यिम हे खथ्रे औरवाहे

ऐश्वर्यवान यम के राज्य में

नो इत औतम आहा, ना इत गरमिम्

न यहाँ जाड़ा था, न गरमी।

नो इन ज़ौर्वा आहा नो इत मरच्युः

न जरा [बुढ़ापा] न मृत्यु थी।

नो इत अरस्को दैवो दातो,

न रोग, न दैत्यों के दुष्कर्म।

पंचदश प्राचहो पे

पन्द्रह वर्ष को अवस्था वालों की तरह।

पिता पुत्रश्च रौद्रैश्च

पिता और पुत्र विचरते थे।

यवत स्योइत हापबो

यिमो विवस्वतो पुत्रो

सुन्दर चरवाहे की तरह विवस्वत के पुत्र यम ने राज्य किया।



धार्मिक उत्सव

फ़ारस वालों के कुछ उत्सव तो अजीब ढङ्ग के हैं और कुछ ऐसे हैं जिनसे बाहर वालों, और विशेषकर योरप वालों, को बड़ी चिढ़ लगती है। उनके वर्ष का पहला दिन नवरोज़ कहलाता है। इस दिन यहाँ के लोग आपस में मिलते जुलते हैं और छोटे लोग बड़ों के यहाँ इनाम माँगते फिरते हैं। इस महीने में नौकर दूनी तनख्वाह लेते हैं। इनाम माँगने का ढङ्ग भी बड़ा अच्छा है। इनाम माँगने वाले पहिले रङ्गी हुई मिठाइयाँ और छोटे मोटे शीशे के वर्तन वग़ैरह बड़ों को नज़र करते हैं। और उसके बदले में नगद इनाम चाहते हैं। बहुत से अङ्गरेज़ इन इनामों से अपना पिंड छुड़ाने के लिये यह कह दिया करते हैं कि हमको भेंट लेने और इनाम देने का गवर्नमेंट से हुक्म नहीं हैं। इस उत्सव में गरीब और अमीर सब को कुछ न कुछ खरच करना पड़ता है; और नहीं तो संध्या के समय आतिशबाजी छुड़ाना तो सब के लिये ज़रूरी है ही।

लेकिन नवरोज़ में खुशी ही खुशी रहती है। इसलिये यह त्योहार किसी को खलता नहीं, पर रमज़ान जो कि व्रत और उपवास का महीना है बड़ा दुखदाई होता है। इस महीने में लोग सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच ही खाना, पानी पीना और हुक्के का इस्तेमाल कर सकते हैं दिन में नहीं। रात भर लोग खाने पीने और इधर उधर के काम में लगे रहते हैं इसलिये दिन में कोई काम वे ठीक तौर पर नहीं कर सकते। जब रोज़ा खोलने का वक्त आता है शहर में चारो ओर तोपें दाग दी जाती हैं जिससे ठीक वक्त का सब को पता चल जाता है। अगर कोई घर से दूर हुआ और

ठीक वक्त पर घर नहीं पहुँच सका तो वह रास्ते में ही रोज़ा खोला लेता है नहीं तो सब लोग घर पर इकट्ठे होकर रोज़ा खोलते हैं। महीना खतम होने पर जिस दिन चाँद दिखलाई पड़ता उस दिन की खुशी बयान नहीं की जा सकती। सारा देश प्रसन्नता से भर जाता हैं और तरह तरह की खुशियाँ मनाई जाती हैं।

सब से भयानक महीना मुहर्रम का होता है। फ़ारस के रहने वाले धर्म के नाम पर अपने को बलिदान करने वाले हसन और हुसेन की स्मृति में यह समवेदना-सूचक उत्सव मनाते हैं। जिस दिन जलूस उठता है हज़ारों मज़हब के दिवाने चाकू और जंजीरों से अपना सिर और छाती फोड़ डालते हैं। उनका सारा बदन लोहू से तर हो जाता है। सड़कों पर लोहू की धारा बहने लगती है।

प्रति वर्ष एक ऊँट अल्लाह के नाम पर बलिदान किया जाता है। इब्राहीम ने जो बलिदान किया था उसी की स्मृति में यह प्रथा अब तक प्रचलित है। इस बलिदान के लिये सफ़ेद ऊँट बहुत खोज कर पाला जाता है। एक अफसर शाह की ओर से इस बलि के लिये नियुक्त किया जाता है जो इस ऊँट के साथ एक विशेष स्थान पर जाता है जहाँ सारे शहर के लोग इकट्ठा होते हैं। बलिदान हो जाने पर भीड़ के लोग ऊँट के गोश्त के लिये टूट पड़ते हैं। पहिले अफसर लोग अपने अपने हिस्से के लिये बड़ा शोर गुल मचते हैं। बहुत से लोग यहाँ गिरे हुए रक्त से अपने वस्त्र का कोई हिस्सा रङ्ग कर ही संतुष्ट हो जाते हैं। रमज़ान के अखीर में यह त्योहार मनाया जाता है। इसी अवसर पर लोग अपने अपने घरों में बकरे का बलिदान करते हैं।

"ए.प्स इन्टू परशिया" के अधार पर।

रामलखन शुक्ल



शिक्षा और अस्पताल

लड़के बचपन में बहुत दिन तक नौकरानियों की निगरानी में रहते हैं जिनका प्रभाव बहुत बुरा पड़ता है, किन्तु अब कुछ दिनों से वे घर से दूर बोर्डिङ्ग हाउसों में रहने के लिये भेजे जाने लगे हैं। अमेरिकन मिशन के कुछ बोर्डिङ्ग स्कूल बड़ी सफलता से काम कर रहे हैं। वहाँ लड़के सब प्रबंध स्वयं करते हैं और अपनी ही कमाई से पढ़ते है। कभी कभी ये लड़के अपनी कमाई से कुछ धन बचा कर गरीबों की रक्षा भी करते हैं।

इन स्कूलों में अरबी और फ़ारसी की शिक्षा अनिवार्य रक्खी गई है। अन्य विषयों के अतिरिक्त लड़के अङ्गरेज़ी और फ्रेंच भाषा का भी अध्ययन करते हैं। इन मिशन स्कूलों में एक नियम यह भी है कि स्कूल चहारदीवारी के भीतर किसी धर्म पर किसी प्रकार का आक्षेप न किया जाय। स्कूलों में हर धर्म और हरेक जाति के लड़के पढ़ सकते हैं। पहिले तो मुसलमानी लड़कियाँ पढ़ने न आती थीं पर अब धीरे धीरे आने लगी है और उनकी संख्या बढ़ती जा रही है। इस समय तेहरान में सैकड़ों निसवाँ स्कूल हैं जो वहाँ की सरकार की देखरेख में शिक्षा का कार्य करते हैं। इन स्कूलों में मुसलमानी मज़हब की शिक्षा भी अनिवार्य है। मिशनस्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य नहीं रक्खी गई है।

सन् १६०६ ई० में ईरानी सरकार की अनुमति से जर्मनी ने एक स्कूल लड़कों के लिये खोला। यहाँ के अध्यापक कुछ ईरानी हैं और कुछ जर्मन। शिक्षा जर्मन स्कूलों के ढङ्ग पर होती है, पर यहाँ भी अरबी और फ़ारसी अनिवार्य विषय हैं।

सन् १६०६ ई० ही में रिचर्ड खाँ नामी एक फ्रांसीसी मुसलमान ने एक प्राइ-वेट स्कूल लड़कियों के लिये खोला। इस स्कूल में हर उम्र की लड़कियाँ तालीम पाती हैं। पहिले तो वे बुर्का ओढ़कर स्कूल जाया करती थीं। पर धीरे धीरे वे ढीठ हो चली है और चेहरा खोल कर पढ़ने जाती हैं। यह स्कूल अच्छी उन्नति कर रहा है और इससे देश की स्त्रियाँ सुशिक्षिता हो रही हैं।

तेहरान में एक टेक्निकल स्कूल भी है जिसमें डाक्टरी और इन्जीनियरी की शिक्षा दी जाती है। डाक्टरी की तो कुछ उन्नति हो रही है पर इन्जीनियरी का काम

अभी कुछ ढीला सा है। डाक्टरी की पढ़ाई का कोर्स ५ वर्ष का है। डाक्टरी पढ़ने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। यद्यपि परीक्षा की कड़ाई से बहुत लोग निरुत्साहित होकर इसे छोड़ देते हैं। इस स्कूल में अस्पताल नहीं है जिससे विद्यार्थी को दूर दूर के अस्पतालों में जाने का कष्ट उठाना पड़ता है।

इस समय तेहरान में कई योरोपियन अस्पताल हैं, इन सब का काम अच्छा चल रहा है। सरकारी अस्पताल में सदा से जर्मनों की देख रेख में काम होता रहा है।

देश की स्वास्थ्य रक्षा के लिये एक समिति बनी है जिसके सदस्य सरकारी अफसरों के अतिरिक्त इन अस्पतालों के डाक्टर भी होते हैं। कुछ दिन से देशी हकीम भी इसमें सम्मिलित होने लगे हैं। यह समिति अच्छा काम कर रही है।

"पीप्स इन्टू परशिया" के आधार पर

रामलखन शुक्ल

ज़हक और फ़रीदुन

प्राचीन कथाओं के अनुसार जमशेद फ़ारस के बादशाहों में सबसे बड़ा था। उसके विषय में शाहनामा में बहुत सी अद्भुत कहानियाँ कही गई हैं। उसने सात सौ साल तक शासन किया। उसकी शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि अपने शासन के अन्तिम वर्षों में वह अपने आपको देवता समझने लगा और अपनी मूर्तियां बनवा कर साम्राज्य के समस्त प्रान्तों में भेज देता ताकि उसकी प्रजा उनकी पूजा कर सके।

इस अपवित्र कार्य के कारण ईश्वर उससे बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसकी प्रजा उसके विरुद्ध हो गई और इसको नष्ट करने के लिये एक पड़ोसी बादशाह को सहायता दी। ज़हक ने जमशेद से फ़ारस का सिंहासन छीन लिया और एक सहस्र वर्ष तक उस देश पर शासन किया।

फ़ारस वालों को शीघ्र ही अपने इस कार्य के लिये पश्चात्ताप करना पड़ा क्योंकि नवीन सम्राट बड़ा ही क्रूर और निर्दयी निकला।

कहते हैं कि उसने जब शैतान को अपने कंधों को चूम लेने की आज्ञा देदी तो उनमें से दो सांप उत्पन्न हुए जो उसे सदैव पीड़ा पहुँचाते थे। शैतान ने उससे कहा कि यदि ये सांप मनुष्य का मस्तिष्क खाने को पावें तो तुम्हें कष्ट देना बन्द कर दें। इस वास्ते वह प्रति दिन अपनी एक प्रजा को क़त्ल करवाता था जिससे सांपों के भोजन दिया जा सके। इतिहासकारों ने इस कथा का अर्थ समझाने की चेष्टा करते हुए लिखा है कि बादशाह के कंधों में सम्भवतः नहसूर के कारण पीड़ा होती थी जिसे दूर करने के लिये वह मानव—मस्तिष्क की पुलटिसें प्रयोग में लाता था। परंतु हम लोग नहीं कह सकते कि इसका यथार्थ तात्पर्य क्या है।

अन्त में ज़हक ने कावा नामी इस्फ़ान के एक लोहार के इकलौते पुत्र को पकड़वाया और उसे मार कर उन सांपों को भोजनदेने का निश्चय किया। कावा ने अपने एक मात्र पुत्र के छोड़ दिये जाने के लिये बादशाह से बड़ी प्रार्थना की किन्तु जब ज़हक ने उसकी एक न सुनी तो वह बागी हो गया और अपने चमड़े के वस्त्र को एक लट्ठे में बांध कर बागियों के आगे आगे उसे झंडे की भांति लेकर चला।

फारस के प्राचीन राजवंश में उत्पन्न एक राजकुमार उस समय भी जीवित था। किन्तु वह एलबुर्ज़ के पहाड़ों में छिपा हुआ था; क्योंकि ज़हक को स्वप्न में आगाह किया गया था कि एक राजकुमार तुम्हारे विरुद्ध खड़ा होगा और तुम्हें सिंहासन से हटा देगा, और इस वास्ते ज़हक उसकी खूब तलाश कर रहा था। इस राजकुमार ने, जिसका नाम फ़रीदुन था, कावा का साथ दिया। प्रजा, ज़हक के अत्याचारों से तङ्ग आ गई थी, इसलिये वह फ़रीदुन की सेना में सम्मिलित हो गई।

युद्ध में फ़रीदून ने ज़हक के शिर में अपनी गदा से प्रहार किया और उसे मार डालने ही को था कि इतने में एक आवाज़ ने उसे आगाह किया कि अत्याचारी की अन्तिम घड़ी अभी नहीं आई। इस वास्ते वह ज़हक को तेहरान के पास दामावन्द पहाड़ के निकट ले गया और पहाड़ के नीचे एक अगाध गुफा में चमड़े के तस्मे से बांध दिया। लोगों का विश्वास है कि अन्यायी ज़हक अभी तक जीवित है और उसी प्रकार लटका हुआ अपने अकथनीय अत्याचारों का फल भोग रहा है।

इसके पश्चात फ़रीदुन फ़ारस के सिंहासन पर बिराजमान हुआ और पांच सौ वर्षों तक शासन किया, और उस लोहार का चमड़े का जब वह टुकड़ा फ़ारस के बादशाहों का झंडा बना। क्रमशः एक के बाद दूसरे बादशाह ने उसे जवाहिरात में खूब सजाया और कहते हैं, अन्तिम बार वह दमावन्द के युद्ध में ले जाया गया था जिसमें फ़ारस के प्राचीन राजवंश का अन्तिम बादशाह याज़्दगर्द, अरब के निवासियों द्वारा पराजित हुआ था।



पारस का नामकरण

ले० पं० बालगोविन्द शर्मा आयुर्वेदाध्यापक जो० म० गो० म०
विद्यालय वाराणसी

२—पारस यह देश हिन्दी साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसको यवन भाषा में परशिया कहा करते हैं। इसको संस्कृत के विद्वान् पारसीक 'पारसीका वनायुजाः' इस अमर कोश के प्रमाण से कहा करते है। परन्तु 'पारसीक' शब्द को वाचस्पत्यभिमान कोश के निर्माता ने अरबी भाषा का शब्द स्वीकार किया है। इस दशा में अमरकोश की अशुद्धि प्रतीत होती है। संस्कृत भाषा में प्राकृत भाषा के शब्द अत्यन्त प्रविष्ट हो गये हैं इस लिये यह पारसीक शब्द अरबी भाषा का नहीं है किन्तु कापिशी का अपभ्रंश साम्प्रतिक हिन्दी भाषा का शब्द जानना चाहिये।

२—चाणक्य ने अर्थशास्त्र के सुराध्यक्ष प्रकरण में लिखा है कि 'द्राक्षा रसो मधु, तस्य स्वदेशो व्याख्यानं कापिशायनं हारहूरकम्' इति सो 'स्वदेशो व्याख्यानम्' इस वाक्य से कापिशायन और हारहूरक नाम का मद्य जिस देश में बनाया जाता है उस देश के नाम से अपने नाम को प्राप्त किया है यह निश्चित है। इसकी पुष्टि के लिये मैं भगवान पाणिनि के सूत्र को उद्धृत करता हूँ जो कि चाणक्य के साथ सर्वथा अनुकूल है। वह सूत्र यह है 'कापिश्याष्फक' [४।२।९९] 'कापिश्यां जातादि कापिशायनं मधु द्राक्षा' इति यह वाक्य सिद्धान्त कौमुदी का है, कापिशी देश में जो उत्पन्न हो वह कापिशायन कहा जाता है जैसे अंगूर और अंगूर का मद्य।

३—यदि यहाँ विचार करते हैं कि कापिशी देश कौन सा है तो कापिशायन शब्द से द्राक्षा का मद्य और द्राक्षा ली जाती है। द्राक्षा का अर्थ है 'अंगूर' यह फल अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसलिये कापिशी शब्द उस देश को ग्रहण कराता है जहाँ कि द्राक्षा [अंगूर] और द्राक्षा मद्य उत्पन्न होता है। अंगूर के लिये संस्कृत साहित्य में कपिला, कापिशायनी, और हारहूरा ये तीनि शब्द विशेष रूप से पाये जाते हैं। जैसे कि 'अन्या कपिलद्राक्षा, परिता च हारहूरा' इत्यादि राजनिघण्टु [वर्ग ११। श्लो० ७६। ७७ को] देखो।

४—जिस प्रकार से कापिशायन शब्द से देश ज्ञान होता है उसी प्रकार माग-धी से [मगध] द्राविड़ी-पूला से [द्रविड़देश] इत्यादि ज्ञान होता है इसलिये विचार करना है कि कापिशायन शब्द से कौन सा देश गृहीत होता है। तथा कपिला और हारहूरा से कौन सा। 'कपिश, कपिल ये दोनों शब्द पाटलवर्ण के वाचक हैं। संस्कृतज्ञ विद्वानों ने लक्षण वृत्ति का सहारा लेकर जैसे गन्धर्वदेश [अरब] के बसरा का नाम करण तथा काश्यपा [अफ्रिका] का सहारा डिज़र्ट का नाम करण किया है [इसका वर्णन अफ्रीका के लेख में होगा] पाटलवर्ण विशिष्ट-विशिष्ट पुरुष के लिये किया है। जैसे कि [योरोपियनों की 'गोरा' यह यह संज्ञा वर्ण प्रयुक्त होती है उसी प्रकार कपिश-कपिल शब्द भी पाटलवर्ण विशिष्ट पुरुषों के लिये प्रयुक्त हुआ। हारहूरा का वर्णन रूस देश के वर्णन के साथ होगा संस्कृत के शब्द अपभ्रंश रूप में देशान्तरों में पाये जाते हैं इसलिये इनका अपभ्रंश देखिये।

५—अपभ्रंश बनाने का प्रधान कोई नियम नहीं तथापि प्राकृत व्याकरण में बहुत से नियम हैं। 'व्यत्ययश्च' इस प्राकृत सूत्र से पदव्यत्यय वर्णव्यत्यय दोनों किया जाता है जैसे कि संस्कृत का 'कपाट' शब्द फाटक, फटका, केवाड़, केवाड़ी इत्यादि रूप धारण करता है उसी प्रकार 'कापिशी-पिशीका-पाशीका-पारशीका-पारशीया-परशिया' यह रूप धारण करता है। ऐसा अपभ्रंश करने में मुझे चाणक्य और पाणिनि के साथ साथ कैशपियन सी जो कापिशायन का अपभ्रंश प्रतीत होता है, सहायक होता है 'कैश-पियन सी' का अर्थ यही प्रतीत होता है कि 'कापिशी देश का समुद्र' यह शब्द भूगोल में प्रसिद्ध है चाणक्य की टिप्पणी करते हुये एक महाशय लिखते हैं कि:—
कापिशायन और हारहूरक ये विदेशी मद्य के नाम हैं जो कदाचित् पर्शिया और ग्रीस से आते हैं।

६—यहाँ पर्शिया का कहना ठीक है पर ग्रीस की जगह रूस होना चाहिये। 'पारसी कांस्ततो जेतुम, इस कालिदास के 'पारसीक' शब्द को अरबी का शब्द बतलाते हुये वाचस्पत्यकार ने अशुद्ध ठहराया है किन्तु 'कापिशीका' का अपभ्रंश पारसीका है यह शब्द शास्त्रों में जहाँ पाया जाता है प्राकृत का है।

७—'नन्दलाल डे' ने अपने कोश में लिखा है कि 'काबुल में कपिशा नदी के किनारे कपिशा नाम की नगरी है इसी को पाणिनि कापिशी कहते हैं सो कहना

अत्यन्त अशुद्ध है क्योंकि टाबन्त कापिशा यदि पाणिनी को स्वीकृत होता तो 'कपिशायाः ष्फक्' ऐसा सूत्र होता पर डीबन्त कापिशी शब्द से 'कापिश्याः ष्फक्' ऐसा सूत्र होने से काबुल की कपिशा दूसरी और बनायु की कापिशी दूसरी समझनी चाहिये इस प्रकार नन्दलाल डे के अनुयायी पाण्ड्यकवाट [ट्रावंकोर] के गणपति शास्त्री भी खण्डित हो जाते हैं ।

यद्यपि कापिशी-पर्शिया इस अर्थ में ईरिण वा इरण शब्द जिसका अर्थ लोग ईरान करते हैं संस्कृत साहित्य में देश विशेष के लिये नहीं पाया जाता तथापि 'न ह्यमूला प्रसिद्धिः' इस न्याय से पर्शिया के लिये ईरान का प्रयोग बहुत काल से हो रहा है सो अच्छा है, पर उससे भी अच्छा कापिशी का प्रयोग है जो शास्त्रों में उपलब्ध होता है ।

फारस और महायुद्ध १९१४-१६

कोई भी देश, संसार व्यापी महा समर से होने वाली हानि से नहीं बचा पर उससे आ पड़ने वाले भार उठाने में फारस बहुत हो कम तयार था। इसी से किसी देश ने अपनी सीमा तथा प्रजा की रक्षा करने में फारस की तरह असमर्थता नहीं दिखाई। साधारण दृष्टि से देखने वालों को तो यह एक सम्भव सी बात जान पड़ती थी कि फ़ारस जैसा दूर स्थित देश भी इस महान् युद्ध की चपेट में आ पड़ेगा। फ़ारस के कई सूबों पर हथियार बन्द आदमियों के धावे हुये। जिससे विशेष हानि हुई क्योंकि वहाँ की सरकार अपनी तटस्थता की घोषणा को क़ायम न रख सकी। उत्तरी-पश्चिमी फ़ारस के अज़रवैजान प्रान्त को ही लीजिये। यहाँ पर लड़ाई से पहले ही तुर्क और रूसी अपनी अपनी रक्षा के निमित्त फ़ारस के ही मत्थे अपनी माफ़िक़ जगहों में फौज रखते थे। जो फौज इस सूबे को पार करके धावा करती है वह सिर्फ़ उस पर्वत श्रेणी को पार करने से छुटकारा ही नहीं पाती बल्कि अपने दुश्मन की फ़ौज को घेर लेने में सफल होती है। इसीलिये लड़ाई छिड़ जाने पर जब रूसी सेना ने अज़रवैजान के उत्तरी भाग को पार करके तुर्कों को वान नदी के किनारे तक पीछे खदेड़ दिया तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। कुर्द लोग अपने मुसलमान भाइयों की तरफ़ मिल गये। लेकिन तब्रेज़ छीन लेने के बाद रूसी फ़ौज ने उनको हरा दिया।

जिस स्थान से रूसी सेना कार्स नगर की रक्षा कर रही थी उस पर तुर्कों ज़ोरों से धावा मारा। इस धावे के कारण दोनों पक्ष की सेनाओं को अज़रवैजान प्रान्त में घुसने के लिये विवश होना पड़ा। उरमियाँ नामी मुख्य नागर तथा उसके आस-पास की भूमि रूसियों के हाथ में आ गई और जब तक कि रूसियों का पैर पूरी तरह से १९१७ ई० में नहीं उखड़ा इन्हीं के हाथ में बराबर रही।

अब हम लोगों को फ़ारस के दक्खिणी-पश्चिमी भाग को ओर दृष्टि डालनी चाहिये। महा युद्ध के छिड़ते ही यह भाग रण-क्षेत्र बन गया। भारतीय सरकार ने पहले ही के रंग ढंग से यह भाँप लिया था कि समर छिड़ जाने की सम्भावना है।

इसलिये उसने एक छोटी सी फौज़ बहरिन टापू में पहले ही से भेज दी थी और एक अँग्रेज़ी जङ्गी जहाज़ शत्तले-अरब में गश्त लगाने लगा था। अँग्रेज़ों को अपने बहुमूल्य और आसानी से बर्बाद होने वाले [ऐङ्ग्लो पर्शियन आयल कम्पनी के] मट्टी के तेल के कारखाने और उसकी मशीन इत्यादि के विषय में विशेष चिन्ता थी। यह कम्पनी आबदान टापू पर थी। यह टापू मोहमरा स्थान से चन्द मील नीचे हैं। मोहमरा स्थान पर कारू नदी शत में गिरती है। अंग्रेज़ों की फुर्ती बाज़ी से बसरा पर उनका अधिकार हो गया। इसलिये आयल कम्पनी के कारखाने और उसकी मशीन इत्यादि की रक्षा की चिन्ता तो दूर हो गई। किन्तु बख्तियारी पहाड़ के नीचे स्थित मैदाने नुफ़तुम के मिट्टी के तेल के कुंओं और तेल की १५० मील लम्बी पाइप-लाइन की चिन्ता भी अंग्रेज़ों के सर पर सवार थी क्योंकि दुश्मन की आँख इन पर भी लगी थी। जर्मनों के बहकाने से वहाँ की हठ धर्म्मी जातियो ने पाइप-लाइन में दो तीन जगह छेद कर दिया था। तेल के कुंओं और पाइप-लाइन की रक्षा के लिये एक फ़ौज अहवाज़ में में भेज दी गई। इस फ़ौज़ ने एक भारी तुर्की फ़ौज का मुक़ाबिला किया इतने में बाहरवीं डिवीज़न ने इस तुर्की फ़ौज को एक दम फ़ारस से निकाल दिया अँग्रेज़ों ने अपनी स्थिति अहवाज़ में क़ायम रक्खी, पाइप लाइन की मरम्मत कर दी गई और बहुमूल्य मिट्टी का तेल पश्चिम में भूमध्य सागर के जङ्गी बेड़े के लिये भेजा गया।

पश्चिमोत्तर में रूसी और दक्षिण-पूर्व में अंग्रेज़ थे। इन दोनों के दर्मियान होकर फ़ारस देश में बग़दाद शहर से एक सदर रास्ता दो समानान्तर पहाड़ियों को तै करता हुआ पठार तक जाता है। इस रास्ते का उपयोग दुश्मन लोग पूर्ण स्वतन्त्रता से कर सकते थे। सन् १९१५ के अप्रैल में तुर्कों की एक छोटी फ़ौज अंग्रेज़ों और रूसी कान्सलों को पराजित करती हुई करमानशाह की तरफ़ आगे को बढ़ी। फ़ारस का भीतरी भाग जर्मनों और आस्ट्रियनों से पददलित हो गया। ये जर्मन और आस्ट्रियन लोग हथियारों से सुसज्जित थे और इन लोगों के पास सन् १८७२ के अंग्रेज़ी सावेरेन (मुहरें) भी थीं जिनको इन लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से प्रसिद्ध स्पेन्डो टावर से लिया था ये लोग रंगरूटों को भरती करते हुए दक्षिण और मध्य फ़ारस को तै करके अंग्रेज़ और रूसी वाशिन्दों को वहाँ से भगाते जाते थे। ख़ून करने में भी इन लोगों को ज़रा भी हिचकिचाहट न थी। एक पत्र में, एक जर्मन अफ़सर अपने एक आक्रमण के बारे में जो कि उसने इस्फहान में एक घायल अंग्रेज़ी कान्सल-जनरल

पर किया था बड़ी डींग मारी थी। इस कान्सल-जनरल से भी भाग्य हीन एक रूसी कान्सल था। वह जान से मार डाला गया। प्रचार का काम सर्वत्र ज़ोरों से शुरू हुआ और फ़ारस के भोले भाले आदमियों को विश्वास कराया गया कि सब जर्मन लोगों ने इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया और उनका बादशाह कैसर मक्के की यात्रा कर रहा है जो हाजी विलयम के नाम से पुकारा जाने लगा सबसे अधिक प्रसिद्ध कर्मचारी बसमस था। जर्मनों के नाम से उसने बूशायर बन्दर के पीछे के देश में एक बहुत मज़बूत पार्टी तैयार की जिसकी वजह से अंग्रेज़ लोग उस बन्दर पर अपनी फ़ौज़ बढ़ाने के लिये मजबूर हुये। उसने शीराज़ के अंग्रेज़ी बाशिन्दों को पकड़ लेने और उनको बूशायर के पास कैद रखने का भी प्रबन्ध किया शीराज़ का अंग्रेज़ी कान्सल जान से मार डाला गया। सन् १९१५ के आखिर तक कोई भी अंग्रेज़ी अफ़सर या सौदागर फ़ारस के मध्य और दक्षिण देश में न बच रहा। ये लोग केवल बन्दर गाहों पर ही जमे हुये थे।

उत्तर की हालत सन्तोप जनक थी। रूसी फ़ौज़ जाड़े के मौसिम में मध्य वर्ती प्रदेश की शक्तियों का मुक़ाबिल' करने की गरज़ से अनज़ेली बन्दर में उतरी। यह रूसी फ़ौज़ जब तेहरान शहर की तरफ़ बढ़ी तो दुश्मन के मंत्री लोग राजधानी को छोड़कर पीछे हट गये। ये लोग उम्मेद करते थे कि फ़ारस को भी तुर्की की तरह इस युद्ध में अपनी तरफ़ कर लेंगे। १५वीं नवम्बर को ज़ोर अज़माइश हुई। दुश्मन के मंत्रियों ने बादशाह से यह कहा कि रूसी फ़ौज तेहरान शहर को उड़ा देगी और आपको मारेगी नहीं, तो पकड़ अवश्य लेगी। इसलिये वे उन्हें एक गांव को जो ६ मील पर था भाग जाने की सलाह दी। वहीं पर ये लोग अपनी एक छोटी फ़ौज इकट्ठी किये थे। केबिनट या मन्त्री मंडल के खास सदस्य इनके अधीन थे इसलिये इनको उम्मेद थी कि बादशाह उन लोगों का कहना मान जायेंगे। लेकिन रूसी और अंग्रेज़ी मंत्री ने बादशाह को समझाया कि अगर आप निष्पक्षता छोड़ कर अपने को मध्य प्रदेशीय शक्तियों के क़ब्जे में देंगे तो गद्दी से हाथ धोने का ख़तरा है और यह विश्वास दिलाया की रूसी तेहरान पर धावा न करेंगे। आख़िर में बादशाह असली बात समझ गये और उन्होंने राजधानी में ही रहने का निश्चय किया। बाद को रूसी फ़ौज ने दुश्मनों की फ़ौज को जो इधर उधर धावा कर रही थी भगा दिया और साल के आख़िर तक कासक लोगों ने कशान को कब्ज़े में कर लिया। इस्फहान को भी जिससे

बहुत ख़तरा और जो नई बनी हुई जर्मन वख्तियारी कौम के कब्जे में था, कब्ज़ा कर लिया।

पश्चिमी फ़ारस के इस ऐतिहासिक रास्ते के ऊपर नीचे सन् १९१६ में छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। पहले तो तुर्कों की ही विजय हुई ये लोग टेसिफन की लड़ाई के बाद ही जब अंग्रेज़ कुतल अमारा को हट गये फ़ारस में हमदान के आस पास तक चले गये थे।

रूसी अर्ज़रूम की लड़ाई की सफलता के कारण उत्साहित होकर आगे बढ़े और दुश्मनों को पठार से पीछे हटा दिया। कूट की हार से युद्ध का पहलू ही बदल गया। करीब १८००० तुर्क ४५ मशीनगन सहित स्वतन्त्र हो गये जिससे फ़ारस पर धावा करने में उनको सहायता हो गई। उन लोगों ने एक छोटी सी रूसी फ़ौज़ को हरा कर करमानशाह को और फिर बाद हमदान को छीन लिया रूसी लोग उत्तर में दुश्मनों की उस फ़ौज के मुक़ाबिले में जो तेहरान पर धावा कर रही थी जमे हुए थे। यह हालत सितम्बर महीने की है और साल के आख़िर तक कोई खास बात नहीं हुई।

दक्षिण में अंग्रेज़ लोग पिछली साल की बिगड़ी हुई हालत सुधार रहे थे। सन् १९१६ ई० में मैं तीन अफ़सरों के साथ दक्षिण-फ़ारस-राइफिल नाम को एक फ़ौज तैयार करने के लिये बन्दर अब्बास भेजा गया। वहाँ पर अंग्रेज़ों की शाख़ बिगड़ चुकी थी और कूट शहर की हार की वजह से शाख और भी ख़राब हो गई थी लेकिन फिर हालत दिनों दिन सुधरती गई।

अंग्रेज़ी बस्ती की गिरफ़्तारी की हलचल के जमाने में कवामुल मुल्क जो शीराज़ शहर के खान्दानी मेयर थे और उस प्रान्त की अरबी जाति के मुखिया थे वहाँ से भगा दिये गये थे। कवामुल मुल्क से दुश्मनों ने जेन्डर मेरी की मदद से शीराज़ को अपने कब्ज़े में कर लिया। ये जेन्डर मेरी ने जो स्वीडेन देश के अफ़सर थे जर्मनों से मिलकर उनकी बड़ी मदद की। इसके बाद कवाम सर परसी साइक्स से मिले जो वहाँ के अंग्रेज़ी रेजिडेन्ट थे उन्होंने उनको कुछ तुर्की बन्दूक़ें दीं और मैंने भी उनकी बन्दूक़ और बारूद से मदद की। यह छोटी सी मदद अंग्रेज़ सिपाहियों सहित इतनी ताक़त वर साबित हुई की कवाम के दुश्मन काबू में आ गये। बदक़िस्मती से कवाम घोड़े से गिर कर मर गये लेकिन उनके लड़के ने

शीराज में फ़ारस सरकार का प्रभुत्व जमा लिया। दो महीने तक मैं बन्दर अब्बास में रहा इस अर्से में रंगरूटों की भरती से एक काफ़ी बड़ी फ़ौज़ की तैयारी हो गई। मैं ५०० बन्दूक़ और बलूचियों की एक पैदल टुकड़ी लेकर अन्दर करमान की तरफ़ जो १८० मील पर था वहाँ की हालत सुधारने के लिये पहुँचा।

दुश्मनों की मध्य प्रदेशीय शक्तियाँ जो करमान और बम में थी डर कर पीछे फार्स प्रान्त में हट गईं जहाँ कि कवाम ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। मेरी फौज करमान पहुँच गई वहाँ के सब लोग खुशी से मिले क्योंकि मैं यहीं बहुत दिनों तक कान्सल था। फौज पहुँचने पर तार और बंक विभाग के अफ़सरों ने अपना अपना काम शुरू कर दिया। दुश्मनों के भाग जाने से जिनकी वजह से जान और माल का खतरा था करमान में फिर से अमन कायम हो गया। दक्षिण-फारस राइफिल के लिये भरती जारी हो गई। वहाँ के जमींदारों की सराहनीय मदद से जो इस सुधार को काफी तौर से समझते थे धीरे धीरे करमान ब्रिगेड तैयार हो गई।

छः हफ़्ते ठहरने के बाद मेरी फौज अगस्त महीने में यज़द की तरफ़ बढ़ी यह शहर २२० मील दूर था पहिले सीधे शीराज को जाने का ख्याल था क्योंकि यही दक्षिण फारस में लड़ाई का केन्द्र था। किन्तु उधर तुर्क इस्फहान की तरफ़ आगे बढ़ रहे थे। तुर्कों की एक फौज मशीन गन के साथ इस्फहान की तरफ़ बढ़ो जहाँ सिफ ६०० रूसी कासक सिपाही थे। उनकी मदद करने के लिये मुझसे जोरों की अपील की गई और मुझे मदद करने का हुक्म मिला। मैंने जल्दी जल्दी १६० मील के रास्ते को तै किया क्योंकि रास्ते में मुझे खतरनाक खबरें मिलती रहीं। सचमुच में तुर्क लोग इस्फहान से ८० मील दूर एक गांव तक पहुँच चुके थे लेकिन वहाँ से आगे न बढ़ सके। उन्हें मेरी फौज की ताकत का अन्दाज़ न लगा वे समझे की मेरी फौज उनके लिये एक बहुत बड़ा खतरा साबित होगी। इस्फहान के लोग, अरमिनियन बाशिन्दों सहित हम लोगों से बहुत खुशी से मिले। क्योंकि तुर्कों का इस्फहान पर कब्ज़ा होने पर अरमिनियन आमेनियन वाशिंदे भाग जाते नहीं तो उनकी जान खतरे में पड़ती। अङ्गरेज़ी और रूसी बाशिन्दे भी जो हाल ही में लौटे थे एक बार फिर मारे मारे फिरते थे। इस्फहान में ठहरने के जमाने में ही वह तिजारती रास्ता जो वहाँ से अल्बुर्ज़ को जाता है और जिसे डाकुओं ने बन्द कर दिया था खुल गया। इन डाकुओं में से बहुत से मारे गये। मेरी फ़ौज के लिये नये कपड़े यहाँ बनवाये गये क्योंकि फौज के सब कपड़े चिथड़े हो गये

थे। उन दिनों कोई ज़रिया आमद दरफ़्त का हम लोगों के पास न था हर बात के लिये हम लोग उसी देश के मुहताज थे। उसी जाड़े के अक्टूबर महीने में हम लोग शीराज को जो ३२७ मील दूर था चल दिये। कारवानों का आना ।जाना इस रास्ते पर बन्द हो गया था जिससे इस पर के गांवों की तिजारत बिल्कुल बन्द थी। हम लोग हर जगह ख़ानाबदोशो के हमलों का हाल सुनते थे। ये ख़ानाबदोश बदइन्तिज़ामी का फायदा उठा कर खूब लूट मार करते थे। इन दिनों ये लोग इस ऊँचे ठंढे मुल्क को छोड़ कर नीचे के गरम मुल्कों को चले गये थे। इस वजह से कुछ दिनों के लिये ये हमले बन्द थे। हम लोगों की फौज नवम्बर महीने में फारस देश के अन्दर १,००० मील का फासला तै करके आखिरकार शीराज में पहुँची।

फार्स—प्रान्त में पहुँचने पर मैंने उन स्थानों का निरीक्षण किया जो स्वीडिश जेन्डरमेरी के क़ब्जे में थे। ये लोग भूखों मर रहे थे, महीनों की तनख्वाहें इन लोगों को नहीं मिली थी जिससे ये लोग बिल्कुल अशान्ति की हालत में। थे। इरानी अफसरों की हालत मुझे उतनी खराब नहीं मालूम होती थी लेकिन इस जेन्डर मेरी के जर्मनों की तरफ से काम करने की वजह से हालत मुश्किल थी।

फारस की सरकार की तरफ से मुझे इन ३००० आदमियों को अपने हाथ में ले लेने का कोई हुक्म न था तो भी मेरे ऐसा करने से उन्हें कोई उजर नथा क्योंकि फारस सरकार न तो इन्हें तनख्वाह दे सकती थी और न इन्हें शान्ति से रख ही सकतीथी, कब्जे में रखने के लिये काफी अफसर न थे लेकिन अगर इन्हें मैं अपने हाथ में न लेता तो ये तितर बितर होकर डाकुओं के साथ शामिल होकर शान्त प्रजा के ऊपर हमले करते। जाँच करने पर इस बात की काफी मिसालें मिलीं। फार्स प्रान्त में २० वर्ष के अन्दर ऊँटों और भेड़ों की तदाद चौथाई हो गई थी और आबादी भी करीब १५, या ०० फी सदी कम हो गई थी। कभी कभी सख्ती भी बुद्धिमानी साबित होती है। मैंने इरानी अफसरों को बुलाया और उन्हें समझाया कि मैं फारस की सरकार के लिये यह दक्षिण-फारस राइफिल नाम की फौज तैयार कर रहा हूँ। और जेन्डरमेरी को अपने हाथ में लेने का निश्चय कर रहा हूँ। बहुत से लोग मेरे इस इन्तिज़ाम से खुश तो जरूर थे क्योंकि वे समझते थे कि जेन्डरमोरी को राशन, कपड़ा देना और उनके साथ माफिक़ सलूक करना ही अच्छा है लेकिन थोड़े से लोग इसके बड़े खिलाफ थे। अभाग्य वश इन लोगों में बहुत से कारबारी अफसर भी थे। सन

१९१७ ई० के बसन्त ऋतु में मेरे पास बहुत से अफसर पहुँच गये। अङ्गरेज़ी अफसरों ने जिस तरीके के काम करना शुरू किया वह क़ाबिल तारीफ था। उनमें हर एक समझता था कि पूरी जिम्मेदारी, मेरी ही है।

हम लोगों के सामने बहुत से सवालों में एक सवाल शीराज में कैद हुये जर्मन और आस्ट्रियन अफसरों का आया। इन लोगों की इरानियों और हम लोगों के दुश्मनों से मिल जाने के उम्मेद थी। फारस के अफसर लोग भी इनसे घबड़ाते थे। आखिरकार कुछ सिपाहियों के साथ इन लोगों को इस्फहान में भेज दिया गया। ऐसा करने से मेरी छोटी सी फौज दो हिस्सों में बंट गई। रूसी लोगों ने इन जर्मन और आस्ट्रियन अफसरों को बाकू में भेज दिया। लोगों के पास जो कागज़ात बरामद हुये थे उनमें से एक खाकी था जिसमें फारस के लोग सुअर, लोमड़, खरहा और गिद्ध की औलाद बनाये गये थे। एक टूटे हुये अंडे के अन्दर एक फारसी की तस्वीर दिखाई गई थी।

सबसे बड़ा सवाल उस वक्त हम लोगों के सामने फार्स प्रान्त में काशगइज़, अरब और दूसरे खानाबदोश जातियों के सम्बन्ध में था। उन लोगों को तादाद और ताकत बहुत बड़ी थी काशगइज़ लोग करीब १३,०००० और अरब लोग ७०,००० थे। जब बसन्त ऋतु में ये लोग फारस की खाड़ी के पास के नीचे मैदानों से फार्स प्रान्त की ऊँची ज़मीन पर चढ़ते या जाड़े में वहाँ से फारस की खाड़ी के पास नीची ज़मीन को उतरते थे तो प्रान्त का कोई भी भाग इनसे नही छूटता था और कोई भी गाँव ऐसा न था जो इनके धावे से बच जाता था। ये जातियाँ हम लोगों की दुश्मन थीं क्योंकि ये लोग लूट मार को अपना जायज़ पेशा समझते थे और हम लोगों को इसमें एक रुकावट समझते थे। सौलतउद्दौला, काशगइज़ जाति का मुखिया शीराज का बिलाताज का बादशाह था। अगर कोई गवर्नर-जनरल उससे दुश्मनी करता था तो वह शीराज शहर में बाहर से माला आना बन्द कर देगा पर इस तरह वहाँ अकाल पड़ने के कारण झगड़े शुरू हो जाते थे। और वहाँ का गवर्नर-जनरल बदनाम हो कर निकाल दिया जाता था। सौलत अपनी जातिवालों से तमाम माल-गुज़ारी वसूल कर लेता था लेकिन एक पैसा भी उसके हाथ से खर्च न होता था। जिससे वह बहुत धनी हो गया। हम लोगों के भाग्य वश वह एक नीच तबीयत का आदमी था। कवाम, अरब जाति का मुखिया था। वह शीराज़ का एक पढ़ा लिखा

आदमी था और इस तरह की लूट मार को बन्द करना चाहता था। जो मजबूरन कुछ हद तक इसमें उसकी रज़ामन्दी जरूर रहती थी। इसके खिलाफ सौलत अपने ही जाति के साथ रहता था वह घमंडी, शकी और जल्द बदल जाने वाला आदमी था। कवाम के साथ हम लोगों का दोस्ताना बर्ताव था कई दिन उसके साथ हम लोग शिकार खेले। सौलत से सिर्फ एक रोज की मुलाक़ात थी वह जानता था कि एक न एक दिन हम लोगों से उसकी दुश्मनी हो जायगी। जो कुछ भी हो, सन् १९१७ ई० में जिस वक्त हम लोग बन्दर अब्बास से आमदरफ्त का रास्ता खोल रहे थे, दक्षिण फारस-राइफिल नामक फौज का सङ्गठन कर रहे थे और डाकुओं को दबा रहे थे उस वक्त सौलत कुछ न बोला। ऐसी माफिक़ हालत में हम लोगों ने लूट मार के अपराधियों को सज़ा दी और सन् १९१७ ई० के आखिर तक इस रास्ते पर डकैती को बन्द कर दीं। ईरानी ज़मींदार कहने लगे कि ऐसी शान्ति दस वर्ष के अन्दर कभी न थी।

दुर्भाग्य वश हम लोगों की कामयाबी सिर्फ थोड़े समय के लिये थी। क्योंकि सन् १९१८ की बसन्त ऋतु में जिस समय अंग्रेज़ और फ्रान्सीसी फ़ौजे हार कर पीछे लौट रही थी और ऐसा मालूम होने लगा था कि विजय जर्मनी को मिलने ही वाली है उसी समय काश गई सर्दार एक गोल बना कर उसका मुखिया बन गया। इस गोल का उद्देश्य ब्रिटिश शक्ति को उखाड़ देने का था। फ़ारस सरकार फ्रान्स की हालत सुनकर दुश्मनों की तरफ़ झुक गई और बख्तियारी क़ौम का मुखिया साफ़ तौर से सौलत को हिम्मत दिलाने लगा। सौलत को यह विश्वास था कि वह फ़ारस सरकार की रज़ामन्दी से वह काम कर रहा है जो एक समय में करीब करीब उसकी ही थी। भाग्य वश शीराज़ की अंग्रेज़ी फ़ौज़ को २,२०० आदमियों की मदद मिल गई लेकिन इन में से एक तिहाई रंगरूट थे। लूटी हुई बन्दूकें इसी समय बड़े मौक़े से मिल गईं जिनके इस्तेमाल से हालत सुधर गई। सौलत के पास ६,०००बहादुर सिपाही थे और पीछे से आदमियों की मदद मिल गई जिससे इस लड़ाई के तमाम ज़माने में उसके पास ८,००० सिपाही मौजूद थे। दक्षिणी फ़ारस राइफ़िल वास्तव में तदाद में शीराज़ की फ़ौज़ से कुछ ही ज़्यादा थी। चूँकि फ़ारस सरकार ने उस फ़ौज़ को फ़ारस की आज़ादी का ख़तरा घोषित कर दिया था इसका बिलकुल विश्वास जाता रहा और हम लोगों के लिये कुछ समय के लिये ख़तरा हो गया।

कवाम के पास शीराज के इर्द गिर्द करीब २,००० अरबी थे। वे लोग अगर लड़ाई का नतीजा मालूम होने के पहले न शामिल होते तो हारने वालों पर हमला करने के लिये तैयार थे। जो कुछ भी हो इन लोगों की वजह से हम लोगों की चिन्ता बढ़ गई और यह लोग हम लोगों का राशन धीरे धीरे ख़ाली कर रहे थे। शीराज़ी हम लोगो के दुश्मन थे। कभी कभी मुल्ला लोग जहाद करने की शिक्षा दे रहे थे। रात में हम लोगों को मारने के लिये बहुत साइन बोर्ड चिपकाये गये थे।

राशन का सवाल हम लोगों को बराबर परेशान करता था। फसल पक चुकी थी, कटी नहीं थी। चारे की बड़ी भारी दिक्क़त थी। हम लोग किसी तरह अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाने का बन्दोबस्त करते थे क्योंकि चारे का स्टाक हम लोगों के पास बहुत काम था।

हम लोग बहुत से बग़ीचों पर क़ब्ज़ा कर चुके थे जो कच्ची दीवारों से घिरा था और जिन पर गोलियों का असर नहीं हो सकता। कुंए वग़ैरह खोदकर, अन्दर आने जाने के रास्ते बना कर, और मीनारे तामीर करके हम लोगों ने इस छावनी को मज़बूत बना लिया थे।

मई के शुरू में ही दुश्मनी शुरू हुई। इस दुश्मनी की शुरुआत खनेह जिनियन से हुई जो शिराज़ से २६ मील पश्चिम है। जहाँ से लुटेरे लोग तार के कुछ सामान को लूट ले गये। लुटेरे पकड़े गये इस पर उनके कलन्दर [मुखिया] ने धमकी दी कि अगर लुटेरे छोड़े न जायँगे तो छावनी पर धावा बोल देंगे। और उसने ऐसा ही किया लेकिन शीराज़ से एक छोटी फ़ौज़ उस जगह भेजी गई जिसने थोड़ी सी मार काट के बाद उस छावनी के इर्द गिर्द से इन लोगों को हटा दिया। सौलत ने बड़ी गर्म लिखा पढ़ी के बाद यह कहकर कि फ़ारस सरकार की तरफ़ से फ़ार्स प्रान्त से अंग्रेज़ों के निकाल देने का मुझे हुकुम मिला है हम लोगों से लड़ाई छेड़ दी। हम लोगों की बहुत सी फ़ौज़ उन लुटेरों को सज़ा देने के लिये बाहर चली गई थी जो हमारे दुश्मन से मिल जाने के लिये राज़ी थे। लेकिन वहाँ से लौटने के बाद ही वे काशगई जाति पर चढ़ गये। वे लोग इनको डेहशाहख पर जो १६ मील शीराज़ से पश्चिम है लाये और लगातार १४ घंटे तक बहादुर हिन्दुस्तानी सिपाही कशगईयों को पीछे हटाते रहे। बीच बीच में उनके भयानक हमलों का लूई बन्दूक़ से मुक़ाबिला करते थे। शाम के करीब दुश्मन लोग जिनका

बहुत सा नुकसान हो चुका था लाचार हो गये और हिन्दुस्तानियों की थकी हुई फ़ौज़ ने सौलत के तम्बू पर जो कारा आग़ा नदी के किनारे था गोलाबारी करके कब्जा कर लिया लेकिन दुश्मन उस गर्द व ग़ुबार में गायब हो गया। काशगाईज़ कौम को हम लोगों की फ़ौज़ को पकड़ लेने का इतना विश्वास था कि उन्होंने पहले ही से मिलने वाले लूट के माल का हिस्सा लगा लिया था यहाँ तक कि बन्दूक़ लादने वाले ख़च्चर के बारे में आपस में झगड़ा भी कर चुके थे। वे लोग समझते थे कि अपने ही मैदान में वे लोग कभी भी नहीं हटाये जा सकते थे। उनमें से ७०० की मौत उनके लिये पहला सबक़ था। हम लोगों के अभाग्य वश इस क़ौम को एक बहुत बड़ी मदद मिल गई और थोड़ी ही देर बाद शीराज़ को आ घेरा और उसी वक़्त उनके कैजरून के मददगार बाग़ वाले क्वार्टर पर क़ब्जा कर लिया जो घाटी के ऊपर मीलों तक फैला हुआ है। दुश्मन लोग यह पक्का इरादा कर चुके थे कि इन लोगों से फ़ौज की गैर हाज़िरी में ही हम लोगों को छावनी पर हमला कर देंगे क्योंकि उन लोगों की समझ में हमारी फ़ौज को फिर से मौक़ा देना बेवक़ूफ़ी थी इसके सिवा हमारी फ़ौज कुछ मारकाट से और कुछ बीमारी से कम हो गई थी इसलिये हम लोगों दुश्मनों को शीराज़ के करीब आने दिया ताकि हम लोग उनसे घाटी की समथल ज़मीन पर मुक़ाबला कर सकें। जैसा कि ख़्याल किया जा सकता है हम लोगों को हर तरह की धोखेबाज़ी से बचना था। हम लोग सुन चुके थे कि १७ जून को हम लोगों पर मिल कर धावे होंगे क्योंकि शीराज़ी लोग यह वादा कर चुके थे कि जब हमारी फ़ौज छावनी के बाहर लड़ने के लिये जायगी तो ये लोग छावनी पर क़ब्जा करेंगे। इसलिये हमारी फ़ौज एक दिन पहले ही घाटी में उत्तर पड़ी और उसने कज़रूनियों को जो उनके सामने थे धीरे धीरे हटा दिया।। दो पहर को फौज अहमदा बाद नामी गाँव तक पहुँची जो छावनी से ४ मील के फ़ासले पर है वहाँ से वापस आई और जैसे कि उम्मीद की जाती थी काशगाईज़ लोगों ने इनके ऊपर धावा बोल दिया। लेकिन वे लोग बन्दूक़ों के शिकार हुये और हमारी फ़ौज इस दूसरी कामयाबी के बाद छावनी को लौट आई। दूसरे दिन शीराज़ में बग़ावत हुई। सौलत अपने आदमियों को इकट्ठा कर था और उन लोगों पर जो हम लोगों के दोस्त समझे जाते थे धावा कर रहा था। बाजार बन्द हो गया और सामान का अन्दर आना रुक गया। यह बात साफ़ ही थी कि मुसीबत आ गई। यह बिलकुल ग़ैरमुनासिब मालूम होता था कि हमारी छोटी सी फ़ौज इधर उधर बँट

जाय क्योंकि एक काफ़ी मज़बूत टुकड़ी दक्षिण-फ़ारस राइफ़िल्स की लाइन को रात के समय रक्षा के लिये चाहिये थी। इसके ख़िलाफ़ शीराज़ियों का यह विश्वास था कि शीराज़ की तीन सबसे ऊँची इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लेना ही शहर के जीत की निशानी है। इसीलिये २ बजे रात ही को इन इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। जिसका आशातीत फल हुआ। क्योंकि सबेरे जब शीराज़ियो ने देखा कि इन तीन इमारतों पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया तो वे समझे कि हम लोगों की जीत हो गई इसलिये उन्होंने अपनी अपनी दूकाने जल्दी से खोल दी और दुश्मन लोग छिप गये।

लड़ाई का पहलू बिलकुल बदल गया। अंग्रेज़ो ने इरानी गवर्नर जेनरल से सौलत की जगह पर उसके भाई के काशगई जाति का मुखिया बनवा कर अपनी सफलता को निश्चय कर लिया। कवाल भी अंग्रेज़ों का हो गया और बन्दिशें शुरू हुईं जिसका नतीजा यह हुआ कि काशगई क़ौम का एक हिस्सा सौलत से अलग हो गया। तब हमारी फ़ौज ने धावा बोल कर हमला किया। इस वक्त काशगई लोग बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन तदाद बहुत कम हो गई और वे थोड़ी ही देर में भाग निकले। काशगई जाति के नये मुखिया और क़बाम ने पीछा किया। सौलत फ़िरोज़ाबाद में जम गया लेकिन फिर भी हरा दिया गया और अपने कुछ सच्चे हिमायतियों के साथ भाग गया। तीन महीने के बाद उसने फिर एक फ़ौज तैयार की और नये मुखिया को घेर लिया लेकिन न अंग्रेज़ी फ़ौज उसके मदद के लिये पहुँची सौलत को इतनी बुरी तरह से हराया कि वह रोता हुआ भागा और तभो से उसका पता न चला। उसी रात दोनों तरफ़ की फ़ौज़े इन्लफ़ुयआ की बीमारी से जो कि उस वक्त फ़ार्स प्रान्त में बड़े ज़ोरों से फैली हुई थी—पीड़ित हुईं। कम से कम १८ फ़ी सदी हिन्दुस्तानी सिपाही थोड़े ही दिनों में मर गये और ईरानियों का नुक़सान इससे भी ज़्यादा हुआ। यह एक बहुत बड़ी घटना हुई जिसका हम लोगों को अनुभव हुआ। लेकिन ईश्वर की कृपा से बीमारी काशगई के हराने के पहले नहीं शुरू हुई।

गर्मा के मौसम में बूशायर के बन्दर पर मेजर जैनरल जे० ए० डगलस हो रहे हो। इसके बाद जाड़े के दिनों में वहाँ से शीराज़ को रास्ता खोलने का प्रबन्ध शुरू हुआ। १८० मील का फ़ासला था। लेकिन कोई भी तिजारती रास्ता इससे ज्यादा मुश्किल नहीं था क्योंकि गर्मी के मौसम में समुद्र के किनारे बड़ी भयानक गर्मी और जाड़े के मौसम में बहुत से पहाड़ी दर्रों में बड़ी भयानक सर्दी इस

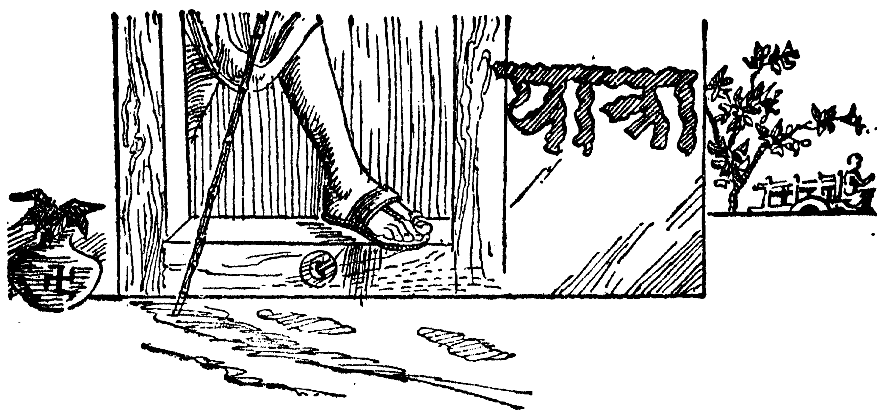
रास्ते पर पड़ती है। बूशायर की फौज पर इनफ़्लूयञा की बीमारी का बहुत कम असर हुआ लेकिन फिर भी काफी देर हुई। वह फौज जो इस काम में लगी हुई थी लड़ाकों। सहित करीब २०,०००. थी। इसकी खास दिक्कत राशन और आमद रफ़्त के ज़रिये का था। इनके रास्ते में कोई और रुकावट नहीं हुई। एक छोटी सी रेलवे लाइन २७ मील के मैदान को तै करती हुई बोरजुन तक बनाई गई जहाँ से कि दलीकी तक जो १२ मील की दूरी पर है बैल गाड़ियों की आमद रफ़्त है। इस गाँव से उस प्रान्त के एक बहुत कठिन हिस्से में घुसना पड़ा और एक बहुत अच्छा रास्ता ऊँटों के लिये बनाया गया। जनवरी में शीराज़ी फौज की मदद से केजरूँ पर कब्जा कर लिया गया। जसन् १९१९ ई० में बू शायरसे शीराज तक मोटर आने जाने का रास्ता हो गया था जो बहुत आसान नहीं था। इस काम की दिक्कत समझने के लिये इस देश की हालत जानना ज़रूरी है।

मेजर जेनरल एल० सी० डन्स्टर विली के पराक्रम की तरफ़ इशारा करने के सिवा और कुछ कहना नामुमकिन है। इस अफसर ने सन् १९१८ ई० में एक मिशन को ले कर दुश्मनों का आगा रोकने के लिये काकेशिया देश में चढ़ाई की जिससे जारिजिया तथा अरोमनिया देश के बाशिन्दे अपने अ५ने देश की रक्षा कर सके। सचमुच में यह मिशन तुर्कों के खिलाफ ६ हफ़्ते तक बाकू में अड़ा रहा और उसके बाद शहर के शहर खाली कर देने को मजबूर हुआ। अफ़सर को फ़ारस से मदद करने का ज़रिया बग़दाद शहर से कर्मानशाह, हमदान, कज़विन होते हुये एंज़ली बन्दर तक था। डन्स्टर विली साहब ने फ़ारस में एक बहुत बड़ा काम किया क्योंकि उन्हीं की वजह से कुचिकर ख़ाँ एक जङ्गली सर्दार जो जीलान में बहुत से आदमियों को इकट्ठा किये था तेहरान पर धावा करने से रोक दिया गया। वहाँ पहुँच कर शायद वह शाही खानदान को हटा कर फ़ारस देश को मध्य प्रदेशीय शक्तियों की तरफ़ से इस संसार व्यापी युद्ध में शामिल कर देता। अफ़सर ने अजरबैजान में तुर्कों के ऊपर भी निगाह रखी और कुछ दर्जे तक उन लोगों को दबाया जो इनके पास बहुत थोड़ी सी फौज थी।

लड़ाई के दिनों के फ़ारस के बारे में ऊपर दिये हुये बयान से साफ़ ज़ाहिर होता है कि फ़ारस देश अपनी सीमाओं की रक्षा करने में कितना असमर्थ था और उसकी इस असमर्थता की वजह से इङ्गलैण्ड और रूस के ऊपर कितना बड़ा भार था

जिसकी वजह से इन शक्तियों को अपनी अपनी फ़ौजें उस देश में भेजनी पड़ी नहीं तो दुश्मन लोग इसे जीत कर इसी रास्ते से अफ़गानिस्तान होते हुये हिन्दुस्तान पर धावा मारते। इसमें कोई शक नहीं कि फ़ारस देश के पश्चिमी और पश्चिमोत्तर प्रान्तों में इस लड़ाई के ज़माने में जान माल का बहुत नुकसान हुआ लेकिन इसके एवज़ में इन लड़ने वाली जातियों [इङ्गलैण्ड रूस, टर्की, जर्मनी वगैरह] का बहुत सा धन इस देश में सबके पास बँट गया। सोना जो लड़ाई के पहिले यहाँ बाजारों में बहुत ही कम दिखलाई पड़ता था इसके बाद बहुतायत से दिखाई देने लगा। इससे भी बड़ा फ़ायदा फ़ारस को आमद रफ़्त के रास्ते से हुआ जिनकी तरक्की इस लड़ाई के जमाने में बहुत हुई। करमान शाह हमदान नामी सड़क पक्की बन गई और अब इस पर ऐअ़ली बन्दर से बगदाद तक मोटर आती जाती है। दक्षिण में जैसा कि पहले कहा गया है बूशायर और शीराज़ के बीच में एक बहुत अच्छी सड़क बन गई और मैंने खुद एक सड़क बन्दर अब्बास से सैदाबाद, निरीज और सैदाबाद होते हुये इस्पहान तक बनवाई जिसमें सिर्फ़ एक ही जगह थोड़ी सी बाकी है। इस तरह दक्षिण फ़ारस के ऊँचो नीची जमीन में करीब एक हजार मील के ऊपर सड़क बन गईं जिन पर मोटरें दौड़ती हैं। अन्त में काशगई जाति की शक्ति नाश हो जाने की वजह से फ़ारस सर्कार की हुकूमत भली भाँति स्थापित हो गई और वहाँ के किसान इस उम्मेद से जो कुछ वे बोवेंगे उसे काट कर घर ले जा सकेंगे दिनों दिन अधिक काश्त करने के लिये उत्साहित हुये।





ईरान-यात्रा

ईरान को सबसे पहिली चीज़ जो किसी यात्री पर अपना प्रभाव डालती है वह स्त्री-पुरुष तथा छोटे बड़ों की सुन्दरता है। वहां के निवासी अधिकांश मुसलमान हैं। उत्तराधिकारी भी मुसलमान ही हैं तथापि वहां भारत के समान परदा नहीं है। अमीर गरीब सभों के यहां की युवा व वृद्ध स्त्रियों बाज़ारों में निकलती हैं। सायंकाल वायु सेवन के निमित्त वे छोटे उद्यानों में जाती हैं। इन कारणों से वहां की स्त्रियों के सौन्दर्य का प्रभाव प्रत्येक यात्री पर बड़ी सुगमता से पड़ जाता है।

स्त्रियां प्राय: काला वस्त्र धारण किया करती हैं ऐसी अवस्था में उनका सौन्दर्य अधिक बढ़-चढ़ जाता है, माना साने में सुगन्ध पैदा हो गई है। अब इसके बाद उनका मधुर-स्वर भी कुछ कम प्रशसंनीय नहीं है। फ़ारसी भाषा अपनी मधुरता के निमित्त जगत-विख्यात है। अत: स्त्रियों के मुख की फ़ारसी अद्भुत प्रभावशाली होती जिसका उल्लेख वस्तुतः शब्दों में हो ही नहीं सकता।

स्त्रियों के सिवा पुरुष भी कुछ कम सुन्दर नहीं होते। अमीर-ग़रीब सभों को समान अंश मिला है। यदि कुली को भी अच्छा वस्त्र धारण

करा दिया जाय तो वह अपने रूप-रंग के कारण एक अच्छा पढ़ालिखा भद्र पुरुष ही समझा जासकता है।

ईरान के मुसलमान अधिक संख्या में शिया हैं। वे लोग बड़ी धूम धाम के साथ मुहर्रम मनाते हैं। वे केवल साल में एक बार ही शोक प्रगट नहीं करते बल्कि प्रत्येक सप्ताह में थोड़ा बहुत शोक प्रगट करते रहते हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद इसी कारण ईरानी स्वतंत्र होते हुये भी संसार की जातियों की दौड़ में बहुत पीछे रहे क्योंकि नित्य-प्रति शोक मनाने से वे उत्साहहीन हो गये। पर अब सारे ईरान में एक नई हलचल प्रतीत होती है। आचार-विचार और भाषा वा भेष सभी में नवीनता की झलक प्रतीत होती है। लोगों में साहस और उन्नति का अंकुर है। मेरा अपना अनुमान है कि ईरान जिस ढंग से उन्नति कर रहा है, यदि उसी प्रकार से उन्नति करता गया तो बहुत जल्द उन्नति के शिखर पर पहुंच सकेगा।

प्रत्येक देश में प्राकृतिक दृश्य हैं जो अनेक स्वदेशियों और विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस दृष्टि से ईरान का दृश्य यदि किसी अन्य देश से बढ़-चढ़ कर नहीं हैं तो किसी से कम भी नहीं हैं। पर इस सम्बन्ध में जो बात मारके की है वह वहां के घरो की विशेषता है जिन में प्रकृति का एक अच्छा अंश रहता है। साधारणतय: शायद ही कोई घर ऐसा होगा जिस में एक छोटा सा उद्यान न हो और उस में पहाड़ी चश्मे की नहर न जारी हो। प्रयाग, लखनऊ अजमेर और नागपूर सरीखे स्थानों में जो बंगले लगभग १५०) मासिक किराये पर मिल सकते हैं उस श्रेणी के घर अथवा बंगले ईरान की राजधानी तेहरान को छोड़कर बाक़ी बड़े बड़े मशहद, किरमान शीराज़ व इसफ़हान आदि नगरों में ३०) मासिक में मिल सकते हैं। निदान १००) मासिक यदि कोई व्यय करे तो बड़े आनन्द के साथ रह सकता है।

मेरा तो विद्या और सहित्य प्रेम था जो मुझे ईरान ले गया। मैं कहता हूं कि जिन लोगों को फ़ारसी से प्रेम है उन को ईरान अवश्य चाहिये क्योंकि वहां मातृ-भाषा फ़ारसी है। मैं तो सन् १९२९ में गया था। हां

हर्ष का विषय है कि मेरे बाद कुछ विद्या तथा साहित्य प्रेमी लोग सन् १६३० ई० और सन् १६३१ ई० में भी गये। परन्तु मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि जो लोग गर्मी के दिनों में स्वास्थ अथवा दिल-बहलाव के विचार से पहाड़ों पर जाते हैं वे ईरान जावें। ईरान में अप्रल, मई, जून व जुलाई मास अच्छे होते हैं। नाम मात्र की गर्मी पड़ती है। वहां की जल-वायु अच्छी है। थोड़ा सा खर्च कुछ अधिक हो सकता है। पर यात्रा से जितना लाभ हो सकता है उस के मुक़ाबिले में थोड़ा सा अधिक व्यय बुरा नहीं ठहरेगा।

मैं मानता हूं कि मुझे बहुत कुछ सुगमता भाषा की थी। जो लोग फ़ारसी नहीं जानते उन्हें कठिनाई अवश्य होगी पर मैं कहूंगा कि अनेक। पश्चमी लोग जो फ़ारसी नहीं जानते और ईरान की यात्रा करते हैं तो कोई करण नहीं कि फ़ारसी न जानने वाला भारतीय वहां यात्रा न कर सके सच तो यह है कि साहस की आवश्यकता है। अब अन्त में यह भी बतला देना उचित समझता हूं कि जो लोग अपनी मोटर ले जाना चाहें और क्वेटा (बलोचिस्तान) के मार्ग से ईरान जावें तो वे बड़े आनन्द के साथ यात्रा कर सकते हैं। हां, जो लोग इस सम्बन्ध में कुछ और जानना चाहें वे मुझसे पूछ सकते हैं।

महेश प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल

हिन्दू यूनीवर्सिटी बनारस,

फ़ारस के साहित्य का संक्षिप्त वर्णन।

आर्य्य लोग जब दुनिया की छत से दुनिया को आबाद करने को उतरे तो उन्होंने भारतवर्ष में वेदों के मन्त्रों को जमा किया, ईरान में ज़िन्द या जिन्द लिख डाला। उन्होंने यूनान में हिकमत और रोम में क़ानून का उत्तम उदाहरण दिया। पुरानी फ़ारसी किताबों के देखने से पता चलता है कि ईरान में सात भाषायें बोली जाती थीं। (१) दरी, (२) पहलवी, (३) हरवी, (४) सग्ज़ी, (५) ज़ावज़ी, (६) सग़दी, और (७) फ़ारसी। दरी किसी समय में दरबार की भाषा थी। केकाऊस और कैखुसरू शायद यही भाषा बोलते थे। पहलवी को कहा गया है कि यह जरदश्त की ज़बान है और बोस्तां इसी ज़बान में लिखी गई है। कहा जाता है कि यदि हम पहलवी ज़बान से अन्य देशों के शब्द निकाल दें तो पुरानी फ़ारसी बन जाय। मगर बहुत जांच पड़ताल के पश्चात् यह मालूम हुआ है कि फ़ारसी वह भाषा है जो इस्लाम के ईरान में आने पर बनी। बाक़ी चार भाषायें हेरात, सीस्तान, जाबुल और समरक़न्द में पैदा हुई और वहीं मिट गईं। बहुत से फ़ारस के इतिहास लेखक कहते हैं कि पुरानी जातियां कविता करती थीं। और शायद पहला मिसरा बहराम चोबीं ने शेर मारने पर कहा था:—
"मनम्आँ बबर जयाँ मनद् आँ शेर प-इला"।

ज़ूक़ार और क़ादसिया की लड़ाई के बाद ईरान की भाषा पर अरबियत का रङ्ग खूब चढ़ा। इरानियों ने बहुत सी किताबें अरबी भाषा भी लिख डालीं। ईरानियों ने न सिर्फ़ जबान सीख ली बल्कि अरबी अक्षरों को इरानी अक्षरों की तरह लिखना शुरू किया सिर्फ़ यही नहीं बल्कि उनके क़िस्से कहानियां उनके शब्द और महावरों को, ग़रज़े की सब कुछ नक़ल कर लिया। क़ादसिया की लड़ाई से मामूरशीद के जमाने तक दो सौ वर्ष का जमाना होता है। फ़ारसी ज़बान में लिखने पढ़ने की शुरुआत मामूरशीद के जमाने में हुई। इस जमाने का सबसे पहला शायर मर्व का अबुल अब्बास है जिसने पहला शायर होने का दावा किया है। इसी ज़माने

में ताहरिया और सफ़ारिया परिवार की सरपरस्ती में बहुत से शायर हुये। सफ़ारिया ख़ान्दान के जमाने में रुबाई की बुनियाद पड़ी।

इतिहास के देखने से पता चलता है कि सफ़ारियों के बाद सामानी ताजोतख्त के मालिक हुये। उनके वक्त से दफ़्तर की काररवाई फ़ारसी में होने लगी। फारसी गद्य की पहली किताब तारीख तबरी का अरबी से तरजुमा हुआ। इस किताब के बारे में शमसुल-उलमा आजाद देहलवी लिखते हैं कि "तुमने पढ़े तोते और बोलती मैना को देखा होगा।" जब तक पिंजरे में होते हैं सीखी बोलियां बोलते हैं। जब पिंजरे से छुट जाते हैं तो दरख्तों पर जाकर अपनी जङ्गली बोली बोलने लगते हैं।" इसी तरह ईरानी फिर से अपनी भूली हुई जबान को बोलने लगे। इसी ज़माने में शायरी (कविता) भी खूब जोर शोर साथ होने लगी। रोदकी और दकीकी इसी जमाने के मशहूर शायर हैं। सब लोग रोदकी को पहला शायर बदलते हैं जिसने दीवान बनाया और बाक़ायदा शायरी शुरू की। वह बचपन से अन्धा था। वह अमीर नस्र सामानी के दर्बार का ख़ास शायर था। जिस वक्त अमीर बादों ग़ैस में ठहरा हुआ था। वहां के सुहावने दृश्य और जलवायु के कारण अपने देश जाना न चाहता था उस वक्त सब नौकर चाकर आजिज़ आ गये और उन्होंने चाहा कि वतन लौट चलें रोदकी को इस बात पर आमादा किया कि वह अमीर को यहां से ले चले तो ५०००) अशर्फ़ियां मिलेंगी। रोदकी ने यह बात मान ली और यह शेर अमीर के सामने गाया "बूये जूये मूलियां आयद हमी। याद यारे मेहरबां आयद हमी।" अमीर के नजरों में इन शेरों को सुनते ही अपने देश का नक़शा खिच गया और बगैर मोजे पहने घोड़े पर सवार हुआ और एक मंजिल में जा ठहरा। दकीकी नूह सामानी दर्बार का शायर था। उसने वह काम शुरू किया जिसको फ़िरदौसी ने पूरा किया। यही पहला शख्स है जिसने फ़ारसी को अरबी से पाक किया।

जो जबान सामानियों के जमाने में बोली और लिखी जाती थी उसकी तरक्की ग़जनी के सुलतानों के जमाने में हुई। सुलतान महमूद के दरबार का सबसे बड़ा शायर उन्सरी था। इस जमाने का सबसे मशहूर



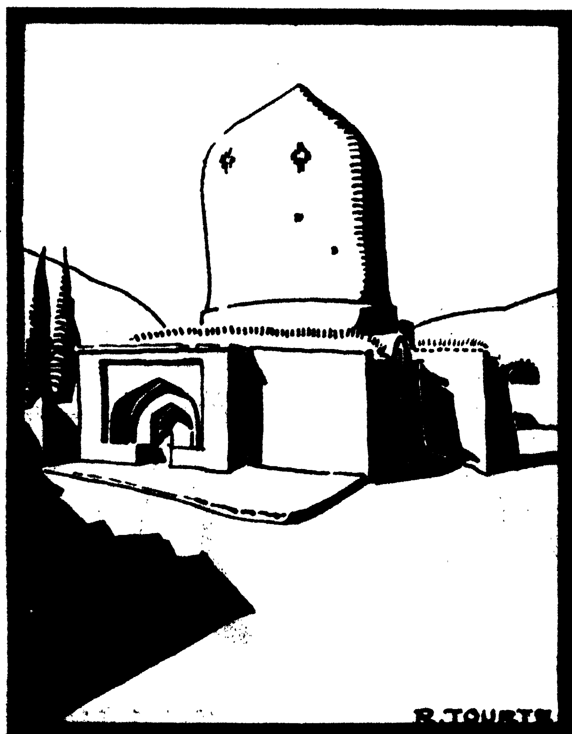
शीराज़में हाफ़िज़के मक़बरेके पास



बख्तियारान



इस्फहानके पास आतिश परिश्तोंका मन्दिर



हमादनमें [illegible] मकबरा

कवि फ़िरदौसी है। वह तूस का रहने वाला था। सुल्तान महमूद के कहने से उसने शाहनामा लिखना शुरू किया जिसके हर शेर के एवज़ एक दीनार देने को कहा गया था। मगर जब शाहनामा ख़तम हुआ तो बजाय सोने के सिक्कों के चाँदी के सिक्के दिये गये। जिस वक्त रु० पहुँचा फिरदौसी नहा रहा था। उसने उन रुपयों को देखते ही लुटा दिया और कहला भेजा कि "मैंने तह खून जिगर इन सफेद दानों के लिये नहीं बहाया था।" अल्लामा इब्न असीर शाहनामा को ईरान का कुरान बताते हैं यह ऐसी किताब है जिसमें ग़ज़ल को छोड़ कर हर तरह की शायरी का नमूना है। एक जगह पर क़त्ल ख़ून की तस्वीर बहुत खूब खींची है। "बरोनबुर्द आँ यले अर्ज-मन्द। बशमशीरों ख़ञ्जर बगुरजों कमन्द।" दरींदो बुर्रीदो शिकस्तों बबस्त। यलाँरा सरो सीनवो पाव दस्त। "उन्सरी, फरुखा मनोचहरी सुल्तान महमूद के दरबार के बहुत अच्छे क़सीदा कहने वाले हैं। इस जमाने में फारसी गद्य की कम तरक्की हुई।

इस खान्दान के बाद सलजूक़ियों का जमाना आया। इनके जमाने में हकीम सनाई और फरीदउद्दीन अत्तार ने सूफ़ियाना शायरी की बुनियाद डाली अमर ख़याम ने अपनी रुबाईयों में इपीक्यूरस की फ़िलासफी खूब दर्शाई है। इसकी रुबाईयों का तरजुमा योरप की हर जबान में हुआ। वह भविष्य जीवन का भरोसा न करके कहता है:—' मयेम् ख़रीदार मयकोलो नौ वाँ गाह फ़रोशिन्दये आलम बदो जौ।" "गुफ़्ती के यसज़ मर्ग कुजा रुवाही रफ़्त १ मये पेश मन् आरो हर कुजा रुवाही खो।" हकीम ख़ाकनिह, अनवरी, जहीर, फ़ारयाबी ने क़सीदों से दीवान भर दो है। निजामी इस जमाने का अन्तिम मशहूर शायर है। वह फारसी जबान का सुधारक कहा जाता है। नासिर खुसरू का सफ़रनामा और निज़ामी अरुजी समरकन्दी का चहार मकाला फारसी गद्य की सबसे अच्छी किताबें हैं।

इस जमाने के बाद चगेंज़ के हमले ने और तातारियों को लूट मार ने ईरान को बर्बाद कर दिया। तमाम मुल्क में सन्नाटा छा गया। ईंट बझ गईं। घर के घर बे चिराग़ हो गये। जब राजा ही न रहे तो उनके दरबार के शायर कहां रहते। मुसीबत का खुदा याद आ गया। भटैती यानी

क़सीदा गोई रुक गयी। मौलाना रूम और शेख़ सादी वग़ैरह बहुत ही ईश्वर भक्त शायर हुये। उन्होंने ग़ज़ल में सच्ची मुहब्बत व उल्फ़त को ख़ूब लिखा। शेख़ सादी हाफ़िज़ ने तो तसव्वुफ़ और इश्क़ से भरी हुई ग़ज़लों का एक बहुत बड़ा दीवान लिख मारा। शेख़ सादी के गुलिस्ताँ और बोस्ताँ फ़ारसी ज़बान के लिये बड़ी दौलत है। तुफ़ताज़ानी कहती हैं कि अगर शेख़ सादी हमारी लिखी हुई किताबों को ले ले और गुलिस्ताँ के इस एक फ़िक़रे। अज़ बिस्तरे नरमश वख़ाक अस्तरे गरशम निशानदन्द" को दे दें तो बहुत ख़ुश हूं। मुहक़्क़िक़ तूसी ने इसी ज़माने में मायरुल अशार (व्याकरण) और इख़लाक़ नासरी (फ़िलसफ़ा) लिखी।

आख़िरकार यह ज़माना भी बदला और ईरान में सफ़ीया और हिन्दुस्तान में तैमूरिया बादशाहों का बोल बाला हुआ। हिन्दुस्तान की ज़मीन और बादशाहों ने ऐसा लुभाया और ललचाया कि ईरान के बहुत से शायरों को मसलन् उरफ़ी नज़ीरी को अपनी तरफ़ खींच लिया। हिन्दुस्तान में अबुलफ़ज़्ल ने वह ख़त और फ़रमान फ़ारसी ज़बान में लिखे जिसका लोहा ईरान वाले भी मान गये। फ़ैज़ी के शायरी की ऐसी धूम मची कि ईरान के शायरों ने उसको बतौर उस्ताद याद किया। वहशी, मुल्ला मुहतशम काशी और सहाबी वग़ैरह ईरान के चुने हुये शायर हैं। यह ज़माना ग़ज़ल की तरक़्क़ी के लिये मशहूर है। वाक़्या बयान करने में वहशी का नाम लिया जाता है। उरफ़ी ने ऐसी आनबान के ग़ज़ल व क़सीदे लिखे और ऐसा फ़िलसफ़ा गाया कि फिर कोई न लिख सकता। नज़ीरी ने ग़ज़ल कहने में नाम कमाया, फ़ैज़ी ने संस्कृत के किताबों का तरजुमा फ़ारसी शायरी में किया और बेमिस्ल मसनवियाँ लिखी। सहाबी, इस्तराबादी रुबाइयों के लिये मशहूर है। क़सीदा कहने में तालिब आमली और सनाई का नाम लिया जाता है। कलीम, सायब और ग़नी वग़ैरह मिसालिया शायरी के जन्मदाता हैं। शाहजहाँ के ज़माने में जलाल असीर ने ऐसी नाज़ुक शायरी शुरू की जिसको नासिर अली और बेदिल ने बिलकुल उलझा डाला। औरङ्ग़ज़ेब के रुक्क़ात फ़ारसी मुहावरों से भरे पड़े हैं। औरङ्ग़ज़ेब के दरबार के पाले हुये नेमत ख़ान आली ने ज़हूरी की तरह फ़ारसी गद्य लिखने में नाम पैदा

किया। हज़ो ने अपने जीवन चरित्र और दीवानमें फ़ारसी ज़बान के कमाल को ख़ूब दिखलाया है। वर्तमान समय में हिन्दुस्तान के ग़ालिब और फ़ारस के काआनी याद रखने के लायक हैं। अव्वलन् ग़ालिब ने नासिर अली बेदिल का तरीक़ा अख़्तियार किया मगर बाद को लोगों के कहने पर उस्तादों का सा रङ्ग पकड़ा। काआनी की शायरी में हर ज़माने के अच्छे शायरों की ख़ूबियां पाई जाती हैं। उन्सरी की सलासत, फ़िरदौसी की फ़साहत, ख़ाक़ानी की दस्तकारी उरफ़ी की नज़ाकत और फ़िलसफ़ा हाफ़िज़ की मस्ती, सादी और हज़्री की ग़ज़ल गोई, अनवरी और ज़हीर की रवानी, सायबू के तमसीलात बहुत ख़ूबी से उसकी शायरी में पाये जाते हैं। नासिरुद्दीन शाह काचार और मसफुरुद्दीन शाह काचार ने योरुप के सफ़र किये और सफ़रनामे लिखे। सफरनामे की ज़बान बिलकुल नये तरीके की है उसमें अङ्गरेज़ी, फ्रांसीसी, और रूसी ज़बान पर योरुप का रङ्ग चढ़ रहा है। और यह कहना मुश्किल है कि किस तरफ़ ज़बान की तरक़्क़ी का दार मदार है। पर हरहालत में तबदीली हो रही है।

लेखक--भगवती प्रसाद सिनहा





फ़ारस के प्रोफेसर ई० जी० ब्राउन

(केम्ब्रिज में अरबी के प्रोफेसर)

लेखक—श्रीयुत सी० एफ० एण्डूज़ जी

अपनी यात्रा में ईश्वर के सब उपकारों में से मैं सबसे अधिक महत्व की बात इसको मानता हूं कि मेरी केम्ब्रिज के श्री एडवर्ड ग्रेनविल ब्राउन से मित्रता हो गई। वे बहुधा फारसी ब्राउन भी कहलाते हैं। क्योंकि उनको फारसी तथा अरबी भाषा का अटूट ज्ञान था और वे पूर्वी चीजों को हृदय से प्रेम करते थे।

उनमें विचित्र संजीवन तथा आकर्षण शक्ति थी और उनका भाषा० सम्बन्धी कामों तथा अध्ययन में मग्न रहना देखकर मनुष्य को चकित होना पड़ता था। मैंने उनको पेम्ब्रोक कालिज में हाई टेबल पर कई बार भाषण देते देखा। वहां गुरु और अध्यापक लोग बैठते थे। वे चार भिन्न भिन्न भाषाओं में और साथ ही साथ अङ्गरेज़ी में भी एक ही समय बात करते थे। वे अपने मिस्री मेहमान के साथ अरबी में, फ्रांसीसी मेहमान के साथ फ्रान्सीसी में, फ़ारसी मेहमान के साथ फारसी में तथा तुर्की के साथ तुर्की भाषाण में एक ही समय में बात करते रहते थे और बीच बीच में हमको अङ्गरेजी में उनकी मनोरंजक बातें भी सुनाते जाते थे।

वे मिस्र तथा तुर्की की सिगरेट पीते थे और कहवा तुर्किस्तान का। रात को खाना खाने के बाद कभी कभी उनकी बातें मुझे इतनी अच्छी

लगती थी कि मैं आधी रात बीतने पर भी उनके पास बैठा उनकी बातें सुना करता था। वे मुझे पूर्वीय देशों की बातें बताते थे। और हमें अत्यन्त दुख होता था जब हम विचार करते थे कि किस प्रकार पश्चिमी देशों की सस्ती चीजों ने पूर्वीय रहन सहन तथा खान पान बदल दिया है।

उन्हें फारस की अधिक चिन्ता थी और उन्होंने योरोपीय महायुद्ध समाप्त होने से पहले एंग्लो रशियन एग्रीमेन्ट अर्थात् रूसियों और अङ्गरेजों की सन्धि पर सर एडवर्ड ग्रे के हस्ताक्षर कराने में अपनी भरसक चेष्टा की थी। उनके पूर्वीय देशों के प्रेम का प्रभाव मेरे ऊपर इतना हुआ कि इङ्गलैण्ड से इन देशों में आने की मेरी इच्छा प्रबल हो उठी।

अन्त में मुझे अवसर मिला और मैं दिल्ली आया। दिल्ली से मेरा फारसी ब्राउन के साथ पत्र व्यवहार होता रहा। जब मैं १६०५ में इङ्गलैण्ड लौटा तो ब्राउन महोदय की केम्ब्रिज में काफी प्रसिद्धि थी। मैंने भारतवर्ष की जो जो बातें उन्हें बताईं उन्होंने बड़ी दिल चस्पी से सुनी। उन्होंने मुझे बताया कि वे उर्दू भी सीख चुके हैं यह सुन कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ।

उनकी मृत्यु से केम्ब्रिज के सब भारतीय विद्यार्थियों को खेद हुआ। भारत वर्ष में भी बहुतों से उनकी जान पहिचान रही होगी।

मेरी निजी मित्रता उनके जीवन पर्यन्त रही।



श्री रज़ाशाह

फ़ारस के भाग्यशाली पुरुष

लेखक—ए० जी० सी

कुछ समय हुआ एक युवक फटे कपड़े पहने तथा एक साधारण ऊन की टोपी, जैसी कि फ़ारस के जन साधारण पहनते हैं, लगाये और एक छोटी सी गठरी में कुछ सूखी रोटियाँ बाँधे हुये फारस की खाड़ी में मोहमरा नामक स्थान पर आया। वह तेहरान के भी आगे से आवदान तक काम करने के लिये पैदल ही आया था। आवादान में मिट्टी का तेल साफ किया जाता है यहाँ बहुत से मज़दूर काम करते हैं। भाग्यवश उसे काम मिल गया और वह बारह घंटे कठिन परिश्रम करके कुछ कमाने लगा जिससे उसे रूखी रोटी और कुछ खजूर पेट भरने को मिल जाते थे। परन्तु वह खुश था। उस समय वह अपने भावी जीवन की तैयारी कर रहा था। जा अनुभव ग़रीबी में प्राप्त होते हैं वे बहुत याद रहते हैं। ये कटु अनुभव गुलामी में फंसे हुए करोड़ों अभागे मनुष्यों के साथ सम्बन्ध जोड़ देते हैं।

कुछ समय पश्चात यही युवक बड़ा होकर उसी शक्तिशाली देश का राजा होकर आवदान में आया जहाँ खुसरो ने राज्य किया था इस समय उन्हें अपने देश की आन तथा स्वाभिमान का अधिक ध्यान था। आवदान और मोहमरा में उनके ठहरने योग्य जगह न थी फिर भी उन्होंने लार्ड इन्चकेप के व्यक्तिगत रूप से तार देने पर भी अंगरेज़ी नाव में एक रात भी ठहरना पसन्द न किया और साफ कह दिया कि "ऐसा करने के मानी यह होंगे कि मैंने बिना किसी सरकारी निमन्त्रण के विदेशी हद में पैर रखा" और कुछ ही समय बाद वह शहंशाह मामूली देहातियों के साथ मिलता जुलता देखा गया। शाम को फ़ारसी मज़दूरों की एक बृहत् सभा हुई जिसमें शाह का भाषण हुआ। उन्होंने बड़ी गम्भीरता एवं बालकों की नाईं भोली भाषा में भाषण दिया जिसका असर मज़दूरों के अन्तस्थल तक पहुँचा। उसके बाद

शाह ने एलान किया कि मैं अब भी वही मज़दूर हूँ और मुझे अभिमान है कि किसी समय मैं उन्हीं की तरह बोझा ढोता तथा खाता पीता था और इस अभिमान को खुशी में शाह ने एक दिन उसी प्रकार की सूखी रोटी तथा खजूर खाने का निश्चय किया। उन्होंने सभा के एक आदमी से वे चीज़ें मगाईं और अपने दूसरे दिन का भोजन लेकर बड़ी खुशी से उसे दाम दिया यह सग आँखों देखी है।

मज़दूर रेज़ा थोड़े ही समय में सिपाही हो गया। किस प्रकार रज़ा मामूली सिपाही से सिपहसालार बन गया यह तो इतिहासक कि अनोखी घटना है बीसवीं सदी के प्रारम्भ में रज़ाशाह वज़ीर जङ्ग थे और उन्होंने फ़ारस की सड़कों की रक्षा करने में बड़े बड़े आश्चर्य कर्म किये। यदि हम रज़ा शाह के सिपाहियों की तुलना पुराने समय के सिपाहियों से करें तो रज़ाशाह के इन नये आश्चर्य कर्मों का रहस्य कुछ समझ में आ सकता है। सब सिपाही फारस के ही करघों पर बनी एक सी वर्दी फ़ारसी पार्लियामेंट में एक कानून है जिससे कोई अफ-सर दफ़्तर तथा और काम (सरकारी) के समय विदेशी कपड़ा नहीं पहन सकता) तथा उठो हुई फ्रान्सीसी फौजी टोपी की तरह टोपी सिर पर लगाये—बाकायदे कवायद सीखे हुये और भरपूर तनख्वाह भी पाने वाले रेज़ाशाह के सिपाही अपने कमान्डर के ही समान मालूम होते हैं। इस प्रकार जब रज़ा-शाह ने पुनः अपनी फौज को संगठित कर लिया तब अपना काम शुरू किया।

एक बार कुछ खुर्द सरदार वजीर जङ्ग के घर के सामने टहलते देखे गये। ये लोग अपनी पुरानी चाल की जांघिया, एक चुस्त बन्डी और खुर्दी टोपी पहने थे। खनके चौड़े कमरबन्द में तुर्की तलवार खुसी थी। ये लोग वज़ीर जङ्ग के मेहमान थे। आवश्यकता होने पर वज़ीर जङ्ग स्वयं फ़ारस के दुर्गम से दुर्गम स्थानों में पहुँचते थे और साधारणतः वहां के सरदारों को नेवता देकर बुला लेते थे। वे उनसे बड़ी नम्रता से मिलते थे और तेहरान भर में उनकी इज्ज़त उसी प्रकार होती थी जैसी कि वजीर जङ्ग के मेहमान की होनी चाहिये। उनको तेहरान भर में किसी जगह घूमने

की स्वतंत्रता थी परन्तु वे बाहर कदापि नहीं जा सकते थे। यदि वे लोग ज़रा भी भाग निकलने की कोशिश करते अथवा उनके ज़िलों में कोई बगावत होती तो वहां का सरदार खुले आम कचहरी में लाया जाता और उसका मुकद्दमा होता था यदि वह अपराधी पाया जाता था तो गोली से मार दिया जाता था। बागियों को दबाने की यह एक नई विधि निकाली गई थी।

(वज़ीर जङ्ग) रज़ाशाह वज़ीर आज़म चुने गये। इसमें किसी ने उनका विरोध न किया। बाद में मजलिस अर्थात् फारस की पार्लियामेंट ने उनको सारे राज्य का डिक्टेटर एकाधपति नियुक्त किया। इस प्रकार इनके भाग्य का तीसरा सितारा चमका। ऐसा कहा जाता है कि जब मजलिस ने अपना आखिरी फैसला किया कि अहमद शाह तख्त से उतार दिया जाय (जो उस समय पेरिस में था) उस समय रज़ाशाह के हृदय में यह बात बिलकुल न थी कि वे ही शाह बनाये जांय। उनका हृदय सदा यही चाहता रहा कि वे फारस प्रजातंत्र की सेवा वजीर आज़म रह कर ही बल्कि वजीर जङ्ग ही रह कर करें।

अस्तु रज़ा शाह के लिये यह एक कठिन परीक्षा का समय था। और इस समय उन्होंने अपनी फौजी शक्ति से भी अधिक अपने सामाजिक तथा राजनीतिक ज्ञान का परिचय दिया। जन साधारण की विचार धारा तथा उनकी तरफ से अपने ऊपर के खतरे को भली भांति जानते हुये भी उन्होंने राजा का नहीं बल्कि काटों का ताज सिर्फ इसलिये पहिना कि वे फारस को पुनः गिरते हुये नहीं देखना चाहिते थे। इसलिये उन्होंने अहमद शाह के तख्त से उतारे जाने के बाद कई दिन लगातार विचार किया और अन्त में अपनी उदारता का परिचय दिया।

ईरान की पहली क्रान्ति

ईरान एशिया का प्राचीन इतिहास-प्रसिद्ध देश है। किसी समय यहां के शासकों का प्रभाव यूनान से लेकर पंजाब तक क़ायम हो गया था। परन्तु समय के फेर से एशिया के अन्य राज्यों की भांति उसका भी पराभव हुआ। इधर बीसवीं सदी के आरम्भ होने पर वहाँ भी नवयुग का प्रभाव पड़ना शुरू हुआ। फलतः इस समय यहाँ प्रतिनिधि-मूलक शासन-व्यवस्था क़ायम है और उसके वर्तमान शासक रज़ाशाह पहलवी उसको समुन्नत करने में विशेष यत्नवान् रहते हैं। परन्तु जिस पहली क्रान्ति की बदौलत आज ईरान उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के इतिहास में एक अनोखी घटना है। यहां हम उसी क्रान्ति का थोड़े में वर्णन करते हैं—

सन् १६०५ के अन्त में और सन् १६०६ के प्रारम्भ में तेहरान में शाह के कुशासन के विरुद्ध पहले पहले आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन का मुख्य कारण यह था कि तेहरान का मुल्ला-सम्प्रदाय वहां के प्रधान मन्त्री के विरुद्ध खड़ा होगया था। प्रधान मन्त्री ऐनुद्दौला ख़ुद बड़ा घूंसखोर था, अतएव उसके कारण मुल्लाओं के स्वार्थ में बाधा पहुँची। न्याय का मोहकमा मुल्लाओं के हाथ में रहने से वे अब तक इच्छानुसार घूंस लेते रहे थे। परन्तु जब प्रधान मन्त्री स्वयं घूंस लेने लगा तब मुल्लाओं के स्वार्थ में विघ्न हुआ और वे उससे रुष्ट हो गये। उन्होंने प्रधान मन्त्री के विरुद्ध लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। फलतः सन् १६०५ के अन्त में तेहरान में विकट राजनैतिक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

आन्दोलन के नेताओं ने सरकार से तीन मांगें की (१) प्रधान मन्त्री को निकाल देना, (२) सरकार से स्वाधीन अदालतों का सङ्गठन और मुल्लाओं के परम्परागत अधिकारों की सुरक्षा। आन्दोलन-कारियों की यही मांगें थीं। उन्होंने न तो प्रतिनिधि-मूलक शासन सुधारों की मांग की, न और ही कोई वैसे नागरिक अधिकारों का दावा किया। उनका आन्दोलन ईरानियों की स्वाधीन भावना पर आश्रित भी नहीं था। वे ऐसी किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये सशस्त्र विद्रोह करने की इच्छा नहीं रखते थे उनके आन्दोलन की कार्यवाही सीधे सादे प्रतिवाद तक ही सीमित थी।

शाह नासरुद्दीन को योरुप यात्रा का बड़ा शौक़ था। उनकी इन यात्राओं का ईरानियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। शाह की यात्राओं में जाने वाले ईरानियों में से अनेक ने विदेशों से तरह तरह की आवश्यक बातों का अनुभव प्राप्त किया। यही नहीं, योरूपीय ज्ञानविज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक युवक योरूपीय देशों को भेजे गये। परन्तु यह सुविधा केवल धनी मानी घराने के युवकों को ही प्राप्त हो सकी। अतएव ईरान में कुछ स्कूल और कालेज भी खोले गये जिनमें पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की गई। इन संस्थाओं से उन घरानों के युवकों ने लाभ उठाया जो धना भाव के कारण योरप की यात्रा नहीं करते थे। इस प्रकार बीसवीं सदी के आरम्भ होने के पहले ईरान के युवकों पर पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान का थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ चुका था। तथापि इनमें शिक्षित में भी शासन सुधार की मांग उपस्थित करने का भाव तब तक पैदा नहीं हुआ था।

परन्तु देश के दुर्भाग्य से या सौभाग्य से सन् १८९६ में नासरुद्दीन की मृत्यु हो गई और शाह मुज़फ्फ़रुद्दीन सिंहासन पर बैठे। नये शाह भी योरप यात्रा के प्रेमी थे। उन्होंने शीघ्र ही अपने बाप का सञ्चित धन कुछ ही समय के भीतर फूंक तापा और अपना बढ़ा हुआ ख़र्च चलाने के लिए उन्होंने पहले रूस से फिर ब्रिटेन से ऋण लिये और इस प्रकार ऋण लेकर उन्होंने यात्राओं का आनन्द दिल खोल कर भोगा। परन्तु इसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। राज्य की सारी चुंगी की आधी उक्त ऋण का सूद देने में चली जाने लगी। इधर राजकीय कोष शाह के अपव्यय से ख़ाली हो रहा था। यह सब होते हुए भी आन्दोलन कारियों ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। कहने का मतलब यह है कि उनकी मांग शासन सुधारों का मांग नहीं थी, तथापि उन्हें शासन-सुधार और वे भी बिना रक्तपात के ही प्राप्त हो गये। यही ईरान की इस क्रान्ति की सबसे अधिक विचित्र विशे-षता है। बात इस तरह हुई।

प्रारम्भ में मुल्लाओं ने सरकार के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उन्होंने मस्जिदों में व्याख्यान दे देकर जनता को उभाड़ा। फल यह हुआ कि तेहरान में हड़ताल हो गई और वहां के बाज़ार कुछ समय के लिए

बन्द हो गये जो बाद को प्रधान मन्त्री की आज्ञा से खोलने पड़े। इसके बाद मुल्लाओं की शिकायतें दूर करने के लिए सभायें शुरू की गईं। ऐसी एक सभा में एक सैयद् भी सैनिकों के गोली चलाने से अन्य आदमियों के साथ मारा गया तथा अन्य लोग घायल हुए। सरकार के उग्र रूप धारण करने पर आन्दोलन दब तो गया परन्तु मुल्लाओं ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया। उन्होंने विदेशी राजदूतावासों में आश्रय लेने का निश्चय किया और ६ जुलाई सन् १९०५ को कोई ५० मुल्ला और व्यापारी अंगरेज़ी दूतावास में जा घुसे। फिर क्या था ? धीरे धीरे ऐसे आश्रय ग्रहण करने वालों की संख्या बढ़ती गई। यहां तक कि २ सितम्बर तक वह चौदह हज़ार तक पहुँच गई।

परन्तु सबसे अधिक मज़े की बात यह है कि उपर्युक्त असन्तुष्टों में से एक भी ऐसा आदमी नहीं था जो शासन विधान शब्द का अर्थ जानता रहा हो। हां, दूतावास में आने पर पहले पहल ईरानियों के काम में 'शासन-विधान' शब्द काम में पड़ा। फिर क्या था। 'शासन विधान' की मांग की धूम मच गई। सभी लोग उस विषय की चर्चा करने लगे। यही समझा गया कि इस व्यवस्था के हो जाने से उनके सारे कष्ट दूर हो जायँगे।

अंगरेज़ी दूतावास के प्रधान मिस्टर ग्रांटडफ़ ने मध्यस्थता की। उनके काम में किसी तरह की कठिनाई नहीं हुई। उस समय शाह पक्षाघात रोग से पीड़ित थे। एक प्रकार से मृत्यु शैया में पड़े हुए थे। वे उस समय शान्ति ही चाहते थे, अतएव उन्होंने जनता की मांग स्वीकार करली सम्भवतः उन्होंने विधान सम्बन्धी जनता की मांग का वास्तविक रूप नहीं समझा था। उन्होंने शायद यही समझा था कि समय समय पर परामर्श करके लिए सरकार केन्द्रीय तथा प्रान्तिक मजलिसें करती रही है वही जनता की मांग है। इसी भ्रम से शाह ने उक्त मांग को स्वीकार करके अपने असन्तुष्ट प्रजा जनों को सन्तुष्ट करना चाहा था। इस पर उन्होंने शाह के अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के सम्बन्ध में अंगरेज़ों से वचन लेना चाहा। परन्तु अंगरेज़ ऐसा करने को नहीं तैयार हुए। फलतः समझौते की बातचीत बन्द हो गई। तब शाह की सरकार ने समझौता करा देने के

लिए मिस्टर ग्रांटडफ़ से प्रार्थना की। अन्त में शाह के कर्मचारियों और आन्दोलनकारी नेताओं की एक सभा हुई। इस सभा में अंगरेज़ प्रतिनिधि भी मौजूद था। इसी सभा में राष्ट्रीय मजलिस और न्याय की अदालतें क़ायम करने का एक ख़रीता लिखा गया जिसकी शाह के नाम पर घोषणा की गई। आन्दोलनकारी सन्तुष्ट होकर दूतावास से निकले और अपने अपने घर चले गये। इस प्रकार उन्होंने प्रतिनिधि मूलक शासन व्यवस्था अपने शाह से प्राप्त करली। ईरान की यह पहली क्रान्ति ऐसी ही थी।

देवीदत्त शुक्ल सरस्वती—सम्पादक

सम्पादकीय

ईश्वर की कृपा से इस अंक के साथ "भूगोल" का आठवां वर्ष आरम्भ हो रहा है। पिछली त्रुटियों के लिये क्षमा मांगते हुए हम पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि वे "भूगोल" को अपनाने में अपनी उदारता का पूरा परिचय दें। यदि इस वर्ष प्रत्येक पाठक "भूगोल" का केवल एक नया ग्राहक बनाने की कृपा करदे तो हमारी आर्थिक कठिनाइयां दूर हो जावें। जो शक्ति आर्थिक चिन्ताओं में नष्ट होती है वह उपयोगी साहित्य के निर्माण में लगने लगे। हम नई नई यात्राओं की योजनाकर सकें। जिससे न केवल साहित्य वरन साहस की एक नई लहर देश में फैल जावे। हमें आशा है कि प्रेमी पाठक गण एक एक नया ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करेंगे।

देरी का मुझे अत्यन्त खेद है। इस बार प्रेस से हमें अचानक धोखा हुआ। पर हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि भविष्य में ऐसी देरी यथा सम्भव न होने पावेगी।

अन्त में हम अपने सहायकों और पाठकों को उनकी सहायता और कृपा के लिये धन्यवाद देते है और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि यह नूतनवर्ष हम सबको मंगलदायी हो।

सम्पादक

मुद्रक—बाँकेलाल शर्म्मा इलाहाबाद प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

खुर्दिस्तान का भूदृश्य

मशद की पुरानी दीवारें

ईरान का प्राचीन विस्तार

प्राचीन साम्राज्य आड़ी रेखा से दिखलाया गया है

फ़ारस जन-संख्या की सघनता

तहरान—फ़ारस के शाही बैंक का बाहरी दृश्य



फारस

लेखक—श्रीमान परशियन कांसुल, बम्बाई
(Consulat De Perse)

फारस देश फ्रांस से लगभग तिगुना है और इसकी जनसंख्या एक करोड़ से कुछ अधिक है। समस्त आबादी के ३/४ लाग उस रेखा के उत्तर में बसे हैं जो करमानशाह के ठीक दक्षिण में इस्फहान और बिरजन्द (अफ़गानी सीमा के समीप) को मिलाने से बनती है। देश के इस भाग की भौगोलिक-स्थिति यहां के निवासियों को रूस के साथ व्यापार करने को अचूक अवसर देती है। देश के अन्य शेषभाग फारस की खाड़ी द्वारा योरूप और संयुक्त राज्य अमरीका से सामुद्रिक-व्यापार सुगमता के साथ करते हैं।

चाय और चीनी के अतिरिक्त लगभग समस्त खाद्य-वस्तुयें फारस देश में होती हैं। दाख़, बादाम और छोहारा तथा नाना भांति के और दूसरे सुखाये हुये फल भी बहुतायत के साथ बाहर भेजे जाते हैं। देश में ऊनी और सूती कपड़ों के अलावा जूते भी बनाये जाते हैं। हाथ से कालीन बनाने का काम इतना प्राचीन है कि इसकी उत्पत्ति का पता लगाना असम्भव सा है। फारसी कालीनों की सर्वत्र संसार में इतनी अधिक प्रसिद्धि हो गई है कि इसकी मांग को पूरा करने के लिये एक ख़ास कारबार की स्थापना हुई है। संसार के विभिन्न प्रकार के कालीनों की ९/१० मांग को फारस ही पूरा करता है।

इस देश को भौगोलिक और प्राकृतिक अवस्था ने इसे कृषि और पशु सम्बन्धी उपज के लिये स्वावलम्बी बना दिया है। अन्य देशों की अपेक्षा फारस का संसार से अधिक विच्छेद होने के कारण तथा पर्वत मालाओं

और मरुभूमि की शुष्कता को अधिकता से देश के उन्नति पथ में कंटक अवश्य पड़ते हैं फिर भी ज़मीन और जलवायु की विभिन्नता से यहां संसार भर की प्रधान फसलें उगा ली जाती हैं। देशसे देसावर भेजने योग्य कृषि और पशु सम्बन्धी पदार्थ निम्न हैं:—गेहूं, जौ, चावल, फल, रुई, अफीम, तम्बाकू, रेशम, किसमिस, भेड़ की अँतड़िया और मोम।

साथ ही साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि ग्रामीण फारस देश का थोड़ा ही भाग कृषि-कार्य्य में उपयोगी है। यहां पर लाखों एकड़ भूमि चरागाह के काम में लाई जाती है। पानी की कमी के कारण से भूमि उपजाऊ नहीं है। ऐसा विचारा गया है कि यह देश अपने इने गिने खेतों से जो इस समय कृषि कार्य्य में लाये जाते हैं अधिक उपयोगी और उन्नतशील यंत्रों द्वारा जोते बोये जाने पर अपनी वर्तमान आबादी से दुगने या तिगुने आदमियों का भरण पोषण कर सकता है। इस देश के फलों की अधिकता और विभिन्नता का पूर्ण विवरण कर सकना नितांत असम्भव है। कारण यह है कि यह निबन्ध संकुचित सीमा के भीतर ही है। फलों में से बादाम, अखरोट, नाशपाती, शफतालू, अनार, अंजीर, नारंगी, अंगूर और तरबूज़ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कुछ प्रान्तों पिश्ता आड़ू और स्टावरी भी पाई जाती है। छोहारा और उसके विशाल-वृक्ष का (जो पूर्वीयता का एक चिन्ह है) तो कहना ही क्या है।

पेट्रोलियम के सिवाय फारस देश के अन्य खनिज-पदार्थ अचानक ही नाम मात्र के प्राप्त हुये हैं। कहा जाता है कि निशापुर और मशद नगरों के बीच के पहाड़ों में चट्टानों वाला और मिट्टी वाला सोना पाया जाता है जो कि पूर्वकाल में उपयोग में लाया गया और जिससे अच्छी खासी क़ीमत भी मिली। करमान, यज़द और कशान पर्वतों के मध्य अल्बुर्ज़ और फारस के उत्तर-पूर्व के कोने में बहुत सी जगहों पर कच्चा सीसा पाया जाता है। इसमें तो कभी कभी काफ़ी मात्रा में रजत मिला रहता है और बहुधा जस्ता और तांबा भी सम्मिलित पाये गये हैं। तांबा भी अधिकता से प्राप्त होता है। कई स्थानों में तो तांबे के ढेर के ढेर पाये जाते हैं जिससे ज्ञात होता है कि गत समय में यहां पर धातु निकालने और साफ करने का कार्य्य अच्छी तरह

होता था। लेकिन यही कहा जाता है कि केवल ऊपरी खनिज-पदार्थ निकाल लिया गया और भीतरी तो छुआ तक नहीं गया। करमान प्रदेश में तबरेज़ की उत्तर-पश्चिम दिशा में तांबा देने वाली विस्तृत शिलाएं ग्रेनाइट पत्थर के सङ्ग में पाई जाती हैं। करमान के दक्षिण-पूर्व का प्रदेश भी ताम्र-धातु से सम्पन्न है। यहां पर थोड़े में अधिक खुदाई हुई है। कशान, यज़द और करमान के मध्य के प्रदेश में भी जहां कि कच्चा सीसा पाया जाया है वहां तांबा भी अधिकता से प्राप्त होता है। तबरेज़ के दक्षिण-पूर्व में लगभग नब्बे मील की दूरी पर ज़रा-शूरान ग्राम की समीपवर्ती उपजाऊ मिट्टी से देशी पारा, कुछ सोना और सिनेबार (एक प्रकार का पारा) के सहित निकलता है। इसी प्रदेश में आरमीमेन्ट नामक एक प्रकार का खनिज-पदार्थ भी पाया जाता है जिसकी मांग आस-पास के स्थानों में अधिक होती है। स्थानाभाव से यह कहां तक सम्भव है कि खनिज-पदार्थों का पूर्ण परिचय प्राप्त कर दिया जाय। यहां इतना विवरण ही पर्याप्त होगा।

अमूल्य-मणियों में लाल और नीलम प्राप्त होते हैं। पुखराज तो निशापुर की उत्तर-पश्चिम की दिशा में कई सदियों तक निकाला जा चुका है। मदन नामी ग्राम में (जहां कि इसका व्यापार किया जाता है) य काट-छांट करके बेचा जाता है।

फ़ारसी राज्य-नियम और न्याय-विधान हाल ही में नवीन सभ्यता के रंग में रंग दिये गये हैं। नवीन-न्यायालय जिसकी स्थापना छब्बीस अप्रल सन् १९२७ में हुई थी तीन भागों में बांट दिया गया है। वे निम्न हैं:—प्राइमरी कोर्ट्‌स, अपील कोर्ट्‌स और स्पेशल-कोर्ट्‌स। अन्य और भी हैं जैसे तिजारती कचहरी।

इन्हीं दिनों फ़ारस में जो सबसे रहस्यमयी घटना हुई वह यह है कि यहां के यात्रा-साधन नई सभ्यता में परिवर्तित हो गये। आज-कल फ़ारस-देश में छः हज़ार मील से अधिक मोटर की सड़कें हैं। पिछले पांच वर्षों में मोटर की मांग में वृद्धि हुई है। शान्ति और आन्तरिक रक्षा की वृद्धि के कारण केन्द्रीय-सरकार ने अपना ध्यान इस ओर विशेष आकर्षित किया है और फलत: प्रजा-कार्य्य का प्रोग्राम भी निकला है जिसमें रेल

की सड़कें भी निकलने का विचार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि फ़ारस-देश शीघ्रता से उन्नतशाली हो रहा है। फ़ारस देश का लीग आफ़ नेशन्स की कौन्सिल में वर्तमान चुनाव का होना ही यह स्पष्ट करता है कि यह देश विकास-विप्लव की ओर द्रुतिगति से अग्रसर हो रहा है। फ़ारस देश के वर्तमान शाह बड़े ही देश भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ है। ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि वह ऐसे सद्भावुक शाह को चिरंजीव रक्खे जिससे फ़ारस देश दिन दूना रात चौगुनां फल-फूल सके। ज़िन्दा-बाद-फ़ारस ! चिरंजीवी ईरान।

अनुवादक केदारनाथ अग्रवाल

विषय-सूची